

Hans-Jörg Ronsdorf

शुभ समाचार क्या है
और हमारे लिए उसका क्या अर्थ है

सरल।
स्पष्ट।



परमेश्वर का
शुभ
सुसमाचार

परमेश्वर का शुभ सुसमाचार

शुभ समाचार क्या है और हमारे लिए उसका क्या अर्थ है

Hans-Jörg Ronsdorf

प्रकाशन विवरण

परमेश्वर का शुभ सुसमाचार (Gottes gutes Evangelium)। शुभ समाचार क्या है और हमारे लिए उसका क्या अर्थ है

संशोधित नया संस्करण 2026। निःशुल्क डाउनलोड: www.hans-joerg-ronsdorf.de

छपा हुआ 5वाँ संस्करण (नवंबर 2021) ISBN 978-3-9820715-0-3 के अंतर्गत प्रकाशित हुआ।

© Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित। जब तक पाठ अपरिवर्तित रहे, इसे आगे बाँटना स्पष्ट रूप से वांछित है।

Hans-Jörg Ronsdorf, Albis 6 1/2, 87477 Sulzberg

ई-मेल: hj-ronsdorf@t-online.de

वेबसाइट: www.hans-joerg-ronsdorf.de

विषय-सूची

तीन शब्द और एक कहानी	7
सुसमाचार	7
परमेश्वर का सुसमाचार	9
सुसमाचार की ज़रूरत किसे है?	10
पाप?	11
स्वतंत्रता – कोई ज़बरदस्ती नहीं	13
बात यहाँ तक कैसे पहुँची	14
जैसा है, वैसा नहीं रहेगा	16
राज्य का सुसमाचार	16
यह संदेश हम तक कैसे पहुँचा?	17
परमेश्वर का राजशासन क्या है?	18
परमेश्वर का शासन – सबके लिए सबसे उत्तम	19
परमेश्वर के पुत्र का सुसमाचार	20
राजा और क्रूस	22
राजा की हत्या	22
अपेक्षा से भिन्न	24
परमेश्वर की दृष्टि से क्रूस	25
हमारे लिए बलिदान हुआ	26
क्या परमेश्वर को बलिदान की ज़रूरत है?	28
बुराई पर भलाई से जय	30
परमेश्वर का असीम ज्ञान और सामर्थ्य	31
क्रूस हमें क्या देता है	32
क्रूस – एक मूर्खता	33
घर वापसी	34
परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार	35
आरंभ से अंत तक अनुग्रह	37
परमेश्वर प्रेम है	39
अदृश्य संसार – अंधकार की शक्तियाँ	42
शक्तियाँ और मनुष्य	43
सुसमाचार और शक्तियाँ	43

शक्तियाँ और परमेश्वर की उद्धार-योजना	44
क्रूस की विजय	45
स्वतंत्रता संभव है	46
शान्ति का सुसमाचार	47
सुसमाचार – पूरी हुई प्रतिज्ञा	48
सुसमाचार की आशा	49
परमेश्वर के नए संसार का सपना	51
सुसमाचार – उद्धार के लिए सामर्थ्य	53
सुसमाचार की आज्ञा मानना	54
यीशु का चेला बनना	55
चेलेपन की शुरुआत	55
यीशु के पीछे चलना कैसा दिखता है?	56
सुसमाचार की उपेक्षा करना	59
सब कुछ प्रकाश में आएगा	59
परमेश्वर का क्रोध	61
अनन्त जीवन और नरक	62
दूसरा सुसमाचार	64
सुसमाचार क्या नहीं है	65
अंत में	66
आगे क्या?	66

हार्दिक बधाई! यह पुस्तक आपका ध्यान खींचने में सफल हो गई है। इसे अपने पास रखिए। इसे पढ़िए। बहुत संभव है कि परमेश्वर आपसे मिलना चाहता है। चाहे आप सुसमाचार को पहले से जानते हों – या सोचते हों कि जानते हैं। परमेश्वर आपके पढ़ने के समय को आशीष दे। यह सार्थक है।

इसे एक बार पूरा पढ़ लीजिए। दूसरी बार आप फुटनोट में दिए गए बाइबल के पदों को बाइबल खोलकर पढ़ सकते हैं।

केवल बाइबल ही दिखाती है कि सुसमाचार क्या है। इसे मैंने यथासंभव अच्छी तरह और संक्षेप में स्पष्ट किया है।

तीन शब्द और एक कहानी

सुसमाचार एक कहानी है। हमारी नहीं। नासरत के यीशु की। जो बैतलहम में शुरू होती है और यरूशलेम में समाप्त होती है। एक कहानी, जो अविश्वसनीय है। और फिर भी बहुत लोग उस पर विश्वास करते हैं। क्योंकि इस पुरानी कहानी ने अनगिनत नई कहानियाँ लिखी हैं। बहुत लोग गवाही देते हैं कि यीशु की इस कहानी ने उनके साथ क्या किया। वे नए मनुष्य बन गए हैं, आशा और भविष्य के साथ।

सुसमाचार सचमुच यीशु की कहानी है। तीन शब्दों में सारांश करें, तो उसका निचोड़ यह है:

यीशु प्रभु है।¹

वह राजा है।²

ब्रह्मांड पर। सब पर और सब कुछ पर। एक राजा, जो न्याय और प्रेम से शासन करता है, जो क्षमा करता है और जो सब कुछ नया कर देगा। यही शुभ संदेश है! यही प्रेरितों ने प्रचार किया – वे चले, जो आरंभ से साथ थे। इस्राएल को और सारे संसार को।

इसके बारे में और भी बहुत कुछ कहने को है। वह आपको अगले पृष्ठों में मिलेगा। इन तीन शब्दों को याद रखिए। यही केंद्रीय संदेश है। यही शुभ समाचार का हृदय है। यह हम सबसे संबंध रखता है। व्यक्तिगत रूप से। दूसरों से नहीं। हमसे। मुझसे। और यह हमारे पूरे ग्रह से, हमारे घर से भी संबंध रखता है। आप देखेंगे। इस पुस्तक को अपने लिए एक व्यक्तिगत संदेश के रूप में पढ़िए।

सुसमाचार

मसीही लोग सुसमाचार की बात करते हैं। यही उनकी विशेषता है। या होनी चाहिए। यह उनकी पहचान का हिस्सा है। इसके बिना वे कुछ नहीं होते। अर्थहीन। उस नमक की तरह, जिसमें नमकीनपन न रहा हो।

सुसमाचार उनका भेद है। उनका खज़ाना। उनकी औषधि। उनका आत्मिक, अहिंसक हथियार। किसी के पास इसके समान कोई संदेश नहीं है।

“सुसमाचार” शब्द बाइबल में अक्सर आता है। परन्तु उसका पहला उल्लेख वहाँ नहीं होता। यह बाइबल या कलीसिया का गढ़ा हुआ कोई धार्मिक शब्द नहीं है। यीशु के समय में और उससे पहले यह बोलचाल की भाषा का हिस्सा था। एक **शुभ समाचार** के रूप में। एक **आनंद के संदेश** के रूप में, जो आनंद और राहत लाता है। जो किसी अच्छी बात की घोषणा करता है।³ विभिन्न आनंददायक अवसरों पर लोग “सुसमाचार” पहुँचाते थे। ईसा पूर्व 63 में सम्राट अगुस्तस (Augustus) का जन्म हुआ। बाद में उसका जन्मदिन पूरे रोमी साम्राज्य में आनंद के संदेश के रूप में मनाया गया। वह स्वयं को “दिव्य का पुत्र” कहता था – एक

1. प्रेरितों के काम 2:36; 4:24; 11:20; 15:17

2. प्रेरितों के काम 17:7; 1 तीमथियुस 6:15; प्रकाशितवाक्य 17:14; 19:16

3. लूका 1:19

उपाधि, जो आगे चलकर बहुत-से सम्राटों पर लागू होनी थी। सम्राट औगुस्तुस के बारे में इस “सुसमाचार” के कुछ वाक्य यहाँ हैं:

“इस दिन ने संसार को एक नया रूप दे दिया है। संसार नष्ट हो जाता, यदि उसके जन्म में सब मनुष्यों के लिए उद्धार न चमक उठा होता। संसार के उद्धार के लिए यह मनुष्य ऐसे वरदानों से भरा है कि वह हमारे लिए और आनेवाली पीढ़ियों के लिए उद्धारकर्ता के रूप में भेजा गया है। अब सारे झगड़ों का अंत हो गया है, वह सब कुछ महिमामय कर देगा। पूर्वजों की आशाएँ पूरी हो गई हैं। असंभव है कि कभी इससे बड़ा कोई आ सके। उसके जन्म से एक नई कालगणना आरंभ होती है।”⁴

700 वर्ष पहले प्राचीन भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा था: कैसा आनंद! पहाड़ों पर से विजय का समाचार लानेवाला दौड़ा चला आ रहा है! वह शुभ समाचार लाता है, वह शान्ति और उद्धार की घोषणा करता है, वह सिय्योन नगरी से कहता है: तेरा परमेश्वर सारे संसार का राजा है!⁵



यशायाह जीवित परमेश्वर की बात करता है। उस सनातन की। जिसने सब कुछ रचा। इतिहास के प्रभु की। किसी मनुष्य की नहीं। या किसी स्वघोषित ईश्वर-पुत्र की नहीं। सम्राट की घोषणा एक आनंद का समाचार थी। परन्तु कौन-सा शासक संसार के लिए वह लाता है, जिसकी उसे सचमुच ज़रूरत है? जिसकी लालसा सब लोग भीतर गहराई में रखते हैं?

4. एशिया माइनर में प्रियेने (Priene) का कैलेंडर-शिलालेख, ईसा पूर्व 9; संक्षिप्त और स्वतंत्र रूप से अनूदित।

5. यशायाह 52:7

सुसमाचार युद्ध के मोर्चे से आनेवाला समाचार भी होता था। जब कोई विजय प्राप्त हो जाती और शत्रु पराजित हो जाता। यह ठीक मसीही सुसमाचार से मेल खाता है। यह एक विजय का शुभ समाचार है। परमेश्वर की विजय का, उसके पुत्र के द्वारा, जो क्रूस पर चढ़ाया गया और मृतकों में से जिलाया गया: यीशु मसीह। परमेश्वर ने हार नहीं मानी। वह अपने संसार के लिए लड़ रहा है!

क्रूस पर मृत्यु, मृतकों में से जिलाया जाना और परमेश्वर के सिंहासन पर ऊँचा किया जाना यीशु को संसार का प्रभु और उद्धारकर्ता बनाते हैं। उसे सारा अधिकार दिया गया है: वह ब्रह्मांड का शासक है।

⁶ यह उसी का है। वह सब राजाओं के ऊपर राजा है, जो सबको क्षमा और अनन्त जीवन प्रदान करता है!⁷ एक राजा, जिसने हमारे लिए सब कुछ दौंव पर लगा दिया। जो हमसे प्रेम करता है। एक राजा, जिस पर बिना संकोच भरोसा किया जा सकता है, क्योंकि उसका कोई निजी स्वार्थ नहीं और कोई छिपा उद्देश्य नहीं। वह सारे आदर के योग्य है। वह फिर आएगा, पर इसके बारे में आगे और।

संक्षेप में यही सुसमाचार है। सबसे महत्वपूर्ण बात। इस पर विचार कीजिए। इसे याद रखिए। इसे कभी न भूलिए।

मसीहियों के लिए यीशु को राजा के रूप में गवाही देना आज तक जोखिम भरा हो सकता है, और कुछ देशों में है भी। इस राजा⁸ का आदर करना ऐसा समझा जा सकता है, मानो शासकों, सम्राटों और राजाओं पर प्रश्न उठाया जा रहा हो। बिना किसी राजनीतिक उद्देश्य के। आज्ञाकारिता के कारण। यीशु के प्रति वफादारी उन्हें अक्सर सताव और मृत्यु तक ले गई। क्योंकि उनका और हमारा यीशु पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है।⁹ वह उनके ऊपर है!

परन्तु शुभ समाचार को मारा नहीं जा सकता था। उसमें जी उठा प्रभु और मसीह जीवित था। उसमें रोमी साम्राज्य को घुटनों पर ला देने की विस्फोटक शक्ति थी। तलवार से नहीं, बल्कि सुसमाचार के बदल देनेवाले अनुग्रह और सामर्थ्य से।

परमेश्वर का सुसमाचार

सुसमाचार कहाँ से आता है? सब कुछ परमेश्वर से शुरू होता है। त्रिएक परमेश्वर से: पिता, पुत्र और आत्मा। वही इसका आविष्कारक है। उसके हृदय में इसका जन्म हुआ। उसके अनन्त प्रेम से। पृथ्वी और मनुष्यों के अस्तित्व में आने से पहले ही।¹⁰ इसमें जो कुछ है, वह उसी से आता है।¹¹ केवल उसी से। यह उसका सुसमाचार है। इसलिए यह सत्य है। भरोसेमंद। विश्वसनीय। इस पर जीवन की नींव रखी जा सकती है।¹²

6. मत्ती 28:18; प्रेरितों के काम 2:36; इफिसियों 1:20-23

7. लूका 24:47; प्रेरितों के काम 2:38; 5:31; 10:43; 13:38; 26:18

8. प्रेरितों के काम 17:7

9. प्रकाशितवाक्य 1:5

10. रोमियों 16:25; 2 तीमुथियुस 1:9

11. 2 कुरिन्थियों 5:18

क्योंकि परमेश्वर विश्वासयोग्य है।¹³ वह झूठ नहीं बोलता।¹⁴ सुसमाचार में वह जो कुछ वादा करता और जिसका आश्वासन देता है, वह मान्य है और होकर रहता है। उसकी प्रतिज्ञा, जिस पर हम बिना किसी शर्त के भरोसा कर सकते हैं। यह स्वेच्छा से है। असीम प्रेम से प्रेरित। वह यही चाहता था। स्वयं को दे देना उसे भाता है। यह उसका आनंद है। इसमें वह अपनी महिमा प्रकट करता है।¹⁵ सारी महिमा उसी की है।¹⁶

परमेश्वर स्वयं शुभ समाचार पहुँचाता है। यह परमेश्वर का मिशन है। वह कार्य करता है, प्रभाव डालता है और बोलता है। यह समाचार एक ऐसे संसार तक आता है, जिसे ठीक इसी की ज़रूरत है। परमेश्वर को स्वयं किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। उसमें किसी बात की कमी नहीं। वह सिद्ध है। फिर भी उसका हृदय उमड़ पड़ता है। वह प्रेम करता है, क्योंकि वह प्रेम है। वह सब युगों का सबसे बड़ा वापसी-अभियान शुरू करता है। वह हम मनुष्यों को वापस चाहता है! वह एक परिवार चाहता है!¹⁷ क्योंकि जैसे हम जन्म लेते हैं, वैसे हम उसकी संतान नहीं हैं। हम सबको उसकी संतान बनना है। इसलिए वह हमें अपना प्रेम और अपनी कृपा देना चाहता है। ताकि हम सदा उसके साथ रहें।

सुसमाचार की ज़रूरत किसे है?

परमेश्वर का संदेश एक ऐसे संसार से मिलता है, जो अब वैसा नहीं है, जैसा परमेश्वर ने उसे आरंभ में रचा था। और जैसी उसने उसकी कल्पना की थी। आप क्या सोचते हैं: क्या हमारे संसार में परमेश्वर का हस्तक्षेप ज़रूरी है? या हम परमेश्वर के बिना काम चला लेंगे?

आइए, हम अपने संसार पर एक ईमानदार और संतुलित दृष्टि डालें।

परमेश्वर का संदेश ऐसे लोगों से मिलता है, जो भीतर से टूटे हुए और निराश हैं। जिन्हें अक्सर कोई रास्ता नहीं सूझता। जिनका विवेक दोष के बोझ से पीड़ित है। जो जानते हैं कि क्या-क्या अलग होना चाहिए या हो सकता था। जो भयभीत, बेचैन, खाली, बीमार और बंधन में हैं। यह ऐसे लोगों से मिलता है, जो सब मरेंगे।¹⁸ भविष्य से डरनेवाले लोगों से।

मानवजाति का एक बड़ा भाग गरीबी में जीता है। रोज़ जीवित रहने के संघर्ष में। बहुत-से लोग रास्ते में ही पीछे छूट जाते हैं।

परमेश्वर का संदेश ऐसे लोगों से मिलता है, जो विवाह, परिवार, काम-धंधे और समाज में असफल हो गए हैं। ऐसे लोगों से, जो आत्महत्या को अंतिम विकल्प मानते हैं।

12. मत्ती 7:24

13. 1 थिस्सलुनीकियों 5:24; इब्रानियों 10:23; 1 पतरस 4:19

14. तीतुस 1:2; इब्रानियों 6:18

15. इफिसियों 1:6, 9, 12, 14

16. प्रकाशितवाक्य 5:11-14

17. भजन संहिता 103:13; यशायाह 64:8; मलाकी 2:10; यूहन्ना 14:2; इब्रानियों 2:10; 1 यूहन्ना 3:1-3

18. रोमियों 5:12-14; 6:23

यह उतना ही ऐसे लोगों से भी मिलता है, जिनकी समस्याएँ कम हैं या बिल्कुल नहीं हैं। जिनका सौभाग्य है कि वे किसी धनी देश या धनी परिवार में बड़े हुए। आर्थिक रूप से स्वतंत्र। पर स्वास्थ्य और समृद्धि के बावजूद व्यर्थता और भीतरी खालीपन से पीड़ित।

अपराजित बीमारियाँ और वायरस हमारे जीवन के लिए खतरा हैं। प्रकृति अपना जानलेवा पहलू दिखाती है।

हर मनुष्य प्रश्नों, चिंताओं और ज़रूरतों का एक छोटा-सा ब्रह्मांड है, जो प्रेम, अर्थ, क्षमा और सहारे के लिए पुकारता है। चाहे यह पुकार व्यस्तता और ध्यान भटकानेवाली बातों के नीचे छिपी रहे या दब जाए।

सुसमाचार उन राष्ट्रों से मिलता है, जो आपस में युद्ध कर रहे हैं। उन लोगों से, जो झगड़े और अशान्ति में एक-दूसरे के साथ रहते हैं। यह एक ऐसे संसार से मिलता है, जिसमें अन्याय ने घर बना रखा है। जिसमें आज तक मनुष्य मनुष्यों को दास बनाते और उनका शोषण करते हैं। एक-दूसरे से भेदभाव करते हैं। जहाँ सबसे कमज़ोर लोग ही पीड़ित होते हैं। बच्चों को काम करना पड़ता है और स्त्रियों का शोषण होता है। पूरे के पूरे राज्य व्यवस्थित ढंग से मानवाधिकारों का उल्लंघन करते हैं।

बहुतों के लिए संसार दुःख से भरा स्थान बना रहता है। इस सूची को पढ़ते हुए आप बहुत पहले सोच चुके होंगे कि सब कुछ इतना बुरा नहीं है और बहुत कुछ अच्छा भी है। और बहुत कुछ बेहतर भी हो रहा है। आप सही हैं। बात किसी पक्षपाती या निराशावादी विश्वदृष्टि की नहीं है। प्रश्न यह है कि क्या हमें परमेश्वर और उसके सुसमाचार की ज़रूरत है।

हमें इस शुभ समाचार की ज़रूरत है! इस समझ तक कोई भी, कभी भी पहुँच सकता है। और इस सुसमाचार को अपने लिए ग्रहण कर सकता है। बहुत लोगों ने इसे पहचाना है। कभी-कभी कठिन रास्ते से। असफलता, टूटन, बीमारी और दुःख ही उन्हें इस समझ तक लाए। परमेश्वर चुप नहीं रहता। ये कठिन, अक्सर जानलेवा अनुभव हम तक पहुँचने के लिए परमेश्वर का मेगाफोन हैं।¹⁹

पाप?

कोई आधुनिक शब्द नहीं। अनाकर्षक और गलत समझा गया। फिर भी यह बाइबल के दृष्टिकोण और उसके द्वारा कारणों के वर्णन का हिस्सा है। जो कुछ अवांछित है – असफलता, टूटन, शत्रुता और अराजकता – उस सबके कारणों को हम कैसे समझाएँ?

जब बाइबल मनुष्य का वर्णन करती है, तो वह स्पष्ट बोलती है। वह कैसे जन्म लेता है, कैसे विकसित होता और जीता है। वह अपने साथी मनुष्यों के प्रति कैसा व्यवहार करता है। और परमेश्वर के प्रति। वह साफ़-साफ़ बात करती है। वह कोई नरमी नहीं बरतती। निर्ममता से ईमानदार। वह कहती है कि हम पापी

19. मेगाफोन का यह चित्र सी. एस. लुईस (C. S. Lewis) से लिया गया है: “Über den Schmerz” (The Problem of Pain)।

हैं।²⁰ सब। बिना किसी अपवाद के। हम सब पाप करते हैं, क्योंकि हम पापी हैं। यह व्यापक, बिना भेदभाव का निर्णय केवल बाइबल की विश्वदृष्टि में मिलता है! कोई धर्म यह दावा नहीं करता कि सब के सब, बिना अपवाद, पापी हैं।

पाप केवल उसका वर्णन नहीं करता, जो हम करते हैं। उसका भी, जो हम हैं। दुर्भाग्य से उसे किसी ट्यूमर की तरह हमारे भीतर अलग करके निकाला नहीं जा सकता। इससे बुरा शायद ही कुछ हो सकता था: हम उसकी शक्ति में बंदी हैं। यह किसी गलत आचरण से कहीं अधिक गंभीर है। पाप केवल व्यक्तिगत दुष्कर्मों का ढेर नहीं है। वह एक सक्रिय, दुर्भावनापूर्ण शक्ति है, जिसने हमारे अस्तित्व में व्याप्त होकर उस पर कब्ज़ा कर लिया है। यह एक विपत्ति है। क्योंकि अपने पाप के कारण हम परमेश्वर के अनन्त प्रेम से अलग हैं। वह हमारी पहुँच से बाहर है। पाप और परमेश्वर कभी एक साथ नहीं हो सकते।

पाप के साथ मृत्यु आई। अटल परिणाम के रूप में। एक मज़दूरी की तरह, जिसके हम हकदार हैं। हम वही काटते हैं, जो बोते हैं। पाप और मृत्यु सार्वभौमिक शक्तियाँ हैं, जिनसे कोई नहीं बचता।

शक्ति के सिद्धांत के रूप में पाप हमारे व्यक्तित्व को हानिकारक ढंग से गढ़ता है। वह हमें पूर्णतावादी बना देता है; और जब दूसरों की भलाई की बात आती है – चाहे पड़ोसी की हो या अफ्रीका में मरते हुए किसी व्यक्ति की – तो डरपोक और टालमटोल करनेवाला। पर जब हमारे अपने लाभ की बात आती है, तो स्वार्थी भी। पाप हमें आत्ममुग्ध, धोखेबाज़, नशे के गुलाम, षड्यंत्रकारी, कट्टरपंथी, व्यभिचारी, बलात्कारी बना देता है। यह सूची अंतहीन चल सकती है।

परन्तु हम केवल बंदी या रोगी नहीं हैं। केवल निष्क्रिय पीड़ित नहीं। बल्कि हम पाप के सक्रिय, ज़बरदस्ती भर्ती किए गए एजेंट बन गए हैं। हमने स्वयं को उसके प्रतिनिधि के रूप में, उसके औज़ार के रूप में लगा दिया है। यह केवल बंधुआई नहीं है, यह अपराध में सक्रिय साझेदारी है।

जब तक हम पाप और परमेश्वर के संबंध की अनदेखी करते हैं, पाप का स्वरूप हमसे छिपा रहता है। वह मानव जीवन की केवल कोई घटना नहीं, जिसे दबाया जा सके या जिस पर अंकुश रखा जा सके या रखना पड़े। बाइबल पाप को अराजकता, शत्रुता, विद्रोह, परमेश्वर के प्रति आज्ञा-उल्लंघन बताती है। परमेश्वर के बिना मनुष्य केवल एक अपूर्ण प्राणी नहीं है, जिसे सुधार की ज़रूरत है। वह एक विद्रोही है, जिसे अपने हथियार डालने होंगे। आत्मसमर्पण ही एकमात्र रास्ता है।

इन चरम आरोपों के बावजूद कृपया आगे पढ़ते रहिए!

मानव जीवन का मूल संबंध – परमेश्वर के साथ हमारा संबंध – टूट गया है। यह टूटन आपस के हमारे सब दूसरे संबंधों में दिखाई देती है। हम केवल व्यक्तिगत रूप से या अकेले पापी नहीं हैं। हम एक वैश्विक मानवजाति का हिस्सा हैं, जो पाप से बच नहीं पाती।

बाइबल का यह निदान हमारा बचाव है! दंड की आज्ञा नहीं!

क्या आप चाहेंगे कि आपका डॉक्टर आपकी जानलेवा बीमारी का ईमानदार निदान आपसे छिपाए रखे? खासकर तब, जब वह उसी सौंस में आपको ऐसी दवा या ऑपरेशन का वादा कर सकता हो, जो उस बीमारी को हरा दे?

परमेश्वर के निदान को समझना और स्वीकार करना लगभग असंभव है। हम स्वयं को बड़ी आसानी से अपवाद मान लेते हैं। या स्थिति की गंभीरता को कम करके आँकते हैं।

इस प्रकार सुसमाचार एक ऐसे संसार से मिलता है, जो अपनी समस्याओं के बावजूद, विचित्र रूप से, परमेश्वर के उद्धार के संदेश में बहुत कम रुचि रखता है। एक विरोधाभास। फिर भी परमेश्वर को इससे फ़र्क़ पड़ता है कि इस ग्रह पर, उसके ग्रह पर, क्या हो रहा है। सुसमाचार इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर इस संसार के लिए लड़ रहा है। दुःख, बुराई और मृत्यु का अंतिम वचन नहीं होगा। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है!²¹

आरंभ के प्रश्न का उत्तर यह है: परमेश्वर की संतान बनने के लिए हमें सुसमाचार की ज़रूरत है।

पाप के प्रति, उस बुराई के प्रति जो मनुष्य सोचते और करते हैं – बड़ी बातों में भी और छोटी में भी –, परमेश्वर की अरुचि बहुत बड़ी है। क्योंकि पाप हमें नष्ट करता है। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है और हमें बचाना चाहता है। परमेश्वर की यह अरुचि और पाप पर उसका दंड-निर्णय ठोस रूप से “परमेश्वर के क्रोध” में प्रकट होता है।²²

वह उस बुराई को, जिसके कर्ता के रूप में हम उससे जुड़े हुए हैं, जितनी दृढ़ता से दोषी ठहराता है, उतनी ही दृढ़ता से वह हर मनुष्य को उससे स्वतंत्र करना चाहता है।

स्वतंत्रता – कोई ज़बरदस्ती नहीं

इस महिमामय सुसमाचार²³ के बावजूद परमेश्वर मनुष्यों से ज़बरदस्ती “हाँ” नहीं कहलवाता। सच्चा प्रेम केवल स्वतंत्रता के आधार पर ही संभव है! निर्णय की स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व मनुष्य के स्वभाव का अंग बने रहते हैं। मनुष्य ऐसा ही रचा गया है, अन्यथा नहीं।

परन्तु पापी के रूप में मनुष्य अब तटस्थ नहीं रहा। पाप उसे असहाय, बल्कि अपने बल पर सुसमाचार को ग्रहण करने में असमर्थ बना देता है। स्वयं को पापी के रूप में पहचानना मानवीय दृष्टि से असंभव है। परन्तु सुसमाचार में सामर्थ्य है। वह आँखें खोल देता है – अपने आप को और परमेश्वर को देखने के लिए। वह हृदय और विवेक को प्रकाशित करता है। परमेश्वर इस निर्णय में मनुष्य को अकेला नहीं छोड़ता। मनुष्य

21. रोमियों 5:8; 1 यूहन्ना 3:1; 4:7-11

22. यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; 5:9; इफिसियों 2:3; 5:6; कुलुस्सियों 3:6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9-10

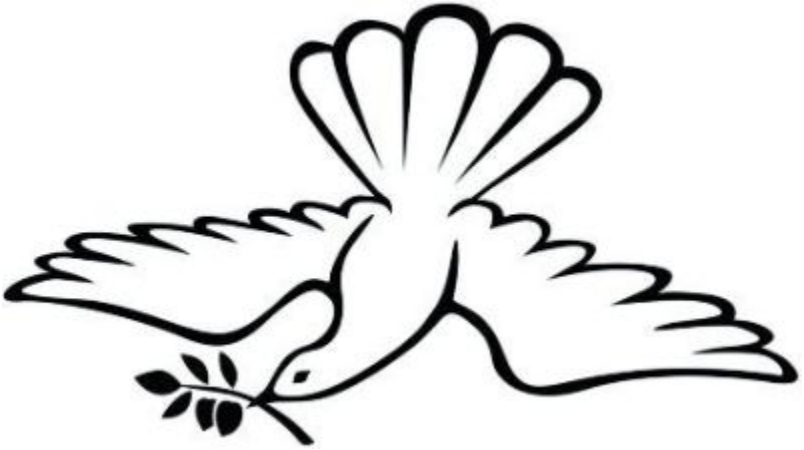
23. 2 कुरिन्थियों 4:4

का हृदय एक ऐसी युद्धभूमि है, जिसके लिए कड़ा संघर्ष होता है। परमेश्वर हृदयों को जीतना चाहता है। और मेल-मिलाप की अपनी तत्परता से उन्हें कायल करना और प्रकाशित करना चाहता है।

परमेश्वर की बचानेवाली सूझ-बूझ अपार है। परमेश्वर किसी भी परिस्थिति, किसी भी समय और किसी भी स्थान का उपयोग कर सकता है, ताकि अपनी पवित्र उपस्थिति से पाप और खोए हुए होने का बोध जगाए और साथ ही उद्धार और छुटकारा प्रदान करे।

ऐसे सुनहरे क्षणों के लिए न कोई नियम हैं, न कोई साँचे। ऐसा हुआ है। ऐसा होता है। ऐसा अभी आपके साथ हो सकता है। बहुत लोग बताते हैं कि परमेश्वर कितने अद्भुत, अप्रत्याशित, रहस्यमय, प्रेमपूर्ण या क्रांतिकारी ढंग से उनके जीवन में आया।

परमेश्वर का संदेश मन फिराने की एक तत्काल आज्ञा है।²⁴ हमारी भलाई के लिए। फिर भी मनुष्य स्वयं उत्तरदायी हैं कि वे उस पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं।



बात यहाँ तक कैसे पहुँची

मनुष्य पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में रचे गए थे। उसके स्वरूप में। ताकि अपने सृष्टिकर्ता के साथ मिलकर पृथ्वी की देखभाल करते हुए उसका प्रबंध करें और उस पर शासन करें। स्वर्ग-सी वाटिका, एक छोटा-सा, सीमित स्थान, सारी पृथ्वी पर फैलाई जानी थी। वह, पिता, और वे, सब मनुष्य, उसका परिवार।²⁵ आरंभ से ऐसा ही सोचा गया था।

24. प्रेरितों के काम 17:30

25. यशायाह 63:16; 64:8; लूका 3:38; प्रेरितों के काम 17:28-29

वास्तविक इच्छा-स्वतंत्रता के साथ रचे गए मनुष्य। ताकि वे परमेश्वर का प्रेम पाएँ, उसका उत्तर प्रेम से दें और उसे आगे बाँटें। सृष्टिकर्ता के साथ ऐसे जीना और काम करना – एक सपना। बिल्कुल निकट। उसकी सुरक्षा और आशीष में।

परन्तु तब, आरंभ में, मनुष्यों ने कुछ और चुना। उन्होंने अपने विशेषाधिकार-प्राप्त निवास, उस स्वर्ग-सी वाटिका, की रक्षा नहीं की। बहकानेवाला भीतर आ गया। वह धूर्त सर्प। सर्प के पीछे परमेश्वर का एक स्वर्गदूत छिपा था, जो कभी तेजस्वी था। उसने परमेश्वर से नाता तोड़ लिया था। विद्रोह किया था और पाप में गिर गया था। यही विचार शैतान, इब्लीस, मनुष्यों को बेचना चाहता था: ज्ञान के प्रकाश और प्रगति के रूप में, एक बेहतर, अधिक स्वतंत्र जीवन की ओर।

उन्होंने अपने सृष्टिकर्ता के अच्छे निर्देश का पालन नहीं किया। परमेश्वर के समान बन जाना – यही इब्लीस का प्रलोभन और लालच है। इस प्रकार उन्होंने अपने भले परमेश्वर की एक सरल आज्ञा की अवहेलना की। क्या उन्हें यह डर था कि उसने उनसे कोई अच्छी चीज़ रोक रखी है?²⁶

उन्होंने इस क्रम की भारी कीमत चुकाई। सब कुछ वैसा न रहा, जैसा होना चाहिए था। उन्होंने स्वर्ग खो दिया। मृत्यु, नश्वरता – आत्मिक भी और शारीरिक भी – उनके जीवन में घुस आई।²⁷ वह फैलती गई। एक वंशानुगत बीमारी की तरह वह उनके सब वंशजों में पहुँच गई। जिनमें हम भी हैं।

यह बहुत पुरानी बात है। पर किसी तरह स्थिति वैसी ही बनी रही। आज तक। कई सहस्राब्दियों बाद भी हम मनुष्य सृष्टिकर्ता के बिना जीवन को गढ़ते हैं। अपनी ही मर्जी से। ऐसे, मानो परमेश्वर है ही नहीं। हम सोचते हैं कि हम बेहतर जानते हैं। हम अपने सृष्टिकर्ता को भूल गए हैं। और ऊपर से अधिक आकर्षक दिखनेवाले देवता ढूँढ़ लिए हैं। क्योंकि मनुष्य के रूप में हमारा स्वभाव ही धार्मिक होना और किसी चीज़ पर भरोसा करना या किसी चीज़ में विश्वास करना है। यह बात संसार के धर्म दिखाते हैं, और आधुनिक मनुष्यों का व्यवहार भी, और पैसा, सत्ता और सेक्स जैसे उनके स्थानापन्न देवता भी। परमेश्वर के बिना अब हमें अपनी ज़रूरतें स्वयं पूरी करनी पड़ती हैं। बड़े और छोटे पैमाने पर अतृप्त लालच उन हृदयों की अभिव्यक्ति है, जो अपने आप में खो गए हैं। अपने आप में बंदी, इस अहसास के साथ कि कोई आवश्यक, अर्थ देनेवाली चीज़ हमसे खो गई है। हमने जीवन के सोते,²⁸ अपने सृष्टिकर्ता को छोड़ दिया है। उसके साथ संबंध के बिना सृष्टि के साथ स्वस्थ संबंध भी बिगड़ गया है। मनुष्य कई जगह उसी घर को नष्ट कर रहे हैं, जिसमें वे रहते हैं। परमेश्वर की अच्छी आज्ञाएँ, जो हमें परमेश्वर के साथ, एक-दूसरे के साथ और सृष्टि के साथ एक सफल, आशीषित जीवन के लिए दी गई हैं, उन्हें हम ठुकरा देते हैं।

अक्सर यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि नियम और आज्ञाएँ किसी तानाशाह से आती हैं। एक ऐसे परमेश्वर से, जो हम पर नियंत्रण रखना, हम पर हुकूमत करना और हमें बाँधकर रखना चाहता है। परन्तु

26. उत्पत्ति 3

27. रोमियों 5:12-21

28. भजन संहिता 36:9; नीतिवचन 14:27; यिर्मयाह 2:13; 17:13

बहुत लोग परमेश्वर को वैसा नहीं जानते, जैसा वह वास्तव में है।

एक भला पिता, जो हमारी भलाई चाहता है।

जैसा है, वैसा नहीं रहेगा

परमेश्वर पतित संसार के पीछे जाता है। उसकी सारी समस्याओं और संकट-केंद्रों के साथ। वह उसे नहीं छोड़ता।²⁹ बुराई अपनी विविध तीव्रता में, बड़े और छोटे रूप में, केवल एक समस्या नहीं है। वह आरंभ से ही अस्तित्व का संकट है। होना या न होना। अदन से बाहर जीवित बचे रहना – यही हमारे अस्तित्व का क्षितिज है। तब से हम इसी संकट में और अपने कामों के सब परिणामों में जीते हैं। हर दिन हमारी आँखों के सामने है कि इसका क्या अर्थ है। परमेश्वर के बिना इसका अंत अच्छा नहीं हो सकता। परमेश्वर के बिना रास्ता अंधकार में जाता है। हम आत्मिक और नैतिक अंधकार में ठोकर खाते फिरते हैं। न मार्ग जानते हैं, न लक्ष्य।

सुसमाचार – न्याय और दंड की आज्ञा नहीं – यीशु मसीह में परमेश्वर का उत्तर है। सुसमाचार बुराई पर जय पाने की उसकी महायोजना है। नीचे की ओर घूमते चक्र को रोकने और अंधकार में प्रकाश, जीवन और आशा लाने की।³⁰ ताकि स्वतंत्रता, शान्ति और आनंद लौट आएँ।³¹ सबके लिए। और हर बुराई से अंत में भलाई निकले।³² ताकि परमेश्वर का फिर से एक परिवार हो। और हम उसकी संतान बन सकें। सबसे अच्छी बात, जो हमारे साथ कभी हो सकती है।

सुसमाचार परमेश्वर का आश्वासन है कि सब कुछ वैसा नहीं रहेगा, जैसा आज है। यह प्रतिज्ञा आज तक मान्य है। इसे कभी वापस नहीं लिया गया। यह उसके सब लोगों के लिए है। संसार के हर स्थान पर।

राज्य का सुसमाचार

सुसमाचार सचमुच सरल है। हर कोई इसे समझ सके। फिर भी इसके कई आयाम और पहलू हैं। इसमें उससे अधिक है, जितना आरंभ में दिखाई देता है। एक हीरे की कल्पना कीजिए। सबसे बड़ा हीरा, जो है। तराशा हुआ। वह प्रकाश को केवल एक ही सतह में नहीं, बल्कि अपनी हर तराशी हुई सतह में बिखेरता है। सुसमाचार अनेक रूपों में, अद्भुत तेज के साथ चमकता है। यह उस मसीह की महिमा है, जो परमेश्वर का प्रतिरूप है।³³

29. यूहन्ना 3:16

30. भजन संहिता 27:1; 43:3; यशायाह 9:2; 60:1; मत्ती 4:16; यूहन्ना 1:4-9; 3:19-21

31. लूका 2:10

32. उत्पत्ति 50:20

33. 2 कुरिन्थियों 4:4

यह संदेश हम तक कैसे पहुँचा?

संदेश एक व्यक्ति में आया। हाँ, संदेश एक व्यक्ति है। वह कोई व्यवस्था नहीं है। कोई विश्वास-अंगीकार नहीं। कोई धर्मशिक्षा-पुस्तिका नहीं। वह एक मनुष्य है। प्रश्न यह नहीं कि कौन-सी चीज़ हमें बचा सकती है। प्रश्न यह है कि कौन हमें बचा सकता है।

वह हम में से एक बन गया। और फिर भी पूरी तरह भिन्न था: एक, जो एक ही समय में परमेश्वर भी है और मनुष्य भी। परन्तु जो अपने परमेश्वरत्व को पीछे रखकर दीनता में, बल्कि निर्बलता में हमारे पास आता है।

परमेश्वर हमारे पास नीचे उतर आता है। उसने स्वयं को बिल्कुल छोटा बना लिया।³⁴ वह अनन्त, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। जिसका हमारी तरह कोई आरंभ नहीं। वह मनुष्य बन गया। हमारे बिल्कुल निकट आया।³⁵ पहले से कहीं अधिक निकट। नीचे, हमारी आँखों के स्तर तक। सृष्टिकर्ता अपने प्राणियों के बीच। मनुष्य के रूप में।³⁶ उसे देखा गया, सुना गया, छुआ गया, गले लगाया गया।³⁷ उसने देखा, बातें कीं, उसका हृदय द्रवित हुआ, वह रोया, उसने प्रेम किया और करुणा से लोगों को छुआ।

ताकि हम आखिरकार समझ सकें। वह किसी शासक के वैभव में नहीं आया। नासरत से एक निर्माण-कारीगर आया। गलील के निचले वर्ग से। परमेश्वर यीशु में हमारे पास आता है। उसने जो प्रतिज्ञा की थी, उसे वह सच कर दिखाता है। यशायाह पहले से कहता है:

प्रभु के आत्मा ने मुझे अपने अधिकार में ले लिया है। क्योंकि प्रभु ने मेरा अभिषेक किया है और इसके द्वारा मुझे अधिकार दिया है कि मैं गरीबों को शुभ समाचार सुनाऊँ। उसने मुझे भेजा है कि मैं निराश लोगों को नया साहस दूँ और बंदियों के लिए घोषणा करूँ: 'तुम स्वतंत्र हो! तुम्हारी बेड़ियाँ खोल दी जाएँगी!'³⁸

इस वचन को यीशु नासरत के आराधनालय में अपने ऊपर लागू करता है: भविष्यद्वक्ता का यह वचन आज तुम्हारी आँखों के सामने पूरा हुआ है।³⁹ उसका पूरा जीवन, उसके वचन और कार्य, भविष्यद्वक्ता के इन वचनों की पूर्ति हैं और इस शुभ संदेश की सिद्ध अभिव्यक्ति।

यीशु परमेश्वर का प्रतिरूप है।⁴⁰ जिसने उसे देखा, उसने स्वर्गीय पिता को देखा।⁴¹ वह परमेश्वर का मिशन है। यीशु वह है, जो परमेश्वर हमसे कहना चाहता है।⁴² यदि हम समझना चाहते हैं कि परमेश्वर कौन है

34. फिलिप्पियों 2:6-8

35. यूहन्ना 1:14

36. फिलिप्पियों 2:5-11

37. 1 यूहन्ना 1:1-3

38. यशायाह 61:1-2

39. लूका 4:16-22

40. कुलुस्सियों 1:15; इब्रानियों 1:1-3

41. यूहन्ना 14:9

और कैसा है, तो हमें उसे यीशु से समझना होगा। यीशु ही परमेश्वर की हमारी तस्वीर है। जैसा सुसमाचार के वृत्तांतों में वर्णित है। ऐसा है परमेश्वर।

इसलिए मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना द्वारा लिखे गए यीशु के जीवन के चार वृत्तांत सुसमाचार कहलाते हैं। मरकुस इस प्रकार आरंभ करता है: इस पुस्तक में लिखा है कि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का शुभ समाचार कैसे आरंभ हुआ।⁴³

यीशु के साथ शुभ समाचार आरंभ होता है। उसके बारे में लिखा है: यीशु गलील लौट आया और परमेश्वर की ओर से घोषणा करने लगा: समय आ गया है: अब परमेश्वर अपना शासन स्थापित करेगा और अपना काम पूरा करेगा। मन फिराओ और इस शुभ समाचार पर विश्वास करो!⁴⁴

परमेश्वर का राजशासन क्या है?

परमेश्वर का शासन उसकी प्रेम और न्याय की सरकार है। हमारे संसार के लिए भविष्य वाला एकमात्र विकल्प। उसका एकमात्र भविष्य।

बहुत-से यहूदी इसका अर्थ यह समझते थे कि रोमी क़ब्ज़ा करनेवाले पराजित होंगे और उनका अत्याचार समाप्त होगा। परन्तु यीशु में एक साधारण मनुष्य आता है, राजनीतिक शक्ति वाला कोई राजा नहीं। कोई युद्ध-नायक नहीं। उसका राज्य, परमेश्वर का राज्य, अपेक्षा के अनुसार यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर नहीं, बल्कि एक घुमक्कड़ प्रचारक के साथ आरंभ होता है, जिसका अंत क्रूस पर होता है। यह उन लोगों के हृदयों में आरंभ होता है, जो अपने पापों को मान लेते हैं और अपना जीवन बदलते हैं। उसका राज्य इस संसार का नहीं है।⁴⁵ वह परमेश्वर से आता है। वह भिन्न है। बिना हिंसा, बिना दमन, बिना सैनिक विजय के। इस्राएल में उसका आरंभ होता है, परन्तु उसकी दृष्टि सारे संसार पर है। सब मनुष्यों के लिए उसकी योजना बनी है।

यीशु में परमेश्वर का राजशासन मौजूदा राजनीतिक ढाँचे के विरुद्ध नहीं है। उसका लक्ष्य कुछ और है। यीशु देश भर में घूमता है और मन फिराने और परमेश्वर की ओर लौटने का प्रचार करता है। परमेश्वर का शासन यीशु के प्रकट होने और कार्य करने से, और उन लोगों में, जो उसके पीछे चलते हैं, वास्तविकता बनता है। वह अनगिनत रोगियों को चंगा करता है। दुष्टात्माओं को निकालता है। परमेश्वर का राजशासन उन बुरी और अदृश्य शक्तियों के विरुद्ध है, जो मनुष्यों को सताती हैं। केवल राजाओं या सैनिकों जैसे दिखाई देनेवाले अधिकारी ही नहीं हैं। ऐसी अदृश्य शक्तियाँ भी हैं, जिनके नीचे मनुष्य दुःख उठाते हैं। उस

42. इब्रानियों 1:2

43. मरकुस 1:1

44. मरकुस 1:14-15

45. यूहन्ना 18:36

बहकानेवाले को याद कीजिए, जो बिल्कुल आरंभ में स्वर्ग-सी वाटिका में आया था। इसके बारे में आगे और।

यीशु इस प्रश्न का उत्तर नहीं देता कि बुराई कहाँ से आती है और क्यों है। वह कार्य करता है। वह अपने पिता के आदेश और अधिकार से उसके विरुद्ध संघर्ष छेड़ता है। परमेश्वर का राजशासन इस संसार में टूटकर प्रवेश करता है और कुछ ऐसा बदलता है, जो उस समय के रोमियों से कहीं अधिक गहराई में परमेश्वर के शासन का विरोधी है। परमेश्वर का राज्य मनुष्यों से उस स्तर पर मिलता है, जहाँ वे सबसे अधिक दुःख उठाते हैं। सबसे बड़ा शत्रु बुराई है, अन्याय, पाखंड और प्रेमहीनता। एक शब्द में: पाप। उसने मनुष्य को आत्मिक रूप से बीमार कर दिया है। उसने मनुष्य पर अधिकार जमा लिया है। तब भी और आज भी।

परमेश्वर स्वयं पाप, पीड़ा और भय, दुःख और मृत्यु के रंगमंच पर आता है। वह इसलिए आता है कि यह सब अपने ऊपर ले ले और इसके द्वारा नया राज्य स्थापित करे।

परमेश्वर का शासन – सबके लिए सबसे उत्तम

30 वर्ष गुप्त जीवन के बाद यीशु साढ़े तीन वर्ष तक सार्वजनिक रूप से कार्य करता है। वह चंगा करता है, स्वतंत्र करता है और सिखाता है कि वास्तव में किस बात का महत्व है। वह पाखंड को उजागर करता है, भूखों को तृप्त करता है। इस प्रकार वह दिखाता है कि परमेश्वर कौन है और परमेश्वर क्या चाहता है। इसके द्वारा हम मनुष्यों के लिए दिखाई देने लगता है कि परमेश्वर का अनन्त राज्य एक दिन कैसा होगा। यीशु का कार्य तो केवल आरंभ है। और एक प्रतिज्ञा। क्योंकि परमेश्वर की महायोजना में वह महान लक्ष्य शामिल है, जो यीशु में पहले ही चमक उठता है: एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी, जहाँ उन सब बातों में से, जिनके विरुद्ध यीशु लड़ा, कुछ भी शेष न रहेगा। एक नई पृथ्वी, जहाँ परमेश्वर अपने परिवार के साथ वास करता है।⁴⁶ एक नई पृथ्वी, जिस पर बदले हुए और नए किए गए मनुष्य देखभाल के साथ शासन करते हैं। तानाशाह और निरंकुश शासक नहीं। शुभ समाचार यह है: संसार के साम्राज्य अपने सम्राटों और राष्ट्रपतियों सहित मिट जाते हैं। परमेश्वर का राज्य आता है और सदा बना रहता है।⁴⁷

यह यीशु के साथ आरंभ हो चुका था। यह आज मौजूद है। बाहर से देखने पर छिपा हुआ। बिना किसी दिखाई देनेवाले राजा के। राजा कुछ समय के लिए चला गया है, उस दृष्टांत के स्वामी की तरह, जो परदेश चला जाता है। उसका राज्य उसके लौटने की प्रतीक्षा करता है।⁴⁸ आज यह एक “गुप्त”

(undercover) राज्य है। बिना सीमाओं के। बिना राजधानी के। यह संसार के साम्राज्यों और राजनीतिक ढाँचों के साथ-साथ जीता है। हर उस जगह, जहाँ मनुष्यों ने अनुपस्थित, अदृश्य, परन्तु सच्चे राजा यीशु के प्रति वफ़ादारी की शपथ ली है। वे इस राज्य को बिना किसी हिंसा के स्थापित करते हैं।⁴⁹

46. प्रकाशितवाक्य 21:3-5

47. दानियेल 2:44-45; 7:26-27

48. मत्ती 25:14-30

उनका हथियार प्रेम है। वे प्रतीक्षा करते हैं कि उनका जी उठा यीशु, जो स्वर्ग में लौट गया है, फिर आए। उसने ऐसा ही वादा किया है।⁵⁰ राजा की वापसी – सार्वजनिक, दृश्य, प्रतापी। तब संसार के सब साम्राज्यों का अंत होगा। उन अदृश्य शक्तियों का भी, जो दुष्टता से संसार की घटनाओं पर प्रभाव डालती हैं।

शुभ समाचार उस हर चीज़ पर परमेश्वर की विजय की घोषणा करता है, जो उसके प्रेम और न्याय के शासन का विरोध करती है। यीशु के जीवन में इसका आरंभ हुआ। परमेश्वर की अंतिम विजय अभी आनी है। वह बिना रुके निकट आ रही है। उसका राज्य अभी से है, पर अभी पूरी तरह नहीं। अभी दिखाई नहीं देता। यीशु के फिर आने तक वह अस्थायी, रहस्यमय रूप में बना रहता है। फिर भी अभी से उसका पूर्वस्वाद है, जो आनेवाला है। पवित्र आत्मा में शान्ति और आनंद।⁵¹ सारी पृथ्वी पर सुसमाचार का फैलना और वे लोग, जो प्रतिदिन कृतज्ञता से अपने आप को राजा के अधीन कर देते हैं, इस राज्य के अदृश्य अस्तित्व की गवाही देते हैं। वैसे ही आज तक होनेवाले चिह्न, आश्चर्यकर्म और चंगाइयाँ भी।

सुसमाचार यह घोषणा है कि नासरत का यीशु ही मसीह है और उसे सब पर प्रभु ठहराया गया है।⁵² पुत्र को पिता ने भेजा। उसने वे सब प्राचीन भविष्यद्वाणियाँ पूरी कीं, जिन्हें पुराने नियम में पढ़ा जा सकता है। वह दाऊद के वंशज के रूप में मनुष्य बना। वह हमारे लिए और हमारे पापों के लिए मरा। गाड़ा गया, जिलाया गया और परमेश्वर के सिंहासन पर मुकुट पहनाया गया। वहाँ से वह शासन करता है। उसे सारा अधिकार दिया गया है। यीशु ही मसीह है!

परमेश्वर के पुत्र का सुसमाचार

यीशु मसीह ही सुसमाचार है। नया नियम इसे मसीह का सुसमाचार कहता है।⁵³ इसी का प्रचार प्रेरितों ने और उन सब ने किया, जो यीशु के चले और उसके पीछे चलनेवाले बने।⁵⁴ उसी का उन्होंने प्रचार किया।⁵⁵ यही राज्य का सुसमाचार है। वह राजा है। परन्तु वह उससे भी अधिक है। हमें केवल एक राजा की ज़रूरत नहीं है। हमें एक छुड़ानेवाले की भी ज़रूरत है।

उसके जीवन के चार वृत्तांतों को सुसमाचार कहा जाता है, क्योंकि वे शुभ संदेश हैं। उनमें यह बात ध्यान खींचती है कि वह अपने प्रचार-प्रसार के लिए स्वयं कोई प्रयत्न नहीं करता। वह राजा बनाया जाना भी नहीं चाहता।⁵⁶

49. मत्ती 5:43-48

50. प्रेरितों के काम 1:10-11

51. रोमियों 14:17

52. प्रेरितों के काम 2:36; 3:20-23; 10:36

53. रोमियों 15:19; 1 कुरिन्थियों 9:12; 2 कुरिन्थियों 2:12; फिलिपियों 1:27; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2

54. प्रेरितों के काम 8:4, 12, 25, 35, 40; 10:36; 11:20; 13:38; 14:7, 15, 21

55. प्रेरितों के काम 5:42; इफिसियों 3:8; फिलिपियों 1:17-18; कुलुस्सियों 1:28

56. यूहन्ना 6:15

जो चंगे हुए, उन्हें किसी से कुछ नहीं कहना है। फिर भी वे बताते हैं, उनका आनंद इतना बढ़ा है।⁵⁷ दुष्टात्मा-ग्रस्त लोगों को, ठीक कहे तो उनमें की अशुद्ध आत्माओं को, जो उसकी सच्ची पहचान जानती थीं, वह बोलने से मना करता है।

ध्यान से देखें तो किसी ने सचमुच नहीं समझा कि वह कौन था। उसके सबसे निकट के लोगों ने भी नहीं। भले ही पतरस कहता है, तू मसीह है,⁵⁸ वह यह नहीं जानता कि केवल एक मरा हुआ और जी उठा मसीह ही उसे पूरा करता है, जिसकी भविष्यद्वान्नी की गई थी।

अपने चेलों के साथ लगभग दो वर्ष बिताने के बाद यीशु, उनके अचंभे के लिए, यह बात कहता है कि वह मार डाला जाएगा। और वह भी यरूशलेम में, उस महान राजा के नगर में।⁵⁹ फरीसियों, महायाजकों और शास्त्रियों की घृणा के कारण। साथ ही वह कहता है कि वह तीन दिन के बाद जी उठेगा।⁶⁰

क्या सब कुछ एक अकल्पनीय त्रासदी में समाप्त होनेवाला था? क्या यह कोई शुभ समाचार हो सकता था? एक राजा, जिसे मार डाला जाता है?

परन्तु यीशु कहता है कि उसे बहुतों के लिए अपना प्राण छुड़ौती के रूप में⁶¹ देना है। उसका जीवन मूल्य के रूप में बदले में दिया गया। ताकि बहुतों को छुड़ाए। दासता से मोल लेकर स्वतंत्र करे। पाप और मृत्यु के कारागार से। स्वार्थ और आत्म-प्रेम से, निर्भरताओं से। अदृश्य शक्तियों के वश से। यह मृत्यु उद्धार की एक व्यापक, संसार को बदल देनेवाली घटना बननेवाली थी। कोई दुर्घटना नहीं और कोई हार नहीं।

उसका जीवन इस बात की ओर लगा हुआ था कि वह उसे पूरा करे,⁶² जो इतना विरोधाभासी लगता था।⁶³ वह इसे पहले से जानता था।⁶⁴ वह मनुष्यों के छुटकारे के लिए कीमत चुकाने को तैयार था। अपने ही प्राण से। वह मनुष्य बना, ताकि उनके लिए मर सके।⁶⁵ एक, जिसने केवल भलाई ही की और भलाई ही कही। जो बिल्कुल निष्पाप था।⁶⁶ हम सब से बिल्कुल भिन्न। समर्पण और पड़ोसी की सेवा से भरा एक जीवन। स्वार्थ की ज़रा-सी भी झलक के बिना। एक जीवन, इतना बहुमूल्य, शुद्ध और पवित्र कि उसका कभी अंत नहीं होना चाहिए था। सुसमाचार यीशु का जीवन और उसके कार्य हैं। केवल उसकी नैतिक सिद्धता नहीं। पाप, बीमारी, दुष्टात्मा-ग्रस्तता और मृत्यु के विरुद्ध उसका प्रतिरोध, उसका संघर्ष और उसकी विजय भी।

57. मरकुस 1:34, 43-45; 5:43; 8:26

58. मत्ती 16:13-20; लूका 9:18-21

59. भजन संहिता 48:2; मत्ती 5:35; 21:5

60. मत्ती 16:13-21; मरकुस 8:27-32; लूका 9:18-22, 44-45; 18:31-34

61. भजन संहिता 49:7; मत्ती 20:28; मरकुस 10:45; 1 तीमुथियुस 2:6

62. लूका 9:51

63. लूका 12:50; यूहन्ना 17:4; 19:28-30

64. यूहन्ना 18:4

65. इब्रानियों 2:14

66. 2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 2:22; इब्रानियों 4:15; 1 यूहन्ना 3:3, 5

मृत्यु में उसे अपने शिखर, अपनी पूर्णता, बल्कि अपनी अंतिम विजय तक पहुँचना था। एक मृत्यु, जिसने सब कुछ बदल दिया। ब्रह्मांड में सत्ता का स्थानांतरण।

उसका प्रेम कायल कर देता है। जिस तरह वह मनुष्यों से मिलता है, उनके पीछे जाता है, उन्हें उठाता है, उन्हें चंगा करता है, उन्हें मूल्यवान ठहराता है। बिना भेदभाव के, छोटों और बड़ों को, बीमारों और पापियों को। इसी यीशु का प्रचार किया जाता है। जो मरा और जी उठा और जीवित है। और आज सुसमाचार में अदृश्य रूप से, पर अनुभव होने योग्य ढंग से, सामर्थ्य के साथ उपस्थित है। जो मनुष्यों से मिलता है।

जो सुसमाचार से मिलता है, वह यीशु से मिलता है। वह आज जीवित है, उतना ही वास्तविक, जितना तब, जब वह इसाएल में घूमता-फिरता था। अब जी उठे प्रभु के रूप में, जो परमेश्वर की स्वर्गीय महिमा में रहता है। परमेश्वर के सिंहासन पर। परन्तु अपने आत्मा के द्वारा वह हर उस जगह उपस्थित है, जहाँ आनंद के संदेश का प्रचार होता है। इसका प्रमाण यह है कि प्रतिदिन लोग विश्वास की आज्ञाकारिता में यीशु की ओर फिरते हैं और उसके पीछे चलते हैं।

पिता ने पुत्र को प्रायश्चित्त के रूप में, अर्थात् हमारे पापों की क्षमा के लिए भेजा। यह इस बात का प्रमाण है कि वह संसार से प्रेम करता है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा संसार के उद्धार में एक हैं।⁶⁷

राजा और क्रूस

यीशु ने अपना ध्यान अपने अंत पर लगाया। एक बहुत जल्दी आ गए अंत पर।⁶⁸ परन्तु साथ ही किसी नई बात का आरंभ। किसी कहीं बड़ी बात का। वह अपना प्राण छुड़ौती के रूप में देने आया था। बहुतेरों के लिए छुटकारा! यही उसके पिता के हृदय की अभिलाषा और इच्छा थी।⁶⁹ और यीशु ने इस इच्छा को पूरा करने के लिए सब कुछ लगा दिया। आइए, हम यीशु के जीवन के अंतिम अंक के निकट आएँ। यह इतना अबूझ है कि हम ऐसा सोच-समझकर और संयम के साथ करते हैं।

राजा की हत्या

वह अपने चेलों के साथ फसह के पर्व के लिए यरूशलेम जाता है। नगर के सामने के मार्ग पर और नगर के भीतर उसका स्वागत एक राजा की तरह, बल्कि राजा के रूप में होता है। क्या आखिरकार राजशासन आरंभ हो रहा है?

नगर ठसाठस भरा है। अनगिनत तीर्थयात्री आए हुए हैं। पूरा एक सप्ताह वह वहाँ रहता है।⁷⁰ आज हम इसे दुःखभोग का सप्ताह कहते हैं। वह शिक्षा देता है और शास्त्रियों के साथ लगातार वाद-विवाद में रहता

67. यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 4:9-14

68. भजन संहिता 102:24

69. लूका 22:42

70. मत्ती 21-27

है। वे उसे घेरना और फंदे में फँसाना चाहते हैं, परन्तु बार-बार उसकी बुद्धि से निरुत्तर हो जाते हैं। धार्मिक अगुवों के पाखंड और प्रेमहीनता को वह उजागर करता है। जनता पर इसका प्रभाव बड़ा है। मंदिर में उसका कार्य, जिसमें वह थोड़ी देर के लिए हाथ उठाकर मंदिर के आँगन में सर्राफों की मेज़ें उलट देता है, लोगों के सरदारों के लिए बहुत अधिक है। वे इस आपत्तिजनक नासरी को दुनिया से मिटा देने की योजना बनाते हैं।

गुरुवार की शाम यीशु अपने चेलों के साथ यहूदी फसह मनाता है। इस फसह के भोजन के दौरान वह कुछ नया आरंभ करता है। वह एक रोटी लेता है, उसे तोड़ता है और इन शब्दों के साथ अपने चेलों को बाँटता है: यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए दी जाती है। फिर वह दाखरस का एक कटोरा लेता है और कहता है: यह मेरा लहू है, नई वाचा का लहू, जो पापों की क्षमा के लिए बहाया जाता है।⁷¹ उस समय चेलों को यह अहसास नहीं हुआ कि ये शब्द कितने दूरगामी और गहरे थे।

फिर सब कुछ अपनी राह चल पड़ता है। यीशु को उसका अपना एक चेला पकड़वाता है।⁷² वह बंदी बनाया जाता है।⁷³ महायाजकों के सामने पेश किया जाता है।⁷⁴ उसे रोमी राज्यपाल पिलातुस के हाथ सौंप दिया जाता है और निर्दोष होते हुए भी दोषी ठहराया जाता है।⁷⁵ उसे यातना दी जाती है। सब कुछ नियंत्रण से बाहर प्रतीत होता है। यीशु शक्तियों के हाथ का खिलौना बन जाता है। उसने गहरे अर्थ में कहा था: यह तुम्हारी घड़ी है, और अंधकार का अधिकार है।⁷⁶ क्रूस की घटना में केवल जाने-माने धार्मिक और राजनीतिक अगुवे ही सक्रिय नहीं थे, बल्कि अदृश्य शक्तियाँ भी। सब कुछ परमेश्वर के पुत्र के विरुद्ध और परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध एक हो गया।

मनुष्यता को रौंदनेवाला यह तमाशा क्रूस पर चढ़ाए जाने के साथ समाप्त हुआ। सबसे क्रूर हत्याओं में से एक के द्वारा यीशु को मृत्युदंड दिया गया। उस यादगार शुक्रवार को।⁷⁷ दो अपराधियों के साथ, एक बाईं ओर और एक दाईं ओर, उसे क्रूस पर चढ़ाया जाता है। दोपहर बारह बजे से तीन बजे तक, जब सूर्य सबसे ऊँचा होता है, अंधकार छा जाता है।⁷⁸ क्रूस पर चढ़ाया गया यीशु पुकारता है: हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?⁷⁹ वहाँ कुछ असाधारण घटता है। अंत में यीशु ने सबसे महत्वपूर्ण शब्द ऊँचे स्वर से कहता है, जो कभी सुने गए: पूरा हुआ!⁸⁰ यूनानी शब्द *tetelestai* – यीशु ने इसे शायद अरामी भाषा में पुकारा था – का अर्थ है: काम पूरा हो गया। जिस किसी बात के लिए वह आया था, वह कर

71. मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:14-20

72. मत्ती 26:14; मरकुस 14:10

73. यूहन्ना 18:1-11

74. यूहन्ना 18:12-24

75. यूहन्ना 18:28 – 19:16

76. लूका 22:53

77. यूहन्ना 19:17-24

78. लूका 23:44

79. मत्ती 27:46

80. यूहन्ना 19:30

दी गई है। छुड़ीती दे दी गई है। इन शब्दों के तुरंत बाद वह मर गया। उसने अपनी आत्मा अपने पिता के हाथों में सौंप दी।⁸¹

रोमी सूबेदार, जिसने क्रूस पर चढ़ाने का काम करवाया था, जिसने सब कुछ बिल्कुल पास से देखा, गहराई से हिल जाता है। वह कहता है: **सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था!**⁸²

आखिरकार वह काम पूरा हो गया, जो बहुत लोग बहुत समय से चाहते थे। मनुष्यों ने प्रकट कर दिया कि उनके हृदयों में क्या है। इससे बुरा, इससे घिनौना और इससे क्रूर कुछ नहीं हो सकता था। हिंसा, घृणा और अंधकार की शक्तियों ने विजय पा ली थी।

यीशु पर कोई दोष नहीं लगाया जा सकता था। निर्दोष एक अपराधी की मृत्यु मरता है। सारे दुःख में यीशु ने अपना बचाव नहीं किया।⁸³ उसकी यह विनती बेमिसाल है: **हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।**⁸⁴ पिता दुःख के मार्ग पर उसके साथ चलता है। यह उसे मृत्यु से नहीं बचाता। पिता ने अपने पुत्र को नहीं रख छोड़ा।⁸⁵

यीशु बहुत जल्दी मर जाता है, अपने साथ क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों से पहले। यहूदी महासभा का एक सदस्य, अरिमतियाह का यूसुफ, उसकी लाश को अपनी नई, अप्रयुक्त कब्र में रखता है।⁸⁶ उन सब के लिए, जो उस पर आशा लगाए थे, एक संसार ढह जाता है। आशा सबसे अंत में मरती है। अब वह मर चुकी थी।

रविवार की सुबह स्त्रियाँ ही कब्र पर आती हैं, ताकि यीशु की देह पर सुगंधित द्रव्य मलें। वे हैरान रह जाती हैं: टनों भारी कब्र का पत्थर कब्र के बगल में पड़ा है। खुली कब्र में उन्हें यीशु की देह नहीं मिलती। वह खाली है। उसकी लाश अब वहाँ नहीं है। उसके बदले स्वर्गदूत, जो कहते हैं:

वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जैसा उसने कहा था!⁸⁷

अपेक्षा से भिन्न

चेले धीरे-धीरे ही समझ पाते हैं कि उनका गुरु जी उठा है। जब तक यीशु उन्हें दिखाई नहीं देता और वे उसे देखते और छूते नहीं। यह वही है। वही, और फिर भी किसी तरह भिन्न। जी उठा। एक नई देह। फिर भी: हाथों और पैरों में कीलों के निशान, उसकी पसली का घाव साफ़ दिखाई देते हैं। वह उनके साथ खाता है, पर बंद दरवाज़ों के आर-पार चला जाता है। कभी यहाँ होता है, कभी वहाँ।⁸⁸ बहुत से चेलों को दिखाई देता है।

81. लूका 23:46; यूहन्ना 19:30

82. मरकुस 15:39

83. यशायाह 53:7; 1 पतरस 2:23

84. लूका 23:34

85. यूहन्ना 3:16; रोमियों 8:32

86. यशायाह 53:9; लूका 23:50-56

87. लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-10

88. लूका 24:13-49; यूहन्ना 20:11-31; 21:1-14

अपने भाई याकूब को भी।⁸⁹ मृतकों में से जिलाए गए के रूप में, एक नए अस्तित्व में, वह कोई और है और साथ ही फिर भी उनका यीशु।

वे समझने लगते हैं कि उसने उन्हें सब कुछ पहले से बता दिया था। अब वे 40 दिन तक जी उठे यीशु के साथ रहते हैं। वह बहुत से प्रश्नों के उत्तर देता है। उनके संदेह दूर करता है। उन्हें नई दिशा देता है। उनके नए काम के लिए। राज्य के विषय में वह उन्हें सिखाता है।⁹⁰ अपनी मृत्यु के विषय में। कि उसे क्यों मरना पड़ा। यह बात वह पहले भी कह चुका था, पर अब यह और भी स्पष्ट होती गई। यह कोई निरर्थक त्रासदी नहीं थी। यह परमेश्वर की महायोजना थी, जिसके केंद्र में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान हैं। एक आत्मिक भूकंप का केंद्र, जिसने संसार को हिला दिया। एक नए युग की धुरी। ब्रह्मांड में मोर्चे और सत्ता का परिवर्तन।

वे सोचते होंगे कि एक क्रूस का ऐसा ब्रह्मांडीय महत्व क्यों होना चाहिए। वह तो हर दूसरी बात का प्रतीक है, बस इसका नहीं। क्रूस पर मृत्यु का उद्देश्य तो मनुष्य से उसकी मनुष्यता छीन लेना, उसे चरम सीमा तक अपमानित करना और स्मृति से मिटा देना है।

परमेश्वर की दृष्टि से क्रूस

क्रूस हमें दूर दिखाई देता है। एक घटना, जो बहुत समय पहले घटी। एक ऐसे संसार और ऐसी संस्कृति में, जो कई बातों में हमारी अपनी संस्कृति से पराई लगती है। परन्तु यदि हम इस क्रूस को ठीक से समझें, तो इस दूर के क्रूस में हम यह खोजते हैं कि परमेश्वर हमारे निकट है।

चेले समझने लगे कि मसीह की मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं थी। वह हमारे छुटकारे की कीमत थी। उन्होंने पहचाना और प्रचार किया कि ठीक ऐसा ही होना था।⁹¹ यह आवश्यक था। क्योंकि मसीह हमारे लिए मरा।⁹² उन्होंने बाद में उस अबूझ बात पर कोई अर्थ थोपने का प्रयत्न नहीं किया। अपने आप को और दूसरों को तसल्ली देने के लिए। क्योंकि यीशु ने अपनी मृत्यु से पहले और उसके बाद जो कहा था, उसके द्वारा वे समझ गए थे। परमेश्वर ने यीशु को जिलाया और ऊँचा किया। अब संसार का भविष्य उसी पर टिका है। क्रूस की घटना में, उसके आत्म-बलिदान में उन्होंने संसार के साथ परमेश्वर के मेल-मिलाप को पहचाना।⁹³ कि यीशु ने बलिदान के रूप में संसार के पापों को उठा लिया और दूर कर दिया।⁹⁴

क्योंकि यीशु ने बिना प्रतिरोध के अपने आप को सौंप दिया, इसलिए स्पष्ट हो गया कि परमेश्वर का प्रेम किताना महान था। क्रूस पर विकृत और यातना से कुचले हुए यीशु में परमेश्वर का हाथ मेल-मिलाप के लिए

89. 1 कुरिन्थियों 15:5-7

90. प्रेरितों के काम 1:3

91. प्रेरितों के काम 2:22-24; 3:18, 24; 8:35; 9:22; 13:32, 38; 18:28; 26:23

92. 1 कुरिन्थियों 15:3; गलातियों 1:4; 3:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; तीतुस 2:14; 1 पतरस 2:24; 1 यूहन्ना 3:16; प्रकाशितवाक्य 1:5

93. 2 कुरिन्थियों 5:19-21

94. यूहन्ना 1:29, 36

बढ़ा हुआ है।

हमारे लिए बलिदान हुआ

इसाएल में पशु-बलि की एक उपासना-पद्धति थी। बहुत सी अन्य जातियों में भी। उनमें से कुछ आज तक हैं। नया नियम यीशु की मृत्यु को एक बलिदान के रूप में वर्णन करता है, मानो इसाएल के बढ़ाए गए सब पशु-बलियों की पूर्ति के रूप में।⁹⁵ यह एक रूपक है, हमारे लिए एक सहारा, ताकि हम समझें कि यीशु ने क्या पूरा किया। बलिदान का विचार किसी उपासना-पद्धति के बाहर भी अनजाना नहीं है। तब, जब कोई मनुष्य दूसरों को बचाने के लिए अपने आप को उनके लिए दे देता है।

पशु-बलियों को वेदी पर शांति से मारा जाता था। परन्तु यीशु को मनुष्यों ने मार डाला। वह सहज या जल्दी नहीं मरा। उसे हिंसा से मार डाला गया। बलिदान के स्वरूप में लहू बहाना और मृत्यु शामिल हैं, पर दुःख या क्रूरताएँ नहीं। यीशु की मृत्यु जान-बूझकर की गई एक हिंसक और घिनौनी घटना थी। क्रूस पर मृत्यु का उद्देश्य डराना था। मनुष्यों ने इसे पहचाना हो या नहीं, यीशु के विरुद्ध उनकी हिंसा परमेश्वर के विरुद्ध हिंसा थी।

संसार की हिंसा के प्रति परमेश्वर की अपनी प्रतिक्रिया यह थी कि बुराई की शक्तियाँ व्यर्थ कर दी गईं। इस प्रकार कि उन्हें सहा गया और अपने भीतर सोख लिया गया। इसीलिए यह इतना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु पर आक्रमण हुआ, तब उसने अपना बचाव नहीं किया। क्षमा में भीतरी पीड़ा को सहना, उसे अपने भीतर सोख लेना शामिल है। और इस बात को ठुकराना कि कड़वाहट, द्वेष, घृणा और बदला जन्म लें। परमेश्वर निर्दोष बलि के रूप में संसार में आता है। अंत में बलि की मृत्यु अद्वितीय होनी थी। केवल एक धार्मिक रीति का पशु-बलि नहीं। अंत में पुराने नियम के बलिदान वास्तव में केवल सच्चे बलिदान के पूर्वचित्र थे।

यीशु हमारे पापों के कारण मरा, परन्तु सबसे बढ़कर हमारे पापों के लिए।⁹⁶ वह परमेश्वर का बलि का मेम्ना था, जो संसार का पाप उठा ले जाता है।⁹⁷ बलिदान के रूप में वही एकमात्र साधन है, जिसके द्वारा हम अपने पापों से, अपनी अशुद्धता से शुद्ध किए जाते हैं। ताकि हम एक पवित्र परमेश्वर की उपस्थिति में आ सकें।

बलि पर हाथ रखने या हाथ दबाने के द्वारा चढ़ानेवाला अपने आप को बलि के साथ एक कर लेता है। कुछ बलि पर चला जाता है। कलंक, अशुद्धता बलि पर चली जाती थी और इस प्रकार नष्ट कर दी जाती थी। बलि एक प्रकार का प्रतिनिधि बन जाती है। एक बलि, ठीक कहेँ तो बलि का लहू, पापों का प्रायश्चित्त कर सकता था। प्रायश्चित्त का अर्थ है कि हमारे पाप मिटा दिए जाते हैं। और जो कुछ उन्होंने बिगाड़ा है, वह भी

95. इफिसियों 5:2; इब्रानियों 7:27; 9:14, 26; 10:12, 14

96. 1 कुरिन्थियों 15:3

97. यूहन्ना 1:29, 36; 1 पतरस 1:18-21

रद्द कर दिया जाता है। पाप ढाँप दिया जाता है, उसकी शक्ति तोड़ दी जाती है। जो टूट गया था, वह फिर से पूरा हो जाता है।

यीशु ने सब पशु-बलियों के पूर्वचित्र को पूरा कर दिया। और साथ ही उनका अंत कर दिया।⁹⁸ उन्हें अनावश्यक बना दिया। अब एक निष्पाप मनुष्य हमारे पापों के लिए मरा। एक सिद्ध जन पापियों के लिए। हमारे पाप, अपराध और अधर्म के काम, परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध हमारे अनगिनत अपराध, हमारी आज्ञा न मानना – यह सब उसने अपने ऊपर ले लिया। मानो उसने स्वयं यह किया हो। और उसे सदा के लिए दूर कर दिया।⁹⁹ अपनी मृत्यु के भीतर। क्रूस पर उसने हमारे पाप और पापों का बोझ उठाया। वहाँ क्रूस पर परमेश्वर ने अपने पुत्र के व्यक्तित्व में पाप को दोषी ठहराया, बल्कि उसका न्याय किया।¹⁰⁰ इसलिए उसकी मृत्यु क्रूस पर चढ़ाए गए दूसरे लोगों जैसी नहीं थी। यहाँ एक जन पापी की मृत्यु मरा, यद्यपि वह पापी नहीं था। बलि के रूप में हमारे पापों और अधर्मों से लदा हुआ। सारे संसार के पापों के साथ एक कर दिया जाना एक असहनीय प्रक्रिया है। दूसरों के लिए पाप पर दंड की आज्ञा को अपने भीतर सहना संसार की किसी पीड़ा और किसी अनुभव से तुलना के योग्य नहीं है।¹⁰¹ यह एक अनूठी प्रक्रिया है। एक भयानक, आघात पहुँचानेवाले क्रूस-दंड के सबसे मनुष्य-विरोधी वातावरण में। यही क्रमगत थी। दो दूसरे क्रूसों के बीच इस क्रूस पर सब युगों का सबसे बड़ा दुःख सहा गया।

यह दुःख इस बात की गारंटी है कि भविष्य मनुष्य के पुत्र के हाथों में है। उन दुःखों की गहराई, जिन्हें परमेश्वर ने स्वयं अपने ऊपर ले लिया, एक भेद बनी रहती है। परमेश्वर स्वयं एकमात्र संभव समाधान बनाता है: अपने पुत्र का अद्वितीय बलिदान। वह उसे पूरा करता है, जिसे हम कभी पलट नहीं सकते थे और जिसे हम कभी पूरा नहीं कर सकते थे।

हमारे लिए और परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में यीशु का समर्पण हमारे प्रति असीम प्रेम, उदारता और कृपादृष्टि का प्रमाण और आधार, उसका आरंभ-बिंदु है।

एक मरा हुआ, एक मृत मसीह हमारी सहायता नहीं करता।¹⁰² सबसे निर्णायक प्रश्न बाक़ी रहा: क्या परमेश्वर ने अपने पुत्र के बलिदान को सचमुच ग्रहण किया?

हाँ! उसने उसे जिलाया। यीशु का जिलाया जाना एक आश्चर्यकर्म से बढ़कर है। एक विस्मयादिबोधक चिह्न से बढ़कर। वह घोषणा करता है कि परमेश्वर इस अद्वितीय बलिदान को आनंद से ग्रहण करता है और अब पापियों को धर्मी ठहरा सकता है।¹⁰³ इसका अर्थ है कि वह बिना शर्त अनुग्रह दिखाता है और क्षमा करता है। और पापियों को धर्मी बनाता है।¹⁰⁴ मानो उन्होंने कभी पाप किया ही न हो।

98. इब्रानियों 7:27; 9:26, 28; 10:10, 14

99. इब्रानियों 8:12; 10:17; मीका 7:19

100. रोमियों 8:3

101. रोमियों 8:3; 2 कुरिन्थियों 5:21

102. 1 कुरिन्थियों 15:17

103. रोमियों 4:24-25; 1 कुरिन्थियों 15:3

क्या परमेश्वर को बलिदान की ज़रूरत है?

मसीह के क्रूस पर अंतहीन मनन किया जा सकता है। क्या आपने भी कभी अपने आप से पूछा है: क्या परमेश्वर को बलिदान की ज़रूरत है? या, यह कैसे संभव है कि प्रेम का परमेश्वर अपने क्रोध को शांत करने के लिए बलिदान माँगे?

सबसे पहले हमें यह स्पष्ट होना चाहिए कि बलिदान की ज़रूरत हमें थी। परमेश्वर को नहीं। समस्या हमारी थी। परमेश्वर की नहीं। हमने पाप किया है और हमें प्रायश्चित्त के लिए, हानि की भरपाई के लिए बलिदान चढ़ाना चाहिए था। क्योंकि प्रायश्चित्त ऐसी बात है, जिसका उत्तरदायी अपराधी होता है। परन्तु एकमात्र, जो स्थिति को फिर से ठीक कर सकता है, वह स्वयं परमेश्वर है। वह क्रीमत चुकाता है। ताकि परमेश्वर के साथ संबंध फिर से स्थापित हो। इस प्रकार कि वह क्षमा करने को तैयार और इच्छुक है। यही वह है, जो परमेश्वर यीशु में करता है।

मैंने भी अपने आप से पूछा कि क्या लहू बहानेवाले बलिदान के बिना काम नहीं चल सकता। सबसे बढ़कर, यीशु की भयानक क्रूस-मृत्यु के बिना। गतसमनी के बाग़ में यीशु अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से थोड़ी देर पहले प्रार्थना करता और गिड़गिड़ाता है। भयभीत और व्याकुल। वह अपने पिता से, जिसके लिए तो सब कुछ संभव है, विनती करता है कि क्या क्रूस उससे टल सकता है। कि दुःख का कटोरा उसके पास से हट जाए। परन्तु यीशु पिता की इच्छा पूरी करता है। वह बिना प्रतिरोध के झूठे दंड-निर्णय और क्रूस की घटना में चला जाता है।¹⁰⁵

बाग़ में कहे गए शब्द हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं: क्रूस और यीशु की मृत्यु के बिना परमेश्वर की उद्धार की इच्छा पूरी करना संभव नहीं था। निश्चय ही, परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है – परन्तु उद्धार के लिए उसका अपना मार्ग है। यह उसका ब्रह्मांड और उसका संसार है। जीवन के नियम और ढाँचे वही निर्धारित करता है। हमें एक प्रतिनिधि की ज़रूरत थी। हमें एक ऐसे छुड़ानेवाले की ज़रूरत थी, जो मृतकों में से जी उठे और हमें भी अपने साथ जीवन में खींच ले। हमें एक ऐसे छुड़ानेवाले की ज़रूरत थी, जो मृत्यु की शक्ति को हरा दे – अपनी मृत्यु के द्वारा। जो मृत्यु-शत्रु के गढ़ में घुस जाए और बेड़ियों और फाटकों को तोड़ डाले।

परमेश्वर का प्रेम और यीशु का प्रेम दुःखों से अधिक बलवान हैं। यीशु किस बात से इतना अत्यधिक भयभीत था? रोमियों के हाथों क्रूस पर मृत्युदंड से? निश्चय ही। परन्तु इस बात से भी कि उसे हमारे पाप के साथ एक माना जाए। हमारा पाप उठाए। मानो वह स्वयं उसका रचयिता और करनेवाला हो। इसी में वह सबसे बड़ी बात है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। कुछ ऐसा, जिसे उस दिन गुलगुता पर उपस्थित लोगों में से किसी ने नहीं समझा, बल्कि उसका अनुमान भी नहीं किया। क्रूस पर परमेश्वर का असीम प्रेम और उसकी पवित्रता, संसार के अनगिनत पाप, मनुष्यों की घृणा और अंधकार की शक्तियाँ

104. रोमियों 3:21-26; 5:1, 9

105. मत्ती 26:36-46; मरकुस 14:32; लूका 22:39

आपस में टकराते हैं। यीशु को यह सहना पड़ता है। उठाना और सहना। और उसे अपनी मृत्यु के भीतर अपने साथ ले जाना।

यदि परमेश्वर की उद्धार की इच्छा क्रूस के बिना संभव होती, तो गुलगुता पर यह अंत न होता! इतिहास के मोड़ के रूप में क्रूस एक विरोधाभास बना रहता है। परन्तु हमारे लिए वह परमेश्वर का सामर्थ्य और ज्ञान सिद्ध होता है। फिर से कहूँ: यह उसका मार्ग है।

यह मनुष्यों का आविष्कार नहीं है। यीशु मसीह का क्रूस टूटे हुए संसार के लिए परमेश्वर का उत्तर है। मसीहियों को, यीशु के पीछे चलनेवालों को, क्रूस के लिए क्षमा माँगने की ज़रूरत नहीं है। वह एक ठोकर का कारण बना रहता है। जो विश्वास नहीं करते, उनके लिए उसे किसी स्वीकार्य रूप या तर्क में ढाला नहीं जा सकता।

यह प्रश्न कि क्या परमेश्वर को शांत किए जाने या अपना क्रोध ठंडा करने के लिए बलिदान की ज़रूरत है, इस प्रकार उत्तर पा सकता है: हम सब परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं।¹⁰⁶ परमेश्वर का क्रोध प्रकट है¹⁰⁷ और वह आनेवाले न्याय में दिखाई देता है।¹⁰⁸

परन्तु परमेश्वर क्रोध करने में धीमा है।¹⁰⁹ वह अपने क्रोध को रोक रखता है। वह बुराई को अपने ऊपर ले लेता है और दंड देना छोड़ देता है। क्षमा का संबंध उठाने और सहने से है। परमेश्वर ने स्वयं अपनी प्रजा इस्राएल के अधर्म को अक्सर सहा है। गुलगुता उसका शिखर है। वहाँ परमेश्वर अपनी प्रजा का पाप सहता है और वह उत्तर देना छोड़ देता है, जो हम मनुष्य, यदि सर्वशक्तिमान होते, तो देते। परन्तु परमेश्वर चुप रहता है। वह गतसमनी की प्रार्थना नहीं सुनता, बल्कि क्रूस पर यीशु की प्रार्थना: हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।¹¹⁰

क्रूस पर परमेश्वर अपने क्रोध का अंत करता है। वह उसे रोक लेता है! क्रूस वह स्थान है, जहाँ परमेश्वर के क्रोध का अंत होता है। वह स्थान नहीं, जहाँ उसका उचित क्रोध भड़कता है, बल्कि जहाँ वह बुझ जाता है। इसका प्रमाण उसका निःशस्त्र समर्पण है। क्रूस पर चढ़ाए गए परमेश्वर के रूप में।

एक ठोकर का कारण। परन्तु हमारे लिए वह कोर-पिघलन (कोर मेल्टडाउन), जिसमें क्रोध और हिंसा मिट जाते हैं। पाप और मृत्यु की शक्ति का लहू बहकर समाप्त हो जाना।

जब 1986 में चेर्नोबिल में एक परमाणु रिएक्टर फटा, तो उससे भी बड़ी आपदा का खतरा था। धधकते रिएक्टर के नीचे पानी से भरा एक हौज़ था। यदि पिघला हुआ पदार्थ उसमें बह जाता, तो भाप का एक भीषण विस्फोट कहीं अधिक विकिरण फैला देता। तीन पुरुष स्वेच्छा से आगे आए। वे विकिरण से भरे,

106. यूहन्ना 3:36; रोमियों 3:5; इफिसियों 2:3

107. रोमियों 1:18

108. रोमियों 2:5, 8; 5:9; कुलुस्सियों 3:6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:10

109. निर्गमन 34:6; गिनती 14:18

110. लूका 23:34

पानी में डूबे तहखाने में उतरे। वहाँ उन्होंने हाथ से वाल्व खोले, ताकि पानी बह निकले। उन्हें जीवित लौटने की आशा नहीं थी। फिर भी वे गए। यूक्रेन के लिए, यूरोप के लिए। उनके साहस ने आपदा को टाल दिया। तीनों जीवित बचे।

इसी प्रकार यीशु, अकल्पनीय रीति से, हमारे लिए वह बन गया, जिसने आपदा उत्पन्न की थी: पाप।¹¹¹

बुराई पर भलाई से जय

मसीह में बुराई का अंत होता है, क्योंकि वह उसे अपने ऊपर ले लेता है। मनुष्यों की बुराई को सहता है। निर्बलता में क्रूस पर चढ़ाया जाता है।¹¹² परन्तु परमेश्वर की निर्बलता अधिक बलवान है।¹¹³ उसका प्रेम बुराई के द्वारा बुझाया नहीं जा सका। उसने बुराई को भलाई से जीत लिया। शत्रुओं से प्रेम के द्वारा। वह अधिक बलवान था और उसने विजय पाई! बुराई ने अपना पूरा ज़ोर लगा लिया और फिर भी हार गई। जी उठे प्रभु में परमेश्वर का हाथ मेल-मिलाप के लिए बढ़ा हुआ रहता है।

परमेश्वर ने मसीह में, अपने आत्म-बलिदानी प्रेम में, हमारी हिंसा को अपने ऊपर ले लिया। ताकि हमें हमारे बिगड़े हुए, पापमय स्वभाव से और सत्ता, बदले और प्रतिशोध से भरे हृदय से छुड़ाए।

क्रूस पर परमेश्वर बचाते हुए और मेल-मिलाप कराते हुए उपस्थित है।¹¹⁴ क्रूस पर चढ़ाए गए में। त्रिएक परमेश्वर – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – ने क्रूस के द्वारा अनन्त उद्धार रचा।¹¹⁵ यीशु के लहू के द्वारा प्रायश्चित्त हुआ। वह हमारे पापों को ढाँप देता है।¹¹⁶ क्रूस पर पाप को, एक शक्ति के रूप में, मृत्यु का दंड दिया गया,¹¹⁷ ताकि हम एक नया जीवन जी सकें। ताकि न केवल हमारे पाप क्षमा हों, बल्कि पाप की शक्ति भी तोड़ दी जाए। ताकि वह हमारे जीवन पर अब हावी न रहे।

यही क्रूस का शुभ समाचार है। त्रिएक परमेश्वर क्रूस पर अपने आप में वह सब करता है, जो आवश्यक है – हमारे लिए!

111. 2 कुरिन्थियों 5:21

112. 2 कुरिन्थियों 13:4

113. 1 कुरिन्थियों 1:25

114. 2 कुरिन्थियों 5:19

115. इब्रानियों 9:14

116. 1 यूहन्ना 2:2

117. रोमियों 8:3



परमेश्वर का असीम ज्ञान और सामर्थ्य

परमेश्वर की महानता उसकी नम्रता में दिखाई देती है। एक ऐसे प्रेम में, जो सेवा करता है और अपने आप को दे देता है। जब परमेश्वर मसीह में क्रूस पर जाता है, तो वह अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य नहीं करता। वह वैसा ही कार्य करता है, जैसा वह है। गुलगुता से उसके प्रेम का एक रूप है: क्रूस का रूप। एक ऐसा प्रेम, जो भलाई खोजता है और अपने आप को सौंप देता है। यदि क्रूस उसके प्रेम का सबसे बड़ा प्रकाशन है, तो परमेश्वर सदा ऐसा ही था। और वह सदा ऐसा ही रहेगा।

क्रूस पर परमेश्वर अपना ज्ञान दिखाता है। और वह मूर्ख प्रतीत होता है। क्रूस पर परमेश्वर अपना सामर्थ्य दिखाता है। और वह अपने आप को शक्तिहीन बना लेता है। क्रूस पर परमेश्वर अपनी सुंदरता दिखाता है। और वह अपने आप को विकृत होने देता है। क्रूस पर परमेश्वर अपना प्रेम दिखाता है। वह अपने आप को हमारे पाप के परिणामों के साथ एक कर लेता है। परमेश्वर से इससे अधिक दूर कोई नहीं हो सकता। ठीक वहीं वह झुककर नीचे आता है।

क्रूस परमेश्वर का सामर्थ्य है।¹¹⁸ यह आश्चर्यजनक है। पौलुस कहता है, जब परमेश्वर अपना सामर्थ्य दिखाता है, तो वह ऐसा दिखता है: यीशु परमेश्वर होने के विशेषाधिकारों को उतार रखता है।¹¹⁹ वह एक घायल हो सकनेवाला मनुष्य बन जाता है। वह ठीक उन्हीं मनुष्यों का दोष और लज्जा अपने ऊपर ले लेता

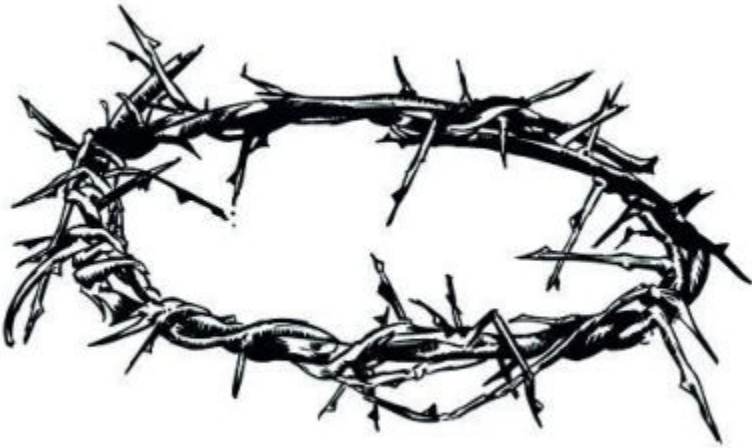
118. 1 कुरिन्थियों 1:18

119. फिलिप्पियों 2:6-8

है, जो उसे क्रूस पर चढ़ाते हैं। हम सामर्थ्य के बारे में ऐसा नहीं सोचते। बहुत से मसीहियों ने भी इसे गंभीरता से नहीं लिया।

सामर्थ्य की बात आते ही हम ज़बरदस्ती और हिंसा के बारे में सोचते हैं। मनुष्य अपने देवताओं की ऐसी ही कल्पना करते हैं। क्रूस इसके उलट दिखाता है। क्रूस पर परमेश्वर का सामर्थ्य हमारे हृदय को जीतने का प्रयास है। अपने बिल्कुल भिन्न स्वभाव के द्वारा। उस प्रेम के द्वारा, जो अपने आप को दे देता है।

वह निर्बलता में क्रूस पर चढ़ाया गया। परन्तु परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से अधिक बलवान है।¹²⁰ सत्ता के नियमों के अनुसार नहीं, बल्कि प्रेम की व्यवस्था के अनुसार! शत्रुओं से प्रेम की व्यवस्था के अनुसार।



क्रूस हमें क्या देता है

क्रूस दिखाता है कि हम मनुष्य क्या कुछ करने में सक्षम हैं। परमेश्वर के विरुद्ध अपने विद्रोह में, अपने जीवन की जानी-बूझी या अनजानी अराजकता में।¹²¹ जहाँ परमेश्वर के लिए कोई स्थान नहीं है। या वह केवल एक गौण भूमिका निभाता है। फिर भी उनके लिए भी, जो शत्रुओं की तरह उसके सामने खड़े हैं, परमेश्वर अपने

120. 1 कुरिन्थियों 1:25; 2 कुरिन्थियों 13:4

121. 1 यूहन्ना 2:15-17; 3:4

हृदय की गहराई से इतनी दूर तक जाने को तैयार है कि अपने पुत्र को मृत्यु के लिए दे दे।¹²² ताकि शत्रुता को मेल-मिलाप और शान्ति में बदल दे।

हमें मृत्यु और पाप से स्वतंत्र करने के लिए एकमात्र निष्पाप जन मरा और फिर से जीवित हुआ। जो मसीह ने किया, उसे परमेश्वर हम पर लागू करता है। उसकी मृत्यु हमारी मृत्यु है और उसका पुनरुत्थान हमारा है। उसके साथ हम मर गए और जी उठे हैं!¹²³ क्रूस पर उसने अपने आप को हमारे साथ एक कर लिया। हम मसीह के साथ एक किए गए हैं। उसकी मृत्यु हमारी मृत्यु है। हमारे पुराने, पापमय और असफल जीवन का अंत। और उसका पुनरुत्थान हमारा पुनरुत्थान है। आत्मिक मृत्यु से¹²⁴ नए, अनन्त जीवन के लिए जिलाए गए। एक नई शुरुआत केवल क्रूस के द्वारा, मसीह के द्वारा संभव है।

यदि परमेश्वर पाप और बुराई को संसार से मिटा देना चाहता, तो उसे मनुष्यों को संसार से मिटा देना पड़ता। क्योंकि पाप हमारा कोई ऐसा अंग नहीं है, जिसे अलग करके शल्यक्रिया से निकाला जा सके। हम पूरी तरह, नख से शिख तक, पापी हैं। परन्तु परमेश्वर पापी की मृत्यु नहीं चाहता!¹²⁵ उसकी मृत्यु में हमारा पुराना, अधर्मी जीवन मर गया। उसकी मृत्यु में गाड़ा गया। हम नए जीवन के लिए जिलाए गए हैं।

क्रूस – एक मूर्खता

क्रूस पर लोगों के मार्ग अलग हो जाते हैं। कुछ लोगों के लिए वह मूर्खता है। संसार का एक उद्धारकर्ता, जो क्रूस पर यातना सहते हुए मरता है, न परमेश्वर का राज्य ला सकता है और न उद्धार। संसार का कोई धर्म अपने संस्थापक का इसलिए उत्सव नहीं मनाता कि वह अपमान के साथ जीवन से विदा हुआ।

परन्तु जो विश्वास करते हैं, उनके लिए वह सबसे बड़ी बात है: परमेश्वर का सामर्थ्य और ज्ञान। उनके लिए क्रूस का अर्थ है उद्धार, मेल-मिलाप, क्षमा, स्वतंत्रता।¹²⁶ केवल परमेश्वर ही मनुष्य में क्रूस की यह समझ उत्पन्न कर सकता है।

ठोकर खिलानेवाले क्रूस के बिना सुसमाचार कोई शुभ संदेश नहीं है। केवल क्रूस के साथ ही वह उद्धार के लिए परमेश्वर का सामर्थ्य है। बचाव के लिए। केवल क्रूस पर चढ़ाया गया ही परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरता है!¹²⁷ यह परमेश्वर का ज्ञान है कि एक मृत्यु के द्वारा, एक सार्वजनिक मृत्युदंड के द्वारा, महान उद्धार रचे:

- विजय और स्वतंत्रता, सत्ता का परिवर्तन¹²⁸

122. रोमियों 5:6-10

123. रोमियों 6:1-14; इफिसियों 2:1-10; कुलुस्सियों 2:11-14; 3:1-4

124. लूका 15:32

125. यहजकेल 18:23, 32

126. 1 कुरिन्थियों 1:18, 23-24

127. 1 कुरिन्थियों 1:30

128. प्रेरितों के काम 26:18; कुलुस्सियों 1:12-13; 2:15; इब्रानियों 2:14-15

- प्रायश्चित्त¹²⁹
- मेल-मिलाप¹³⁰
- क्षमा¹³¹
- अनन्त जीवन¹³²
- छुड़ौती¹³³
- छुटकारा¹³⁴
- चंगाई¹³⁵
- प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण¹³⁶
- आदर्श¹³⁷
- एकता¹³⁸

मसीहियों के लिए भी कभी-कभी परमेश्वर का ज्ञान बहुत ऊँचा होता है। निर्णायक यह नहीं है कि वे क्रूस के विषय में क्या समझते और क्या विश्वास करते हैं। कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे उस परमेश्वर पर भरोसा रखें, जो क्रूस के द्वारा संसार को उद्धार देता है। ज्ञान उद्धार नहीं देता, बल्कि यह विश्वास कि वहाँ किसी ने हमारे लिए सब कुछ ठीक कर दिया।

क्या आप उस परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, जो क्रूस में हमसे मिलता है?

घर वापसी

जो क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह पर भरोसा रखता है, वह बचाया जाता है। उसके लिए सब कुछ बदल जाता है। उसे खोए हुए बेटे और खोई हुई बेटी के रूप में स्वर्गीय पिता की बाँहों में ले लिया जाता है। वह परमेश्वर का एक बेटा और एक बेटी बन जाता है।¹³⁹ क्रूस के पीछे पिता की आशीषों का बड़ा धन प्रतीक्षा करता है।¹⁴⁰ वह अपने पुत्र के साथ हमें सब कुछ देगा।¹⁴¹ क्रूस के द्वारा यीशु हमें परमेश्वर के पास वापस ले जाता

129. रोमियों 3:24-26; 8:3, 32-34; गलातियों 3:13; इफिसियों 5:2; इब्रानियों 2:17; 1 यूहन्ना 2:2; 4:10

130. रोमियों 5:10; 2 कुरिन्थियों 5:18-20; कुलुस्सियों 1:20-22

131. प्रेरितों के काम 2:38; इफिसियों 1:7; इब्रानियों 10:18

132. यूहन्ना 3:14-16; 6:51-56

133. मत्ती 20:28; मरकुस 10:45; प्रेरितों के काम 20:28; 1 कुरिन्थियों 6:20; 1 तीमथियुस 2:5-6

134. इफिसियों 1:7; 5:25; तीतुस 2:14; इब्रानियों 9:12; 1 पतरस 1:18-19; प्रकाशितवाक्य 1:5-6; 5:9

135. यशायाह 53:5; 61:1; लूका 4:18-19, 23

136. यूहन्ना 3:14-16; 10:11; 15:13; गलातियों 2:20; 1 यूहन्ना 3:16; 4:10

137. इफिसियों 5:2; फिलिप्पियों 2:5-11; 3:10-11; 1 पतरस 2:21-24; 1 यूहन्ना 3:16

138. यूहन्ना 11:52; 12:24; इफिसियों 2:16

139. रोमियों 8:14, 19, 29; गलातियों 4:6

140. 2 कुरिन्थियों 8:9

141. रोमियों 8:32

है।¹⁴² वापस उसके पिता-हृदय के पास।¹⁴³ वापस उसकी संगति में।¹⁴⁴

उसने स्वेच्छा से हमारा स्थान ले लिया। सब परिणामों के साथ। क्योंकि हमारे पाप की मज़दूरी, उसका फल, मृत्यु है।¹⁴⁵ इस प्रकार धर्मी अधर्मियों के लिए मरा। हमारे प्रतिनिधि के रूप में।

क्या आप घर आ चुके हैं? क्या आप अब भी हिचकिचा रहे हैं? पिता हर दिन आपकी बाट जोहता है। वह आपकी प्रतीक्षा कर रहा है!

परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार

क्या आप अब भी यह सह पा रहे हैं कि बार-बार पढ़ें कि हम सब पापी हैं? क्या इस पर क्रोधित होना उचित नहीं? मेरी बात पर विश्वास कीजिए: बात हमें बुरा कहने की नहीं है। यह निदान बाइबल करती है। वह सत्य कहती है। और सत्य हमें स्वतंत्र करता है।

पापी होने को पहचानना और स्वीकार करना इसका अर्थ है: हमने सब कुछ पूरी तरह बिगाड़ दिया है। इसकी मरम्मत नहीं हो सकती। कोई रास्ता नहीं है। हमारी स्थिति गंभीर है। हम मृत्यु से बच नहीं पाएँगे। यदि गुलगुता का क्रूस और यीशु की भयानक मृत्यु हमें हमारी स्थिति से छुड़ाने के लिए आवश्यक थे, तो हम कुछ कल्पना कर सकते हैं कि हमारी स्थिति कितनी घातक होगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यह आप तभी समझेंगे, जब आप उद्धारकर्ता को जान लेंगे। जब आप सुरक्षित किनारे पर होंगे।

शायद आप उस घुड़सवार की कहानी जानते हैं, जो जमी हुई बोडेन झील (लेक कॉन्स्टेंस) को घोड़े पर पार कर गया था। बिना जाने।¹⁴⁶ झील के दूसरे किनारे पर पहुँचने पर उसे बताया गया कि वह कहाँ से आया है। भयभीत होकर वह गिर पड़ा। उसे जमी हुई झील पर मृत्यु के खतरे का अहसास हुआ। ठीक यही उस स्थिति से मेल खाता है, जब किसी मनुष्य के लिए स्वर्ग खुल जाता है और परमेश्वर का अनुग्रह हृदय में चमक उठता है। जब वह ये शब्द सुनता है: **अनुग्रह ही से उद्धार हुआ!**¹⁴⁷ मनुष्य पीछे मुड़कर देखता है और अपने आप से पूछता है: मैं कहाँ था? एक खाई के ऊपर! घातक खतरे में। सबसे मूर्खतापूर्ण काम, जो मैं कर सकता था। मैं विनाश के लिए ठहराया गया था और अब मैं सुरक्षित हूँ। आप पूछेंगे: क्या हम सचमुच इतने बड़े खतरे में जीते हैं? हाँ, हम मृत्यु की दहलीज़ पर जीते हैं, विनाश के लिए ठहराए हुए।

उद्धार है: हमारे छुड़ानेवाले की ओर देखिए! उस क्रूस पर! आपके पापों से लदा हुआ। हमारा खोया हुआ, गँवाया हुआ जीवन मसीह में क्रूस पर कीलों से जड़ दिया गया। ताकि हम उससे छुटकारा पाएँ। जो इस

142. इब्रानियों 10:19-22; 1 पतरस 3:18

143. लूका 15:11-24; इफिसियों 2:13, 18

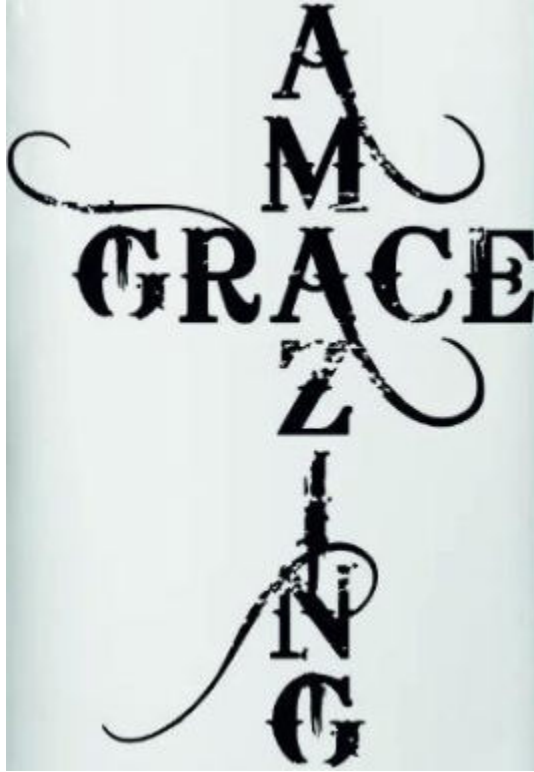
144. 1 यूहन्ना 1:3-4, 7

145. रोमियों 6:23

146. गुस्ताफ़ श्वाब (Gustav Schwab) की गाथा-कविता "Der Reiter und der Bodensee" (1826) के आधार पर।

147. इफिसियों 2:1-10

समाचार के बाद हिल नहीं जाता, उसने परमेश्वर के वचन को अभी नहीं समझा है। खोया हुआ नहीं, बल्कि बचाया हुआ ही समझ सकता है कि वह पापी है। पापी होने की पहचान उद्धार के आनंद में बदल जाती है, जब परमेश्वर का अनुग्रह अप्रत्याशित रूप से किसी मनुष्य के हृदय में प्रवेश करता है।



अपने विषय में सत्य और परमेश्वर का अनुग्रह हमें स्वतंत्र करते हैं!¹⁴⁸ शायद आप यह गीत जानते हैं और इसकी धुन से प्रेम करते हैं। परन्तु इसके शब्दों पर ध्यान दीजिए, जो हमारे विषय को ठीक-ठीक व्यक्त करते हैं:

Amazing Grace how sweet the sound! That saved a wretch like me! I
once was lost, but now am found; Was blind but now I see.

अद्भुत अनुग्रह, कितना मधुर है उसका स्वर, जिसने मुझ जैसे अधम को बचाया! मैं कभी खोया हुआ था, पर अब मिल गया हूँ, अंधा था, पर अब देखता हूँ।

148. यूहन्ना 8:32

यह इस गीत का पहला पद है। यह गीत एक भूतपूर्व दास-व्यापारी ने रचा था (जॉन न्यूटन (John Newton), 1779), जिसने मसीह को अपने छुड़ानेवाले के रूप में पा लिया था। या कहें, जिसे मसीह ने पा लिया था।

आरंभ से अंत तक अनुग्रह

यीशु ने अनुग्रह के वचन कहे।¹⁴⁹ ऐसे वचन नहीं, जो दोषी ठहराते और नष्ट करते थे। बल्कि ऐसे, जो उठाते थे, साहस देते थे, क्षमा प्रदान करते थे। इसलिए सुसमाचार अनुग्रह के शुभ संदेश के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।¹⁵⁰ अनुग्रह सनातन का हम मनुष्यों की ओर झुकना और उसकी कृपा है, यद्यपि हमने उसकी ओर पीठ फेर ली है। अनुग्रह, जिसे ज़बरदस्ती पाया नहीं जा सकता, बल्कि जो मुफ्त और खुशी से दिया जाता है।

अनुग्रह ने हमें बचाया। हम परमेश्वर को कुछ भी अर्पित नहीं कर सकते थे। क्योंकि हम किसी भरपाई के योग्य नहीं हैं। हम केवल यह समझ और स्वीकार कर सकते थे कि हम कौन हैं। और परमेश्वर कौन है। परमेश्वर की धार्मिकता को मानने का अर्थ है कि हम धर्मी नहीं हैं।

परमेश्वर धर्मी न्यायी है।¹⁵¹ हमारी आज की न्याय-व्यवस्था में न्यायाधीश क्रानून तोड़ने पर दोषी ठहराते हैं और क्रानूनों के आधार पर दंड और प्रतिबंध देते हैं। परन्तु अपराध सीधे न्यायाधीश के विरुद्ध नहीं होते। परमेश्वर के साथ बात भिन्न है: उसके विरुद्ध, अपने सृष्टिकर्ता के विरुद्ध – जो हमारा न्यायी भी है – हम दोषी हुए हैं।¹⁵² हमें किस बात की अपेक्षा करनी चाहिए?¹⁵³

परन्तु वही न्यायी है, जिसने दंड की आज्ञा को टालने के लिए सब कुछ किया।¹⁵⁴ अपने प्रेम और बचानेवाली धार्मिकता में वह यीशु में हमसे मिला है। उसके जीवन में और उसकी मृत्यु में। क्रूस पर उसका बलिदान, यीशु का लहू, हमारे पाप को सदा के लिए ढाँप देता है।¹⁵⁵ यह उन सब के लिए लागू होता है, जो सुसमाचार को अपने लिए स्वीकार करते हैं और विश्वास करते हैं।¹⁵⁶ कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया है।¹⁵⁷

149. लूका 4:22

150. प्रेरितों के काम 20:24

151. प्रेरितों के काम 10:42; 17:31; रोमियों 2:3, 16; 3:6; 14:10; 2 तीमुथियुस 4:1; इब्रानियों 10:30; 1 पतरस 1:17; 4:5; प्रकाशितवाक्य 11:18; 20:12

152. रोमियों 3:23

153. लूका 18:13

154. यूहन्ना 3:17

155. 1 यूहन्ना 1:7; प्रकाशितवाक्य 1:5-6; 5:9-10; इब्रानियों 9:12-15

156. रोमियों 1:16

157. रोमियों 5:8-10

यही परमेश्वर का अनुग्रह है।¹⁵⁸ जब एक उचित दंड की आज्ञा हमसे टाल दी जाती है। क्योंकि कोई दूसरा हमारे स्थान पर आ खड़ा होता है। वह हमारे पापों को और हमारे पापमय अस्तित्व को अपनी मृत्यु के भीतर उठा ले जाता है।¹⁵⁹

अनुग्रह यह भी है कि हमें ऐसा कुछ उपहार में मिले, जिसके हम योग्य नहीं हैं। एक ऐसा अनुग्रह, जो हमें बिना योग्यता के और भी बहुत, बहुत अधिक देता है।¹⁶⁰ यही वह परमेश्वर है,¹⁶¹ जिसका प्रचार अनुग्रह के सुसमाचार में होता है।¹⁶²

अनुग्रह का सुसमाचार सब धर्मों से भिन्न है। मसीही धर्म से भी। अनुग्रह हर धर्म का अंत है। वहाँ, जहाँ मनुष्य भलाई करने के लिए बाध्य है। उपलब्धि दिखाने के लिए बाध्य, ताकि उसके बदले उद्धार या अनन्त जीवन का पुरस्कार पाए। यीशु में यह उपलब्धि हमारे लिए पूरी कर दी गई है। यीशु में हमें सब कुछ उपहार में मिलता है। हम इसे अपने बल पर नहीं कर सकते। अनुग्रह मुफ्त है, वह स्वतंत्र है और कमाया नहीं जा सकता। कुछ लोगों के मार्ग में उनका अपना, अक्सर अनजाना घमंड आड़े आता है। अनुग्रह के इस बड़े वरदान को विश्वास से ग्रहण करना कठिन लगता है। हम उपलब्धि के सिद्धांत से भरे हुए हैं। यह एक सफलता, एक छुटकारा है, जब कोई मनुष्य अनुग्रह को ग्रहण करता है और अब अपने आप पर और अपनी उपलब्धि पर भरोसा नहीं रखता। और परमेश्वर और मनुष्यों के सामने इस बात का सहारा नहीं लेता कि उसने कौन-से अच्छे काम किए हैं।

सुसमाचार अचूक रूप से पहचाना जाता है। वह ठोकर खिलानेवाला है। सब धर्मों और उद्धार के सब प्रस्तावों के विपरीत। वह घोषणा करता है: सब पापी हैं। एक क्रूस पर चढ़ाया गया हमारा उद्धार है। छुटकारा केवल अनुग्रह के अनर्जित वरदान के रूप में मिलता है। मुफ्त। यही परमेश्वर का ज्ञान है।

अनुग्रह मनुष्य को केवल उसी क्षण नहीं मिलता, जब वह पहली बार परमेश्वर से उसके लिए विनती करता है। उसके बाद अनुग्रह उसके जीवन के हर घंटे में उसके पीछे-पीछे चलता है। अनुग्रह मसीही विश्वास की पहचान है। उसके बिना कुछ नहीं होता। अनुग्रह यीशु के पीछे चलने को हर ओर से भर देता और घेरे रहता है। अनुग्रह हमें सँभाले रहता है। किसी व्यवस्था या दासों से काम करानेवाले की माँगें नहीं। अनुग्रह माँगता नहीं, वह अपने आप को दे देता है। यीशु के पीछे चलना अनुग्रह से ही चलता है। ऐसे लोगों के रूप में, जिन्हें उपहार मिला है और जो लगातार पाते रहते हैं। अनुग्रह यीशु के पीछे चलने के आरंभ को और उसके अंतिम दिन को घेरे रहता है। उसके बिना विश्वासयोग्यता और पीछे चलना सोचा भी नहीं जा सकता।

158. यूहन्ना 1:14-17; रोमियों 5:9, 15; 2 कुरिन्थियों 8:9; इफिसियों 1:7; 2:5, 13; तीतुस 2:11

159. 1 थिस्सलुनीकियों 5:10; तीतुस 2:14; 1 यूहन्ना 2:2; 3:16; 4:10; 1 पतरस 2:24; 3:18

160. लूका 15:22; इफिसियों 2:7

161. 1 पतरस 5:10

162. मीका 7:18



परमेश्वर प्रेम है

किसके विषय में कहा जा सकता है कि उसका पूरा स्वभाव प्रेम है? मूलगामी, निःस्वार्थ और आत्म-बलिदानी प्रेम। क्या आप कभी ऐसे किसी से मिले हैं? मैं नहीं, यद्यपि मैं अच्छे और आदर्श लोगों को जानता हूँ।

परमेश्वर के विषय में यह कहा गया है। यीशु में हमारे पास इसका प्रमाण है कि यह पारलौकिक, संसार से परे और अनन्त प्रेम सचमुच है। और कि वह हमारे संसार में प्रकट हुआ है। क्या हम इसके योग्य थे कि ऐसे परमेश्वर को जानें?

अभी-अभी बात परमेश्वर के अनुग्रह की थी। वह अनुग्रहकारी है। परमेश्वर का एक गुण, जिसका अर्थ है हमारा उद्धार! परन्तु वह अनुग्रहकारी क्यों है? क्योंकि वह स्वयं साक्षात् प्रेम है।¹⁶³ अनुग्रह का सोता उसका प्रेम है, जो एक धारा की तरह हमारी ओर बहता है, और तभी रुकता है, जब वह सबसे गहरे बिंदु तक पहुँच जाता है।

वह सदा प्रेम रहा है। प्रेम करने के लिए प्रेम को किसी सामनेवाले की ज़रूरत होती है। पिता ने पुत्र से प्रेम किया,¹⁶⁴ इससे पहले कि ब्रह्मांड था। अनन्त, एक-दूसरे की ओर उन्मुख प्रेम में पिता, पुत्र और आत्मा थे,

163. 1 यूहन्ना 4:7-11

164. यूहन्ना 17:24

त्रिएक परमेश्वर। बिना आरंभ के। वह एकाकी या अकेला नहीं था। वह उससे अधिक और बड़ा है, जितना हम सोच सकते हैं। वैसा ही उसका प्रेम भी।

यदि हम यह मानकर चलें कि किसी मनुष्य के प्रेम की गहराई इस बात से मापी जा सकती है कि वह अपने प्रिय के लिए क्या कुछ बलिदान करने को तैयार है, तो सुसमाचार की कहानी में जो प्रेम प्रकट होता है, वह अतुलनीय है। यह एक ऐसे परमेश्वर की कहानी है, जो अथाह प्रेम के कारण चरम सीमा तक जाने को तैयार था। उन मनुष्यों को बचाने और फिर से बहाल करने के लिए, जिन्होंने अपने आप को परमेश्वर का शत्रु बना लिया था।

हमारे प्रति प्रेम के कारण पवित्र परमेश्वर चरम सीमा तक गया। पुत्र ने हमारा पाप उठाया।¹⁶⁵ उसने परमेश्वर से त्यागे जाने का वह अनुभव किया, जो पाप में छिपा है। इसीलिए यीशु ने क्रूस पर पुकारा: हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया?¹⁶⁶ परमेश्वर इससे आगे नहीं जा सकता। गुलगुता से अधिक वह नहीं दे सकता। इसलिए क्रूस परमेश्वर का सबसे बड़ा प्रकाशन है। कोई कहानी ऐसे किसी प्रेमी के विषय में नहीं बताती, जो इससे अधिक देता हो। और वह भी ऐसे मनुष्यों के लिए, जो इसके योग्य नहीं थे।¹⁶⁷

इस प्रेम को कैसे समझा या समझाया जा सकता है? हमारा समाज इस शब्द का अक्सर उपयोग करता है। बल्कि बेहिसाब। परन्तु उसका ठीक-ठीक अर्थ क्या है? ऐसा प्रेम, जो हर किसी को वैसा ही स्वीकार करता है, जैसा वह है। बिना शर्त। ऐसा प्रेम, जो न न्याय करता है, न दोषी ठहराता है। जो सब कुछ सह लेता है, जो सामंजस्य खोजता है। जिसकी कोई अपेक्षाएँ नहीं। जो रोमानी और भावुक है।

क्या यह वर्णन बाइबल की प्रेम की धारणा से मेल खाता है?

आइए, कल्पना करें कि ऐसा ही होता। परमेश्वर मनुष्यों के हर काम को सह लेता। न आलोचना करता, न न्याय करता। इसका अंत कहाँ होता, और ऐसा प्रेम वास्तव में कितना प्रेमपूर्ण है?

यदि कोई यह विश्वास करे कि परमेश्वर का प्रेम हमें वैसा ही स्वीकार करता है, जैसे हम हैं, तो वह भूल जाता है कि हम पापी हैं। वह भूल जाता है कि आज हम वैसे नहीं जीते, जैसा परमेश्वर चाहता है और जैसा हमारे लिए सबसे अच्छा होता। अपने आप को माता-पिता की भूमिका में रखकर देखिए। शायद आप माँ या पिता हैं। अपनी उस संतान की कल्पना कीजिए, जो बड़ी हो गई है। वह ऐसे काम करती है, जो अच्छे नहीं हैं। ऐसे काम, जो उसे स्वयं और दूसरों को हानि पहुँचाते हैं। इसके अलावा उसने आपसे संपर्क तोड़ लिया है। वह आपसे घृणा करती है और आप पर निराधार आरोप लगाती है।

165. 2 कुरिन्थियों 5:21

166. मरकुस 15:34

167. रोमियों 5:8

वह आपकी संतान बनी रहती है। आप उससे प्रेम करना नहीं छोड़ते। परन्तु आप उसके जीवन की बुराई को ठुकराते हैं। आप क्रोधित और दुःखी हैं कि बात ऐसी है, जैसी है। आप बुराई को कभी अच्छा नहीं कहेंगे। हमारे मानवीय अनुभव में भी प्रेम और अस्वीकृति ऐसी बातें हैं, जो किसी तरह एक-दूसरे से जुड़ी हैं। वह प्रेम ही है, जो बुराई को ठुकराता और दोषी ठहराता है।

क्या हम यह कह सकते हैं कि परमेश्वर को हमें वैसा ही स्वीकार करना होगा, जैसे हम हैं, ताकि हम वैसे ही बने रहें, जैसे हम हैं? क्या परमेश्वर सचमुच हमारी जीवन-शैली को स्वीकार करे, भले ही दूसरे उसके कारण दुःख उठाएँ या हानि सहें?

सीमित, और कई बातों में अस्वतंत्र मनुष्यों के रूप में हम एक ऐसे संसार की लालसा करते हैं, जिसमें शान्ति और न्याय सामान्य बात हों। हम क्या सोचते हैं, वह इसकी कितनी लालसा करता होगा, जिसने पृथ्वी और मनुष्यों को रचा? यदि परमेश्वर घृणा, अन्याय, हिंसा और उस दुर्दशा पर क्रोधित न हो, जो पाप उन मनुष्यों पर लाता है, जो उसके स्वरूप में रचे गए हैं, तो वह प्रेम करनेवाला परमेश्वर नहीं होता। केवल एक तटस्थ दर्शक। यदि परमेश्वर पाप को, मनुष्यों की बुराई को, दोषी न ठहराता और उसका न्याय न करता, तो वह उसे सह लेता, उसका बचाव करता और उसे उचित ठहराता। पाप की विनाशकारी शक्ति के प्रति उसकी प्रतिक्रिया सदा क्रोध और न्याय होगी।

परमेश्वर का प्रेम एक पवित्र प्रेम है। वह उससे भिन्न है, जो हम अक्सर उससे समझते हैं। वह ईश्वरीय, असीम, बिना शर्त है। वह शुद्ध है। कोई निष्क्रिय, रोमानी, भावुक प्रेम नहीं, बल्कि दृढ़ इच्छा से भरा, बचानेवाले का प्रेम।

परमेश्वर का प्रेम उसके क्रोध और उसके न्याय को नकारता नहीं। परमेश्वर का धन्यवाद हो। हमें कोई ऐसा प्यारा-सा परमेश्वर नहीं मिलता, जो हमें वैसे ही ले ले, जैसे हम हैं, क्योंकि उसे उसी से संतुष्ट रहना पड़ता है। बाइबल का परमेश्वर हमें बदलना, प्रेम से बाहर निकाल लाना, अपनी ओर खींचना चाहता है। वह पापी से उसके बदलने से पहले प्रेम करता है। वह उसके पाप के बीच में ही उससे प्रेम करता है।¹⁶⁸ परन्तु वह उसे बदलना, पवित्र करना, यीशु के समान बनाना चाहता है।

168. यूहन्ना 3:16; रोमियों 5:8; 2 कुरिन्थियों 5:14; इफिसियों 2:4-5; तीतुस 3:4-5; 1 यूहन्ना 4:7-10



अदृश्य संसार – अंधकार की शक्तियाँ

आइए, एक बार फिर क्रूस पर चढ़ाए जाने की घटना पर लौटें। उसमें अदृश्य, बुरी शक्तियों का भी निर्णायक हाथ था। यीशु अपने जीवनकाल में उनसे मिल चुका था। एक बलवान छुड़ानेवाले के रूप में!¹⁶⁹ दुष्टात्माओं को, अर्थात् अशुद्ध आत्माओं को, उसने निकाला और भगा दिया। इसके द्वारा उसने घोषणा की कि उनकी शक्ति का अंत आ रहा है। सुसमाचार का इन शक्तियों से ठोस संबंध है। उससे कहीं अधिक, जितना बहुत लोग सोचते हैं।

ये शक्तियाँ कौन हैं और वे यीशु की मृत्यु क्यों चाहती थीं? पृथ्वी और मनुष्यों की सृष्टि से पहले परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को रचा।¹⁷⁰ उन्हें कभी-कभी परमेश्वर के पुत्र कहा जाता है।¹⁷¹ यह उसका स्वर्गीय परिवार है। अलग-अलग पदक्रमों में अलग-अलग स्वर्गदूत, विभिन्न कार्यों के साथ। परमेश्वर ने उन्हें अपने लिए रचा, ताकि उनके साथ ब्रह्मांड पर शासन करे। वे उसके सेवक हैं।¹⁷²

हम मनुष्यों की तरह उन्हें भी यह स्वतंत्रता थी कि वे अपने सृष्टिकर्ता के प्रति विश्वासयोग्य रहें। स्वर्गदूतों के एक भाग ने कुछ और चुना। परमेश्वर के बिना एक अस्तित्व।¹⁷³ उनका अगुवा इब्लीस, शैतान था।¹⁷⁴ जब अदृश्य संसार में यह क्रांति हुई, तब परमेश्वर ने उन्हें नष्ट नहीं किया। तब से ये स्वर्गदूत और परमेश्वर के पुत्र शैतान की अगुवाई में हर उस बात के विरुद्ध काम करते हैं, जो परमेश्वर करता है।¹⁷⁵ उनके सामने वे स्वर्गदूत खड़े हैं, जो विश्वासयोग्य बने रहे।¹⁷⁶

169. मरकुस 3:27

170. अय्यूब 38:4-7; भजन संहिता 148:2, 5; कुलुस्सियों 1:16

171. अय्यूब 1:6; 38:7; भजन संहिता 82

172. भजन संहिता 104:4; दानियेल 6:22; मत्ती 1:20, 24; 16:27; लूका 2:13; प्रेरितों के काम 8:26; 10:7; 12:8; इब्रानियों 1:7; 13:2

173. 2 पतरस 2:4; यहूदा 6

174. मत्ती 25:41; इफिसियों 2:2; 1 यूहन्ना 3:8; प्रकाशितवाक्य 12:7-9

175. रोमियों 8:38; 2 कुरिन्थियों 11:14; 12:7; इफिसियों 6:10-17; प्रकाशितवाक्य 12:13; प्रकाशितवाक्य 13

176. 1 तीमूथियुस 5:21; प्रकाशितवाक्य 5:11; 7:11; 12:7

शक्तियाँ और मनुष्य

मनुष्य की सृष्टि के बाद बहकानेवाला और मनुष्यों का हत्यास¹⁷⁷ तुरंत मैदान में आ जाता है।¹⁷⁸ शैतान, वह पुराना सर्प,¹⁷⁹ पहले मनुष्यों को इस बात के लिए बहकाता है कि वे परमेश्वर पर भरोसा न रखें और उसकी भलाई पर संदेह करें।

शैतान उन मनुष्यों से ईर्ष्या करता था, जो परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे। वह केवल नष्ट करना चाहता था। रोकना चाहता था कि परमेश्वर का पृथ्वी पर मनुष्यों का एक परिवार हो। वह मनुष्यों को अपने लिए चाहता था। एक भले पिता के रूप में नहीं, बल्कि एक दास-स्वामी और अत्याचारी के रूप में। यह लूट उसकी सफल रही। स्वर्ग-सी वाटिका की घटना के बाद से मनुष्य अब परमेश्वर के निकट नहीं है।¹⁸⁰

मानव-इतिहास के विकास में इन अदृश्य शक्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। यह सब जातियों की अनगिनत मूर्तिपूजाओं में साफ़ दिखाई देता है, कुछ तो आज तक।¹⁸¹ नया नियम स्पष्ट करता है कि परमेश्वर के बिना और उससे अलग मनुष्य आत्मिक बंधुआई में और इब्लीस के बंधन में हैं।¹⁸² बाहर से यह दिखाई नहीं देता। मनुष्य स्वयं इसे नहीं पहचानते। वे अपने आप को स्वतंत्र अनुभव करते हैं। यदि उन्हें उस अदृश्य संसार में एक झलक देखने का अवसर मिलता, जो हमें घेरे हुए है और हमारे बीच है, तो उनकी आँखें खुल जातीं। परमेश्वर के विषय में, अपने विषय में और सुसमाचार के विषय में उनकी सोच अंधकारमय है।¹⁸³ संसार वास्तव में अब भी शैतान का राज्य है।¹⁸⁴ यीशु उसे इस संसार का सरदार कहता है।¹⁸⁵ पौलुस तो उसे इस संसार का ईश्वर भी कहता है।¹⁸⁶ उसके पास बड़ी शक्ति है और संसार की घटनाओं पर उसका विनाशकारी प्रभाव है। संसार की दशा को किसी और तरह मुश्किल से ही समझाया जा सकता है। यह तथ्य कि मनुष्य स्वयं बुरा है, बात को और भी बुरा और निराशाजनक बना देता है।¹⁸⁷

क्या आपने सोचा था कि अदृश्य संसार इतना वास्तविक है? और उसका हमसे इतना संबंध है?

सुसमाचार और शक्तियाँ

जब यीशु आया, तो परमेश्वर का राज्य संसार में, बुरी शक्तियों के अधिकार-क्षेत्र में, टूट पड़ा। यह इब्लीस और उसके दूतों के अंत का आरंभ था। परमेश्वर की महायोजना कार्य में आ गई। जब यीशु गलील में घूम

177. यूहन्ना 8:44; 1 यूहन्ना 3:8, 12

178. उत्पत्ति 3:1-7; 2 कुरिन्थियों 11:3-4

179. प्रकाशितवाक्य 12:9

180. उत्पत्ति 3:23-24

181. 1 कुरिन्थियों 10:20-22

182. प्रेरितों के काम 26:18; इफिसियों 2:1-3; कुलुस्सियों 1:13

183. 2 कुरिन्थियों 4:3-5

184. मत्ती 4:8-10

185. यूहन्ना 12:31; 14:30; 16:11

186. 2 कुरिन्थियों 4:4

187. मरकुस 7:20-23

रहा था, तब दुष्टात्माएँ जानती थीं कि उनका पाला किससे पड़ा है।¹⁸⁸ मनुष्यों से भिन्न। वे उसे अदृश्य संसार से जानती थीं। वह उनका सृष्टिकर्ता था।

यीशु के बपतिस्मे के तुरंत बाद शैतान जंगल में उसकी परीक्षा करने के लिए उसके सामने आया। उसने उसे संसार के राज्य देने का प्रस्ताव रखा, यदि यीशु उसकी आराधना करे। शैतान अपनी आदर, अपनी आराधना खोजता है। यही उसका स्वभाव है।¹⁸⁹ परन्तु यीशु उसका सामना करता है। अदन में आदम के विपरीत।¹⁹⁰

यीशु ने अपने चेलों को भी अधिकार दिया कि दुष्टात्माओं पर उनका अधिकार हो और वे उन्हें निकालें।
191

नहीं, ये कोई डरावनी कहानियाँ नहीं, केवल मानसिक घटनाएँ नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के जीवन की वास्तविकता हैं। वहाँ ऐसी शक्तियाँ प्रकट होती हैं। और भी अधिक वहाँ, जहाँ लोग सक्रिय रूप से अपने आप को उनके लिए खोलते और उनके हाथ सौंप देते हैं।

शक्तियाँ और परमेश्वर की उद्धार-योजना

परमेश्वर की उद्धार-योजना इब्लीस को और मनुष्यों को भी मालूम नहीं थी। पुराने नियम की बहुत सी भविष्यद्वाणियों के बावजूद उसे पहचानना कठिन था।¹⁹² चले भी उसे नहीं समझे। परमेश्वर के पुत्र का मनुष्य के रूप में, बिना शक्ति, बिना सिंहासन के प्रकट होना, शक्तियों को उलझन में डाल गया। इस स्थिति में उनके पास एकमात्र उपाय यह था कि मनुष्यों को इस प्रकार प्रभावित करें कि वे यीशु को मार डालें।¹⁹³ क्योंकि मनुष्य के रूप में वह घायल हो सकता था और मर सकता था। इसलिए उनका केवल एक लक्ष्य था: उसकी मृत्यु। उन्होंने उसे पा लिया! परन्तु वे धोखा खा गईं। क्योंकि उसकी मृत्यु उसकी विजय थी।¹⁹⁴ उसकी मृत्यु हम मनुष्यों के लिए सत्ता का एक ब्रह्मांडीय परिवर्तन थी।

उसकी मृत्यु वह छुड़ाती है, जो मनुष्यों को अंधकार की शक्ति से छुड़ाती है। उसकी मृत्यु ने मनुष्यों को अनुग्रह और क्षमा दी। स्वतंत्रता। उस समय का दास-बाज़ार इसका चित्र है। छुटकारे का अर्थ था दासता से मोल लिया जाना और स्वतंत्रता में छोड़ दिया जाना। उसका जिलाया जाना और परमेश्वर के सिंहासन पर ऊँचा किया जाना पाप, मृत्यु और इब्लीस की दासता से स्वतंत्रता का द्वार हैं।

188. मरकुस 1:23-24; 3:11; 5:7

189. मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13

190. रोमियों 5:12-21

191. मरकुस 6:7

192. 1 कुरिन्थियों 2:6-9

193. लूका 22:53

194. इब्रानियों 2:14

हमें अपने पापों की क्षमा और पाप की शक्ति से छुटकारे की ज़रूरत थी। दोनों हमें कूस के द्वारा उपहार में मिलते हैं।

इब्लीस अनुग्रह नहीं जानता। वह स्वयं परमेश्वर का अनुग्रह अनुभव नहीं करता,¹⁹⁵ और मनुष्यों के प्रति वह कोई दया नहीं जानता। अनुग्रह उसके स्वभाव के लिए पराया है। परमेश्वर के विरुद्ध उसके विद्रोह ने उसे पूरी तरह कड़वा बना दिया है।

अब परमेश्वर के सिंहासन पर एक मनुष्य बैठा है। हम मनुष्यों के लिए। और हम उसके साथ एक किए गए हैं।¹⁹⁶ हम मसीह में हैं!¹⁹⁷ शक्तियाँ हार चुकी हैं। उनका समय पूरा हो चुका है। उनके दिन गिने हुए हैं। परन्तु वे अब भी विरोध करती हैं और सुसमाचार को रोकने के लिए एक हारी हुई लड़ाई लड़ रही हैं। प्रतिदिन ये शक्तियाँ देखती हैं कि मनुष्य कैसे स्वतंत्र किए जाते हैं। हर एक, जो सुसमाचार पर विश्वास करता है, उन्हें स्मरण दिलाता है कि परमेश्वर की उद्धार-योजना अपने लक्ष्य तक पहुँचती है। परमेश्वर का पृथ्वी की सब जातियों में से अपना परिवार होगा। यीशु के द्वारा, जिसकी मृत्यु में उनका निर्णायक हाथ था। गुलगुता पर, जहाँ यीशु मरा, उन्होंने मानो बिना जाने अपनी ही क्रब्र खोद ली।

वह ऋण-पत्र, वह अभियोग-पत्र, जिसका सहारा परमेश्वर और मनुष्यों की शत्रु शक्तियाँ लेती हैं, कूस पर कीलों से जड़ दिया गया और मिटा दिया गया।¹⁹⁸ कूस के द्वारा उसने शक्तियों को निःशस्त्र कर दिया और वहाँ उनका सार्वजनिक तमाशा बनाया। मसीह, जी उठा प्रभु, अब ब्रह्मांड का प्रभु है।¹⁹⁹ शुभ समाचार यह है: वह सब पर और सब कुछ पर प्रभु है। जो मसीह पर विश्वास करता है, वह स्वतंत्र किया गया है।²⁰⁰ वह घर लौटकर परमेश्वर के राज्य में आता है।

सुसमाचार परमेश्वर का यह शुभ समाचार है कि वह अपने लोगों को वापस लाता है और अपना परिवार चाहता है। मृत्यु से और बुरी शक्तियों से स्वतंत्र किया हुआ। यह आनंद का संदेश है कि कूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा यीशु ने यह सब संभव कर दिया। यीशु इब्लीस के कामों को नष्ट करने आया।²⁰¹ उसके साथ प्रेम का परमेश्वर-शासन आया। हमें बचाकर उसके प्रेम के राज्य में पहुँचा दिया जाता है।²⁰²

कूस की विजय

रोमी सेनापति धूमधाम से विजय-जुलूस निकालकर रोम में प्रवेश करते थे। पराजित अगुवों को जंजीरों में बाँधकर साथ ले जाया जाता था। उनके मृत्युदंड से पहले उनका सार्वजनिक प्रदर्शन किया जाता था। इसी

195. इब्रानियों 2:16

196. इफिसियों 2:6

197. रोमियों 8:1; 1 कुरिन्थियों 1:30

198. कुलुस्सियों 2:14-15

199. मत्ती 28:18

200. यूहन्ना 8:33-36; रोमियों 6:7, 18, 22

201. 1 यूहन्ना 3:8

202. कुलुस्सियों 1:13-14

प्रकार पौलुस इस संसार के सरदार के शासन-क्षेत्र की प्रधानताओं और अधिकारों पर क्रूस की अजेय शक्ति का वर्णन करता है।²⁰³ निःशस्त्र और सबके सामने लज्जित। उनका प्रभाव जाता रहा।

क्रूस पर चढ़ाया गया अदृश्य मध्य-लोक की जादुई शक्तियों से स्वतंत्र करता है। शैतान का न्याय हो चुका है। उसकी शक्ति टूट चुकी है। यीशु के लोगों पर अब उसका कोई अधिकार नहीं।

परमेश्वर की उद्धार-योजना शतरंज के एक लंबे खेल के समान है। परिणाम अनिश्चित रहता है, जब तक कि कोई खिलाड़ी ऐसी चाल नहीं चलता, जिसके बारे में जानकारी जानता है कि अब खेल का फ़ैसला हो गया है। भले ही खेल अभी आगे चलता रहे। प्रकाश और अंधकार के बीच का संघर्ष ऐसा ही है। राजा के साथ निर्णायक चाल चली जा चुकी है। गुलगुता के क्रूस पर काँटों का मुकुट पहने राजा के साथ। विजय पूरी हो चुकी है।

विरोधी की गतिविधियाँ अब केवल पीछे हटते हुए की लड़ाई हैं। उसके पास थोड़ा ही समय बचा है। उसका अंत तय हो चुका है।

क्रूस का संकट क्रूस की विजय बन जाता है!

स्वतंत्रता संभव है

इसलिए निश्चित रहिए: यदि आप यीशु के हैं, तो दुष्टात्माओं को भागना ही पड़ेगा! यदि आप जादू-टोने और गुप्त-विद्या (ऑकाल्टिज़्म) में, आत्माओं और स्वर्गदूतों के चक्कर में पड़े हैं, तो स्वतंत्रता है। और क्षमा।

ये शक्तियाँ आपको छोड़ना नहीं चाहतीं और छूटने के हर प्रयास को आरंभ में ही कुचल देना चाहती हैं। यीशु मसीह से प्रार्थना कीजिए – उसका नाम पुकारिए! ऐसे मसीहियों को खोजिए, जो आपके लिए प्रार्थना करें और आपकी सहायता करें।

ऊँचे स्वर में हर उस बात से नाता तोड़ दीजिए, जो आपको इस गुप्त-विद्या के संसार से जोड़ती है।

हर उस चीज़ से छुटकारा पाइए, जो आपको इन जादुई, गुप्त-विद्या की बातों से जोड़ती है। उन सब लोगों से हर संपर्क तोड़ दीजिए, जिन्होंने आपको ऐसी प्रथाओं और संबंधों में प्रवेश कराया।

अदृश्य संसार एक शक्तिशाली वास्तविकता है, जिसे कम नहीं आँकना चाहिए। परन्तु यीशु अधिक बलवान है।

203. कुलुस्सियों 2:15

शान्ति का सुसमाचार

पतरस ने अनुभव किया था कि कैसे उसके गुरु ने शान्ति का प्रचार किया।²⁰⁴ यीशु यहूदियों के लिए और अन्यजातियों, अर्थात् गैर-यहूदियों के लिए शान्ति लाया। और इन दोनों के बीच भी। शान्ति सुसमाचार का एक केंद्रीय और आवश्यक पहलू है।²⁰⁵ यही परमेश्वर का शालोम है। इब्रानी बाइबल में यही शब्द है। परमेश्वर का हृदय बड़ा और विशाल है। इसी हृदय से शान्ति आती है। उसका अर्थ है पूरा होना, स्वस्थ होना, सकुशल होना, बचाया हुआ होना। सुसमाचार मनुष्यों को परमेश्वर के साथ शान्ति में ले आता है।²⁰⁶ इसका अर्थ है परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप और हर शत्रुता का अंत।²⁰⁷

सुसमाचार इस निश्चय तक ले जाता है कि परमेश्वर ने हमें अपनी संतान के रूप में ग्रहण कर लिया है। यह निश्चय परमेश्वर में लंगर डाले हुए है। उसमें, जो वह है और जो उसने किया है। इसी आधार पर हृदय में एक सच्ची, स्थायी शान्ति फैलती है। बेचैनी के बदले विश्राम। अशान्ति और भय के बदले शान्ति।

युद्धों और झगड़ों से भरे हमारे संसार को, बड़े स्तर पर भी और छोटे स्तर पर भी, शान्ति की ज़रूरत है।²⁰⁸ केवल युद्ध का न होना नहीं, केवल युद्ध-विराम नहीं, बल्कि ऐसी शान्ति, जो मनुष्यों को पास लाती और एक करती है।²⁰⁹ सुसमाचार मनुष्यों के बीच शान्ति स्थापित करता है। वह मनुष्यों की एक नई संगति बनाता है, जिसमें शान्ति राज्य करती है।²¹⁰ क्या क्रूस का प्रचार, जहाँ परमेश्वर ने एक ही बार सदा के लिए मनुष्य की हिंसा को अपने भीतर सोख लिया, संसार की शान्ति की कुंजी हो सकता है? और सबसे पहले स्वयं कलीसिया में?

यदि लोग जानना चाहते हैं कि शान्ति क्या है, तो उन्हें यह उन लोगों के पास जाकर सीखना चाहिए, जिन्होंने सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की शान्ति पाई है। और उसे बिखेरते हैं। आगे बाँटते हैं। मेल करानेवाले हैं। जहाँ तक उनके लिए संभव है,²¹¹ वे हर मनुष्य के साथ शान्ति से रहते हैं।

यीशु के द्वारा सब वस्तुओं का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हुआ और उन्हें उसके साथ फिर से सही संबंध में लाया गया। उसके लहू की कीमत के द्वारा। गुलगुता पर उसकी मृत्यु के द्वारा। क्रूस आवश्यक था, ताकि परमेश्वर के साथ शान्ति और परमेश्वर की शान्ति वास्तविकता बने।²¹²

आपने इस शान्ति को कैसे अनुभव किया है? इसने आपके भीतर, आपके संबंधों में क्या बदला है?

204. प्रेरितों के काम 10:36

205. कुलुस्सियों 1:20; इफिसियों 2:17; 6:15

206. रोमियों 5:1

207. रोमियों 5:10; 2 कुरिन्थियों 5:18

208. तीतुस 3:3

209. मत्ती 5:44; 1 यूहन्ना 4:19

210. इफिसियों 2:14-22

211. रोमियों 12:18

212. कुलुस्सियों 1:20

सुसमाचार – पूरी हुई प्रतिज्ञा

सुसमाचार उस मानव-इतिहास पर, जो बेक्राबू हो गया, परमेश्वर की कोई घबराई हुई या निराश प्रतिक्रिया नहीं है। वह परमेश्वर के हृदय से आता है और सनातन समय से पहले उसकी प्रतिज्ञा की गई थी।²¹³ इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उसकी जड़ें पहले से ही इब्रानी बाइबल में, अर्थात् बाइबल के पहले भाग, पुराने नियम में, गहराई तक फैली हैं। वहाँ उसकी प्रतिज्ञा की गई है।²¹⁴ वहाँ वर्णन है कि परमेश्वर का उद्धार का इतिहास उस बिंदु की ओर बढ़ता है, जिसे वह समय का पूरा होना कहता है। वह समय, जब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।²¹⁵ इस्राएल में उसके समकालीन अधिकांश लोगों ने यीशु को प्रतिज्ञा की पूर्ति के रूप में नहीं पहचाना।²¹⁶ परन्तु बारह चेलों ने, प्रेरितों ने, इसे जल्दी पहचान लिया। फिर भी केवल यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद। प्रेरितों के काम में और उनकी पत्रियों में उनका सुसमाचार-प्रचार पुराने नियम के उद्धरणों से भरा है।²¹⁷ बहुत से उदाहरण हैं। यीशु ने स्वयं कहा कि पवित्रशास्त्र, पुराना नियम, उसके विषय में बोलता है।²¹⁸ यहाँ पुराने नियम से तीन छोटे उदाहरण और कुछ बाइबल-संदर्भ।²¹⁹

बाइबल के पहले ही पन्नों पर, जब मनुष्यों ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया, एक प्रतिज्ञा मिलती है, जिसे आदि-सुसमाचार कहा जाता है: और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा: वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।²²⁰ जो उस समय मुश्किल से पहचाना जा सकता था, वह यीशु के, उसके जीवन और उसकी मृत्यु के प्रकाश में स्पष्ट हो जाता है। यीशु ने मरकर इब्लीस को हरा दिया।²²¹

मानव-इतिहास की समय-रेखा पर बहुत वर्ष आगे अब्राहम अपनी पत्नी सारा के साथ प्रकट होता है। इस बूढ़े, निःसंतान दंपति को एक बेटे की प्रतिज्ञा मिलती है। केवल इसलिए नहीं कि ये दोनों प्रसन्न हों। नहीं, इस बेटे, इसहाक, में पृथ्वी की सारी जातियाँ आशीष पाएँगी।²²² यह एक प्रतिज्ञा है, जो यीशु में पूरी होती है।²²³

213. रोमियों 16:25-27; 2 तीमथियुस 1:9; तीतुस 1:2

214. रोमियों 1:1-3; गलातियों 3:14-16

215. गलातियों 4:4

216. प्रेरितों के काम 13:27, 32

217. प्रेरितों के काम 2:25-31; रोमियों 1:17; 3:21-26; 4:17; 10:8-13; 15:9-13; 1 कुरिन्थियों 2:9; 2 कुरिन्थियों 6:2; गलातियों 3:16; 1 पतरस 1:19; 2:6-9

218. यूहन्ना 5:39; 7:42

219. भजन संहिता 16:8-10; 22; 31:13; 35:11; 69:4; यशायाह 9:2-7; 11:1; 35:4-6; 50:6; 53; मीका 5:2; जकर्याह 11:12; दानियेल 9:25-26

220. उत्पत्ति 3:15

221. इब्रानियों 2:14; रोमियों 16:20; प्रकाशितवाक्य 12:9-11; 20:10

222. उत्पत्ति 12:3; 22:18; 28:14

223. गलातियों 3:16

सदियों बाद दाऊद इस्राएल का राजा बनता है। परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष। यद्यपि उसने परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन किया, फिर भी वह सदा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहा और उसने कभी किसी मूर्ति की उपासना नहीं की। परमेश्वर उससे एक पुत्र का वादा करता है, जिसका सिंहासन सदा का होगा।²²⁴ वह केवल सुलैमान नहीं था। यह पूरी तरह यीशु में, दाऊद के पुत्र में, पूरा हुआ। उसमें सदियों पुरानी एक भविष्यद्वाणी पूरी होती है। एक राजा, दाऊद के राजवंश का एक सीधा वंशज, इस्राएल का मसीह-राजा होगा। सदा के लिए। और ठीक ऐसा ही हुआ।²²⁵ वह अब परमेश्वर के सिंहासन पर है और शीघ्र ही सबको दिखाई देते हुए संसार पर शासन करेगा।

कोई भी अपने विषय में यह नहीं कह सकता कि उसके बारे में इतनी भविष्यद्वाणियाँ हैं। बहुत सी पूर्वघोषणाएँ हैं। उनमें से बहुत सी ठीक-ठीक पूरी हो चुकी हैं। सारा पुराना नियम यीशु की ओर संकेत करता है। पुराना नियम परमेश्वर के पुत्र के सुसमाचार का सबसे महत्वपूर्ण गवाह है।



सुसमाचार की आशा

यदि क्रूस पर चढ़ाया गया एक जन जी उठ सकता है, तो हम सबके लिए आशा है! यह एक निश्चित आशा है, क्योंकि क्रूस पर चढ़ाया गया एक जन हमारे लिए मृतकों में से जी उठा है: परमेश्वर का पुत्र। उसने हमें आशा लौटा दी है!

224. 2 शमूएल 7:12-16

225. लूका 3:23-31; उत्पत्ति 49:10; यिर्मयाह 23:5-6; भजन संहिता 132:11; रोमियों 1:3; 2 तीमुथियुस 2:8; प्रकाशितवाक्य 5:5

हम सबकी आशाएँ और सपने हैं। एक क्षण रुकिए। क्या आपके लिए कोई ऐसा भविष्य है, जिसकी आप कामना करते हैं, किसी ऐसी बात का दर्शन, जो आपके वर्तमान अनुभव से बेहतर है? एक आशा, जिसके विषय में आप चाहते हैं कि वह एक दिन वास्तविकता बने?

सुसमाचार एक नया क्षितिज खोल देता है। हम जीवित रहेंगे! सदा के लिए। मृत्यु का अंतिम शब्द नहीं है। सुसमाचार आशा फैलाता है।²²⁶ इसलिए मैं इसे प्रसन्नता से नई सृष्टि का सुसमाचार कहता हूँ। वह प्रतिज्ञा करता है कि जैसा है, वैसा नहीं रहेगा।²²⁷ परमेश्वर पूरी सृष्टि के विषय में गंभीर है।²²⁸ बात केवल मनुष्यों की नहीं, बल्कि पूरे ग्रह की है। परमेश्वर का राज्य एक ओर उन मनुष्यों से बना है, जो राजा की सेवा करते हैं। परन्तु एक स्थान भी है, जहाँ यह राज्य स्थित है। वह स्थान हमारी पृथ्वी है।²²⁹ इसी पृथ्वी पर, ब्रह्मांड में धूल के एक नन्हे कण पर, परमेश्वर यीशु में आया।

परमेश्वर ने उसे रचा था। यह उसके हृदय की परियोजना है: सब कुछ बहुत अच्छा था।²³⁰ इसलिए परमेश्वर भविष्य के लिए कोई बिल्कुल अलग या नई बात नहीं सोचता। नहीं, वह पृथ्वी को वैसा ही बहाल करेगा, जैसी उसे होना चाहिए। दूसरे शब्दों में: वह उसे नया बनाएगा।²³¹ उस पर एक दिन न मृत्यु रहेगी, न बीमारी और न भूख।²³² जो कुछ मनुष्य नष्ट करता है, और बेलगाम प्रकृति भी, जो मनुष्य को हानि पहुँचाती है, वह सब फिर नहीं रहेगा।²³³

आशाहीन, टूटे हुए संसार में,²³⁴ आशा का सुसमाचार ही है,²³⁵ जो एक अनन्त और अटल राज्य की²³⁶ प्रतिज्ञा करता है। एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी हमारा नया घर बनेंगे।

आशा जी उठे प्रभु में दृढ़ता से लंगर डाले हुए है। उसमें, जो मर गया था और युगानुयुग जीवित है।²³⁷ उसने मृत्यु की शक्ति को तोड़ दिया है।²³⁸ उसके द्वारा सच्चा जीवन और अमरता प्रकाश में आए हैं।²³⁹ मसीह में हमने उसके पुनरुत्थान के जीवन को अपने जीवन के रूप में पाया है, जो फिर कभी नहीं मरता। और जिसका पाप से अब कोई संबंध नहीं।²⁴⁰ यही सच्चा जीवन और नई सृष्टि का अक्षय्य सामर्थ्य है। यह यीशु के पीछे चलनेवालों के जीवन में आरंभ हो चुका है।²⁴¹ वे नए जीवन के लिए और एक जीवित आशा

226. 1 पतरस 1:3-4

227. रोमियों 8:18-24

228. यूहन्ना 3:16

229. प्रकाशितवाक्य 5:9-10

230. उत्पत्ति 1:31

231. यशायाह 65:17-19; 66:22

232. प्रकाशितवाक्य 7:9-17; 21:1, 4-5

233. प्रकाशितवाक्य 7:16; 22:3

234. इफिसियों 2:12; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13

235. इफिसियों 1:18; कुलुस्सियों 1:5, 23

236. 2 पतरस 1:11; इब्रानियों 12:27-28; दानियेल 2:44; 7:14, 27

237. प्रकाशितवाक्य 1:17-18; यूहन्ना 14:19

238. इब्रानियों 2:14-15

239. 2 तीमोथियुस 1:10

240. रोमियों 6:9-10

के लिए नए सिरे से जन्मे हैं।²⁴² वे मसीह में अभी से एक नई सृष्टि हैं। एक दिन वे नई सृष्टि में जीवित रहेंगे।²⁴³ उनकी देह बदली हुई, अमर और महिमामय होगी।²⁴⁴ परन्तु वे फिर भी वही अचूक, परमेश्वर द्वारा चाहा गया व्यक्तित्व होंगे, जो वे अपने नश्वर जीवन में थे।

सुसमाचार एक ऐसे समय की बात करता है, जिसे परमेश्वर ने ठहराया है।²⁴⁵ तब यीशु फिर आएगा, सब मनुष्यों को दिखाई देते हुए।²⁴⁶ बड़ी महिमा और सामर्थ्य के साथ।²⁴⁷ वह उन सब के लिए आनंद का दिन होगा, जो उसकी प्रतीक्षा करते हैं। क्योंकि तब अनन्त परमेश्वर-शासन आरंभ होगा। तब वह समय आरंभ होगा, जो फिर कभी समाप्त नहीं होगा। जब परमेश्वर स्वयं मनुष्यों के बीच वास करेगा।²⁴⁸ वे परमेश्वर को देखेंगे। और अकल्पनीय आनंद का अनुभव करेंगे।²⁴⁹ ठीक वही, जो प्रेम का अनन्त परमेश्वर, त्रिएक परमेश्वर, सदा से चाहता था। तब यह उससे भी अच्छा होगा, जैसा कभी था। स्वर्ग, स्वयं परमेश्वर, पृथ्वी पर आएगा, ताकि दिखाई देते हुए अपने लोगों के बीच, अपने परिवार के बीच वास करे। सदा के लिए। हम परमेश्वर का स्वरूप होंगे, क्योंकि हम यीशु के समान होंगे!²⁵⁰

तब पृथ्वी एक ही, विशाल, बल्कि वैश्विक स्वर्ग होगी। एक नया और बेहतर अदन।²⁵¹ वहाँ परीक्षा करनेवाला फिर कभी नहीं आएगा। पाप की परीक्षा फिर कभी नहीं होगी।

वह उबाऊ भी नहीं होगा, बल्कि रोमांचक। एक बड़ा साहसिक अभियान हमारी प्रतीक्षा कर रहा है, क्योंकि हम वे मनुष्य होंगे और हो सकेंगे, जो हमें सदा से होना था।

परमेश्वर के नए संसार का सपना

आइए, कुछ क्षण परमेश्वर के इस नए संसार का सपना देखें। यद्यपि हम उसके विषय में अधिक नहीं जानते, फिर भी हर बुरी, नकारात्मक, विनाशकारी बात वहाँ नहीं होगी। साथ ही बहुत कुछ ऐसा होगा, जिसे हम वर्तमान पृथ्वी पर पहले से जानते थे, जैसी परमेश्वर ने उसे रचा।

एक ऐसा संसार, जिसमें न दरिद्रता है, न भूख, न जीवित रहने का संघर्ष, न भविष्य का भय।

241. 2 कुरिन्थियों 5:17

242. 1 पतरस 1:3

243. 2 पतरस 3:13

244. 1 कुरिन्थियों 15:35-58; फिलिप्पियों 3:20-21

245. प्रेरितों के काम 17:30-31

246. प्रकाशितवाक्य 1:7

247. मरकुस 8:38; 13:26

248. प्रकाशितवाक्य 21:3

249. प्रकाशितवाक्य 22:4

250. 1 कुरिन्थियों 15:49-50; फिलिप्पियों 3:20-21; 1 यूहन्ना 3:2

251. प्रकाशितवाक्य 2:7; 22:1-5

न दासता, न उत्पीड़न, न हिंसा, न छल-कपट से वश में करना, न भेदभाव, न अपमान, न अपराध, न युद्ध।

न बीमारी, न मृत्यु, और इसलिए न शोक, न आँसू – यदि आँसू तो आनंद के आँसू।

न पर्यावरण का प्रदूषण, न आपदाएँ। न पुलिस, न वकील और न्यायालय, न अस्पताल, न मनोचिकित्सक और मनोवैज्ञानिक।

न ऊब, न अर्थ की व्यर्थ खोज, न हीनता की भावना, न लज्जा, न ख़ालीपन, न विनाशकारी निर्भरताएँ और लतें, न निराशाएँ!

इसके बदले यह होगा: शान्ति, मनुष्यों के बीच निःस्वार्थ प्रेम, सिद्ध न्याय, पूर्ण पारस्परिक स्वीकृति, आदर और ध्यान।

एक स्थान, जहाँ सब कुछ वैसा है, जैसा उसे होना चाहिए। उमड़ते जीवन का, विविधता का, प्रगति का, स्वतंत्रता का, साहसिक अभियानों का, सृजनशीलता का, निरंतर नई खोजों का स्थान, एक स्थान, जहाँ सब कुछ सदा नया और ताज़ा है।

थकान, उत्साहहीनता और शिथिलता के बदले बल, जीवंतता और प्रेरणा सदा के लिए बने रहते हैं।

अकल्पनीय और विविधता से भरी सुंदरता का स्थान, जिसकी टोह ली जाती है और जिसकी खोज की जाती है। एक स्थान, जहाँ नए लोगों से परिचय होता है और उनके साथ उत्सव मनाया जाता है।

एक स्थान, जहाँ समय थम जाता है या कभी बीतता नहीं! एक स्थान, जहाँ सुंदर बातें केवल इतिहास नहीं, बल्कि सदा वर्तमान हैं! एक स्थान, जहाँ हमसे कुछ नहीं छूटता।

एक स्थान, जिसके विषय में हम सोचते थे कि वह होना ही चाहिए, एक स्थान, जिसकी हमारा हृदय सदा से लालसा करता रहा है।

भरपूरी का स्थान, सबसे अच्छे भोजन का, सबसे सुंदर कला और संगीत का, सबसे अच्छी तकनीक का। जो कुछ आज जीवन को जीवन बनाता है, वह सब वहाँ सिद्ध रूप में है।

आनंद का स्थान, क्योंकि सृष्टिकर्ता सबको दिखाई देते हुए मनुष्यों के बीच वास करता है। और वे उसकी सुरक्षा में, उसकी आशीष में, उसके प्रेम में जीते हैं। परमेश्वर में, पिता, पुत्र और आत्मा में आनंदित होते हैं, उसकी आराधना करते हैं और उसे जानते हैं। उससे प्रेम करते हैं।

सनातन की आँखों में देखना, परमेश्वर को आमने-सामने देखना, वह सबसे बड़ा सुख है, जिसका मनुष्य अनुभव कर सकते हैं। कम से कम तब हम समझ जाएँगे कि यह वचन कितना सच है। भय और लज्जा के बिना, स्वतंत्र होकर और भरोसे से भरे हुए, परमेश्वर की प्रेमपूर्ण कृपा में सदा जीना, किसी भी बात से तुलना के योग्य नहीं है। जब उसकी दृष्टि हम पर पड़ेगी, तब वह असीम प्रेम, जिसकी हमने सदा लालसा की है, हमसे मिलेगा और हमें छुएगा, हमारे भीतर बह उठेगा और हमें गले लगा लेगा।

जीवन के जल के सोते से पीना और जीवन के वृक्ष से निरंतर खाना। यह उस अनन्तता का एक चित्र है, जिसे आज स्वर्ग कहा जाता है।

वहाँ, उसकी उपस्थिति में, हम वह होंगे, जो हमें सदा से होना था। हम स्वयं। उतने ही व्यक्तिगत और अनूठे, जितना परमेश्वर ने हमें चाहा और बनने दिया। वहाँ बिना किसी दिखावे के। सच्चे।

वहाँ सब मनुष्य सबसे अच्छे अर्थ में प्रेम और देखभाल के साथ पृथ्वी पर शासन करेंगे²⁵² और इस प्रकार पहले मनुष्यों का काम पूरा करेंगे। ऐसी रीति से कि सृष्टि की संभावनाएँ ऐसे खिल उठेंगी, जैसे पहले कभी नहीं खिलीं। अकल्पनीय सृजनशीलता, विविधता, समृद्धि और आनंद में। सब कुछ परमेश्वर के प्रेम से भरा हुआ। एक साथ, पिता अपने परिवार के साथ, जिसने उनके लिए सब कुछ तैयार किया है।²⁵³ आकाश और पृथ्वी एक हो जाते हैं। हमें अपने सौभाग्य पर विश्वास नहीं होगा। 10,000 वर्ष बाद भी नहीं। हम सदा यीशु के साथ रहेंगे। सच्चे, गहरे, जयजयकार करते आनंद का कभी अंत नहीं होगा।²⁵⁴

सुसमाचार यह निमंत्रण है कि उसमें सम्मिलित हों और उस बड़े, अनन्त उत्सव को साथ मनाएँ।²⁵⁵ यह संदेश सब मनुष्यों के पास जाता है।²⁵⁶ हर एक को निमंत्रण है।²⁵⁷ प्रवेश का कोई शुल्क नहीं। यीशु ने सब कुछ ठीक कर दिया है।²⁵⁸

सुसमाचार – उद्धार के लिए सामर्थ्य

यीशु के किसी चले को सुसमाचार से लज्जित होने की ज़रूरत नहीं। भले ही क्रूस बहुतों के लिए मूर्खता है। इस संदेश में सामर्थ्य है। वह डायनामाइट के समान है।²⁵⁹ जिन मनुष्यों के हृदय सुसमाचार खोल देता है, वे परमेश्वर के इस सामर्थ्य का अनुभव करते हैं, जो उन पर कार्य करता है। मन फिराना होता है, एक नया जीवन आरंभ होता है। जीवन का एक ऐसा मोड़, जिसे केवल परमेश्वर का सामर्थ्य ला सकता है और जो जीवन के हर क्षेत्र पर प्रभाव डालता है।²⁶⁰ यह सामर्थ्य उद्धार देता है और गुप्त-विद्या के बंधनों और लतों से छुड़ाता है। बहुत से लोग शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से चंगे हुए। संबंध फिर से बहाल होते हैं। सुसमाचार में परमेश्वर के सामर्थ्य की तुलना किसी और चीज़ से नहीं की जा सकती। किसी विचारधारा, किसी धर्म या किसी दर्शन का वैसा प्रभाव नहीं, जैसा सुसमाचार का है।²⁶¹

252. रोमियों 5:17; प्रकाशितवाक्य 5:10; 22:5

253. 1 कुरिन्थियों 2:9

254. भजन संहिता 16:11

255. प्रकाशितवाक्य 19:6-10; 21:6; 22:14-15, 17

256. मत्ती 28:19-20; 2 कुरिन्थियों 5:15

257. मत्ती 22:1-14

258. रोमियों 3:24; प्रकाशितवाक्य 21:6; यशायाह 55:1

259. रोमियों 1:16-17

260. 1 थिस्सलुनीकियों 1:5-10

261. यूहन्ना 8:36; रोमियों 6:18

जहाँ हम मनुष्य शक्तिहीन और असमंजस में हैं, न अपनी सहायता कर सकते हैं, न दूसरों की,²⁶² वहाँ यह सुसमाचार आश्चर्यकर्म करता है। नए जन्म का आश्चर्यकर्म।²⁶³ सुसमाचार नया जीवन रचता है। उसी के समान, जब एक बच्चा जन्म लेता है।²⁶⁴

एक बार एक नास्तिक ने एक प्रसिद्ध सुसमाचार-प्रचारक को परमेश्वर के अस्तित्व पर वाद-विवाद के लिए चुनौती दी। प्रचारक मान गया, परन्तु उसने यह शर्त रखी कि नास्तिक ऐसे लोगों को साथ लाए, जिनके जीवन में नास्तिकता के द्वारा भलाई की ओर कोई मोड़ आया हो। वाद-विवाद हुआ ही नहीं, क्योंकि नास्तिकता के द्वारा न कोई नया मनुष्य बना था, न कोई लतों और निर्भरताओं से छूटा था। इसके विपरीत प्रचारक बहुत से ऐसे लोगों को जानता था, जो उसके सुसमाचार-प्रचार के द्वारा स्वतंत्र हुए और नए मनुष्य बन गए।

सुसमाचार किसी मनुष्य के सामने आकर रुकता नहीं। वह सब के लिए है। और इसके साथ वह सामर्थ्य भी, जो इस संदेश में वास करता है। यह परमेश्वर का सामर्थ्य है, जैसा वह उसके पुत्र को जिलाने में प्रकट हुआ।

यही उद्धार के लिए वास्तविक सामर्थ्य है!

सुसमाचार की आज्ञा मानना

सुसमाचार मनुष्यों को बदल देता है। क्या आपने इसका अनुभव किया है? या दूसरों में देखा है? सचमुच आनंद की बात। अचानक लोगों में बाइबल पढ़ने की भूख जाग उठती है। उनमें परमेश्वर की उपस्थिति की भूख जाग उठती है।²⁶⁵ वे परमेश्वर के विषय में और जानना चाहते हैं। सुसमाचार को जानने से पहले उनमें यह रुचि नहीं थी। अचानक वे पूछने लगते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है।²⁶⁶

सुसमाचार के प्रति प्रतिक्रिया एक ओर उदासीनता या अस्वीकृति है। दूसरी ओर विश्वास।²⁶⁷ सुसमाचार को केवल बुद्धि से सच मान लेना नहीं,²⁶⁸ बल्कि पूरे मनुष्य की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया। एक शब्द में: **विश्वास की आज्ञाकारिता**।²⁶⁹ मनुष्य सुसमाचार की पुकार की आज्ञा इस प्रकार मानते हैं कि वे उस पर विश्वास करते हैं, जो यह संदेश उनके लिए लाता है। भले ही वे स्वयं इसे आज्ञाकारिता का क्रदम न समझें, बल्कि एक उपहार को ग्रहण करना।

262. रोमियों 5:6

263. यूहन्ना 3:3; 1 पतरस 1:3; तीतुस 3:4-7

264. 1 कुरिन्थियों 4:15; याकूब 1:18; 1 पतरस 1:23-25

265. 1 पतरस 2:2

266. 1 पतरस 4:2-3

267. प्रेरितों के काम 2:37-41

268. याकूब 2:19

269. रोमियों 1:5; 16:26; 1 यूहन्ना 2:3-4; 3:24; 5:2-3

वे परमेश्वर की ओर फिरते हैं। हर उस बात से दूर, जो परमेश्वर के बिना जीवन की पहचान है। मूर्तियों से दूर, चाहे वे दिखाई देनेवाली हों या अदृश्य।²⁷⁰ वे अपने जीवन में पाप को पहचानते हैं और उसे अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लेते हैं।²⁷¹ वे परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा मिलनेवाली क्षमा को थाम लेते हैं। वे उद्धार और चंगाई का अनुभव करते हैं। जब सुसमाचार का प्रचार सामर्थ्य और बड़े निश्चय और स्पष्टता के साथ होता है, तो वह मनुष्यों को प्रकाश में ले आता है।²⁷² वे पहचानते हैं कि वे कौन हैं और परमेश्वर कौन है। उन्हें जीवन की वास्तविकता को देखने की बिल्कुल भिन्न दृष्टि मिलती है। एक परिवर्तन होता है, स्वयं परमेश्वर के द्वारा किया हुआ, मानो मृत्यु से जीवन में।²⁷³

यीशु का चेला बनना

यीशु की ओर फिरना अक्सर एक प्रक्रिया में होता है। जो मनुष्य सुसमाचार के द्वारा यीशु के संपर्क में आता है, वह विश्वास में छोटे-छोटे कदम उठाने लगता है। वह यीशु की सुनने और उस पर भरोसा रखने लगता है। एक यात्रा आरंभ होती है, बनने और सीखने की। चेला होने का अर्थ है एक शिष्य, एक सीखनेवाला होना। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो इस जीवन में कभी समाप्त नहीं होती।

उस समय यीशु के चेले जहाँ कहीं वह जाता, उसके पीछे चलते थे। बारहों के अलावा और भी चेले थे। यीशु गुरु था, जिससे चेले सीखते थे। चेले उसके समान बनना चाहते थे, इस प्रकार कि वे वही करें, जो वह कहता था।²⁷⁴

जब यीशु अब उनके बीच नहीं था, तब भी यीशु पर विश्वास करनेवाले सब लोगों को चेले ही कहा जाता था। बाद में ही उन्हें मसीही कहा जाने लगा।²⁷⁵

चेलेपन की शुरुआत

चेलापन ही हमारे साथ परमेश्वर का लक्ष्य है! ऐसे मनुष्य, जो राजा यीशु की आज्ञा मानते और उसके प्रति वफ़ादार हैं। इसकी शुरुआत कभी-कभी स्पष्ट रूप से होती है, परन्तु अक्सर झिझकते हुए और बिना किसी के ध्यान दिए भी। परमेश्वर का आत्मा चेलों की सहायता करता है कि वे वही करें, जो यीशु कहता है। और विश्वास में बढ़ें। उनमें सुसमाचार एक बीज की तरह कार्य करता है, जो हृदय की उपजाऊ भूमि पर गिरता है और बढ़कर फल लाता है।²⁷⁶ किसी में जल्दी, किसी में अधिक समय लगता है। गिरना और फिर उठना।

270. प्रेरितों के काम 11:21; 14:15; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9-10; 1 पतरस 4:3

271. प्रेरितों के काम 19:18-20; 1 यूहन्ना 1:9; नीतिवचन 28:13; भजन संहिता 51

272. 1 थिस्सलुनीकियों 1:5

273. कुलुस्सियों 2:13; 1 यूहन्ना 3:14

274. यूहन्ना 8:31

275. प्रेरितों के काम 11:26

276. मरकुस 4:20; यूहन्ना 15:8

इसी प्रकार नया आत्मिक जीवन दिखाई देने लगता है।²⁷⁷ सुसमाचार को और भी अच्छी तरह समझना इसमें सीखने की एक प्रक्रिया बनी रहती है। यह केवल दिमागी बात के रूप में नहीं होता, बल्कि इस प्रकार कि हम उसे करते हैं और उसे जीते हैं।

एक बार फिर, क्योंकि यह इतना महत्वपूर्ण है: यीशु के पीछे चलना और उसका चेला बनना ही सुसमाचार का लक्ष्य है। सुसमाचार स्वर्ग का प्रवेश-टिकट नहीं है और परलोक की आस दिलाकर तसल्ली नहीं देता। वह कुछ ऐसा है, जो इसी जीवन को, यहाँ और अभी, बदल देता है, और जो फिर एक दिन अनन्तता और महिमा में आगे चलता और पूरा होता है। अनन्त जीवन अभी से जिया जाता है!

एक बाहरी चिह्न है, जिसके द्वारा मनुष्य गवाही देता है कि अब वह मसीह का है: **बपतिस्मा**।²⁷⁸ वह सार्वजनिक रूप से, मनुष्यों के सामने और अदृश्य संसार की शक्तियों के सामने, इस बात की पुष्टि करता और उस पर मुहर लगाता है कि अब से यीशु मसीह उसके जीवन का छुड़ानेवाला और प्रभु है। जल का बपतिस्मा बड़ा अंतर लाता है। वह पक्ष का परिवर्तन है, राजा यीशु मसीह का अंगीकार। वह यीशु के साथ जीवन के बिल्कुल आरंभ में होता है। उसे सार्वजनिक रूप से होना चाहिए, ताकि लोग देख सकें कि यीशु के चले इस बात को कितनी गंभीरता से लेते हैं।

यीशु के पीछे चलना कैसा दिखता है?

एक चले का जीवन कैसा दिखता है? वह आगे भी वे सब काम करता रहेगा, जिनसे जीवन बनता है: सोना, खाना, काम करना, स्कूल जाना आदि। परन्तु भीतरी दृष्टिकोण और प्रेरणा, जीवन और पड़ोसी को देखने की दृष्टि बदल जाती है।

यहाँ परमेश्वर से मिले नए जीवन के फलों के रूप में यीशु के चेलों के कुछ लक्षण हैं। जो कुछ मैं बताता हूँ, उस पर आक्रमण होता है और होता रहेगा। मसीह में नए अस्तित्व के लिए भी संघर्ष होता है। विरोध केवल बाहर से नहीं, बल्कि भीतर से भी होता है। हमारा पुराना अस्तित्व, पुरानी आदतें, हमारे भीतर का पाप फिर से सिर उठाते हैं। इससे घबराने की ज़रूरत नहीं, मानो सब कुछ नया केवल कल्पना हो। परमेश्वर सहायता करता है और हमारे भीतर कार्य करता है। उसका आत्मा हमें सहायक, सामर्थ्य और मददगार के रूप में दिया गया है।

यीशु के चले परमेश्वर से, अपने पड़ोसी से और एक-दूसरे से प्रेम करते हैं!²⁷⁹ ईश्वरीय प्रेम सदा सबसे बड़ा बना रहता है!²⁸⁰ उसकी कोई सीमा नहीं। यीशु के चले उस प्रेम से पहचाने जाते हैं, जो वे आपस में

277. रोमियों 6:21-22; 7:4; इफिसियों 5:9; कुलुस्सियों 1:10; तीतुस 3:14; इब्रानियों 13:15; 2 पतरस 1:8

278. मत्ती 28:19; मरकुस 16:16; प्रेरितों के काम 2:38-41; 8:12, 36-38; 9:18; 10:47-48; 16:15, 33; 18:8; रोमियों 6:3; गलातियों 3:27; इफिसियों 4:5; कुलुस्सियों 2:12

279. मत्ती 22:36-40; यूहन्ना 13:34-35; 15:13-17; 1 कुरिन्थियों 13:4-7

280. 1 कुरिन्थियों 13:13

रखते हैं!²⁸¹

चेले एक-दूसरे की चिंता और देखभाल करते हैं!²⁸² वे एक परिवार हैं। वे एक संगति हैं। यह केवल नियमित रूप से आराधना-सभा में जाने में नहीं, बल्कि पूरे जीवन में, रोज़मर्रा में दिखाई देता है।

यीशु के चेले प्रभु-भोज में, रोटी तोड़ने में, मिलकर उस बात को स्मरण करते हैं, जो यीशु ने उनके लिए की है। वे ऐसा नियमित रूप से या जितनी बार हो सके, करते हैं।²⁸³ अपनी आराधना-सभाओं के लिए वे गिरजाघरों पर निर्भर नहीं हैं। वे घरों में, एक आत्मिक परिवार के रूप में मिलते हैं।

यीशु के चेले स्वर्गीय पिता से प्रार्थना करते हैं, अकेले भी और मिलकर भी!²⁸⁴ वे परमेश्वर से ऐसे बातें करते हैं, मानो उसे देख रहे हों। आराधना और स्तुति, अकेले भी और मिलकर भी, उनके लिए बड़े आनंद की बात हैं।²⁸⁵

यीशु के चेले बाइबल पढ़ते हैं!²⁸⁶ इस प्रकार वे परमेश्वर को और उसकी इच्छा को जानते हैं। और यह भी कि उसने उन्हें क्या दिया है।

यीशु के चेले परमेश्वर की आवाज़ सुनते हैं और रोज़मर्रा के जीवन में, छोटी और बड़ी बातों में, उसकी अगुवाई और निर्देश का अनुभव करते हैं।

यीशु के चेले दुःख उठाते हैं।²⁸⁷ जैसे यीशु को सताया गया, वैसा ही उनके साथ भी हो सकता है। यह हँसी उड़ाए जाने से, उत्पीड़न और तंग किए जाने से आरंभ होता है और, जैसे संसार के कुछ देशों में, आज भी मृत्यु का अर्थ रख सकता है।²⁸⁸

यीशु के चेले दूसरे लोगों को चेला बनाते हैं!²⁸⁹ सुसमाचार मनुष्यों को ऐसे मसीही नहीं बनाता, जो कोई निश्चित बात मानते हैं, बल्कि ऐसे चेले, जो रोज़मर्रा के जीवन में यीशु के पीछे चलते हैं। जो सब कुछ त्यागने और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाने को तैयार हैं और जिनके जीवन का लक्ष्य दूसरे लोगों को चेला बनाना है। यही, और इसके सिवा कुछ नहीं, यीशु चाहता था!²⁹⁰ यीशु के चेले बाहर लोगों के पास जाते हैं। वे अपने आप को अलग-थलग बंद नहीं कर लेते।

281. यूहन्ना 13:35

282. प्रेरितों के काम 11:29

283. 1 कुरिन्थियों 11:23-27

284. मत्ती 6:5-15; यूहन्ना 16:26-27; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17

285. यूहन्ना 4:23

286. कुलुस्सियों 3:16; 2 तीमुथियुस 3:16; 1 पतरस 2:2

287. प्रेरितों के काम 14:22

288. यूहन्ना 15:18-20

289. मत्ती 28:18-20

290. लूका 14:26-27, 33; प्रेरितों के काम 14:21

बाइबल बढ़ने और ज्ञान में आगे बढ़ने की एक प्रक्रिया की बात करती है।²⁹¹ मसीही सिद्ध नहीं हैं। मसीही अब भी पाप करते हैं, परन्तु पाप अब उन पर प्रभुता नहीं करता।²⁹² वे अब पाप करना नहीं चाहते। वे उस व्यापक क्षमा में जीते हैं, जो परमेश्वर ने उन्हें दी है। उन पापों के लिए भी, जो वे अभी आगे करेंगे।²⁹³ वे अपने पापों को पहचानते हैं और उन्हें अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लेते हैं। एक-दूसरे के सामने भी, जब उन्होंने एक-दूसरे का अपराध किया हो।²⁹⁴ वे अनुग्रह के अधीन जीते हैं,²⁹⁵ व्यवस्था के अधीन नहीं।²⁹⁶ उनका लक्ष्य दस आज्ञाओं का पालन करना नहीं है। यीशु के साथ जीवन उससे आगे जाता है, जितना ये आज्ञाएँ माँगती हैं। यह इसलिए संभव होता है, क्योंकि पवित्र आत्मा हमारे भीतर रहता है।

उन्हें पवित्र आत्मा मिला है,²⁹⁷ जो उनके भीतर वास करता है और उनकी अगुवाई करता है। उसका लक्ष्य है कि आत्मा के अच्छे फल दिखाई दें।²⁹⁸ ये फल सबसे बढ़कर आपसी व्यवहार में दिखाई देते हैं: प्रेम, आनंद, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वासयोग्यता, नम्रता, संयम। कुल मिलाकर यह वही है, जो यीशु ने जिया। उसके समान बनना ही जीवन का नया लक्ष्य है।²⁹⁹ यह परमेश्वर का फल है, जिसे वह हमारे जीवन में उत्पन्न होने और बढ़ने देता है, जब हम उस पर भरोसा रखते हैं। पवित्र आत्मा यीशु के पीछे चलने का सामर्थ्य है।³⁰⁰ यह आत्मा हमारे जीवन में परमेश्वर की व्यक्तिगत उपस्थिति है। यह तो अद्भुत है, है न? आत्मा एक साथ सलाहकार, कोच, प्रशिक्षक, सहायक और मार्गदर्शक है। वह ठीक वही करता है, जो यीशु करता, यदि वह यहाँ पृथ्वी पर हमारे साथ होता।

परमेश्वर का आत्मा चेलों को ऐसे वरदान देता है, जिनसे वे एक-दूसरे की सेवा कर सकें।³⁰¹

चेलापन कोई आरामदायक पाठ्यक्रम नहीं, कोई सैर नहीं और कोई आरामकुर्सी-मसीहियत नहीं। इसका अर्थ है यीशु के समान जीना और सेवा करना। जीवन का एक नया आदर्श-वाक्य, जो ज़िम्मेदारी भी डालता है। उसका राज्य और उसकी धार्मिकता यीशु के चेले के लिए सदा पहले स्थान पर रहते हैं। यीशु कहता है कि बाक़ी सब बातों की चिंता हमारा पिता करेगा।³⁰²

यीशु के सिवा किसी को यह कहने का अधिकार नहीं: **मेरे पीछे हो ले!** जब वह हमें बुलाता है, तो क्या हम “नहीं” कह सकते हैं?

291. यूहन्ना 3:30; कुलुस्सियों 1:10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:3; 2 पतरस 3:18

292. रोमियों 6:12-14

293. इब्रानियों 10:14; 1 यूहन्ना 1:5 – 2:2

294. याकूब 5:16

295. प्रेरितों के काम 13:43

296. रोमियों 6:14

297. यूहन्ना 7:39; 14:17; 1 कुरिन्थियों 2:12; 6:19

298. गलातियों 5:13-26

299. 2 कुरिन्थियों 3:18

300. प्रेरितों के काम 13:52; रोमियों 8:12-17

301. 1 कुरिन्थियों 12; रोमियों 12:3-8

302. मत्ती 6:33

यह आसान मार्ग नहीं होगा। यीशु कहता है कि हम लागत का हिसाब लगाएँ,³⁰³ ताकि हम एक मज़बूत, सच्चा और सोच-समझकर निर्णय लें, जो विरोध की पहली हवा में ही उड़ न जाए। जो मार्ग जीवन की ओर ले जाता है, वह सकारा है और ऊपर चढ़ता है। विनाश की ओर जानेवाला चौड़ा मार्ग अपने आप चलता है। कुछ करने की ज़रूरत नहीं, बस वैसे ही बने रहना है, जैसे कोई है।³⁰⁴

यीशु के पीछे चलनेवालों के रूप में हमारे पूरे संघर्ष और आक्रमणों से भरे जीवन के लिए यह बात लागू होती है: परमेश्वर अपनी संतानों से हर समय ठीक उतना ही प्रेम करता है, जितना उस क्षण, जब उसने अपने पुत्र को उनके लिए दे दिया।³⁰⁵

सुसमाचार की उपेक्षा करना

सुसमाचार धमकी का संदेश नहीं है। वह आनंद का संदेश है! मन फिराने और विश्वास के द्वारा वह परमेश्वर तक, क्षमा तक, स्वतंत्रता तक, जीवन तक, अर्थ तक का मार्ग खोलता है।

परन्तु सुसमाचार मनमानी की बात नहीं है। बहुत से सत्यों में से एक सत्य नहीं। जो यह संदेश सुनता है, उसे निर्णय की चुनौती मिलती है। इसके साथ लापरवाही से पेश नहीं आना चाहिए। आखिरकार यह संदेश हमें बचाना और सुरक्षित रखना चाहता है।

एक ऐसे समाचार की कल्पना कीजिए, जो जंगल की आग से चेतावनी देता है, या किसी तूफ़ान से, या दूषित पीने के पानी से, या किसी बाँध के टूटने से। एक ऐसा समाचार, जो केवल चेतावनी ही नहीं देता, बल्कि बचने का मार्ग और सुरक्षा भी दिखाता है। ऐसे संदेश को कितनी गंभीरता से लेना चाहिए? क्या हो, यदि कोई भूल से यह समझे कि वह बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है या झूठा है, या केवल दूसरों के लिए है?

सब कुछ प्रकाश में आएगा

यीशु के चेलों ने संसार के जी उठे प्रभु की गवाही देकर सुसमाचार का प्रचार किया।³⁰⁶ उन्होंने घोषणा की कि उसमें क्षमा संभव है, यदि कोई उस पर भरोसा रखे, अपने पाप मान ले और अपना जीवन बदले। साथ ही उन्होंने सदा इस बात पर बल दिया कि एक दिन आनेवाला है और निश्चित रूप से ठहराया गया है, जब हर मनुष्य को इस प्रभु के सामने लेखा देना होगा। यीशु सब मनुष्यों का न्यायी है। हर एक को उसके सामने खड़ा होना होगा। आमने-सामने। परमेश्वर, उसके पिता, ने न्याय का काम उसे सौंप दिया है।³⁰⁷

303. लूका 14:28

304. मत्ती 7:13-14

305. यूहन्ना 16:27; 17:23

306. प्रेरितों के काम 4:2; 8:12, 25, 35, 40; 11:20; 17:18

307. यूहन्ना 5:22-29

जो कुछ हमने किया, कहा और सोचा है, उस सब का हमें लेखा देना होगा। इसलिए यह एक चेतावनी है कि हम अपने जीवन पर विचार करें! सोचें कि जो हम करते हैं, क्या वह परमेश्वर को भाता है। आपको कैसा लगता है, जब आप सोचते हैं कि सब कुछ प्रकाश में आएगा – बिना किसी अपवाद के सब कुछ? जो हमने छिपकर सोचा और किया, जो हमने मनुष्यों के साथ किया और जो करना छोड़ दिया।

हमारे भीतर गहराई में, हृदय और विवेक में, हम सब जानते हैं कि हमने पाप किया है। हम जानते हैं कि परमेश्वर किस बात को कभी उचित नहीं ठहराता। कल्पना कीजिए: क्या हम पिछले सप्ताह के अपने विचारों और भावनाओं को एक पर्दे पर सार्वजनिक रूप से उन सब के सामने दिखाने को तैयार होंगे, जिनसे इस सप्ताह हमारा वास्ता पड़ा? हम शायद सहमत नहीं होंगे, क्योंकि कुछ बातें ऐसी होंगी, जिन्हें हम अपने तक ही रखना पसंद करेंगे। यदि हम कुछ बातों के लिए मनुष्यों के सामने ही लज्जित होते हैं, तो पवित्र परमेश्वर के सामने क्या हाल होगा?

मनुष्य के रूप में परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में पाप के प्रश्न को बाइबल में कभी हल्का नहीं किया जाता। इसे जैसे चाहे घुमाइए-फिराइए: यही मूल समस्या है। आनंद देनेवाला संदेश यह है: जो मसीह में है, उसे दंड की आज्ञा से डरने की ज़रूरत नहीं।³⁰⁸ यदि हमें क्षमा मिल चुकी है, तो हमें परमेश्वर से मिलने से अब डरने की ज़रूरत नहीं। उसने मसीह में हमें अपनी संतान बनाया है, अपने बेटे और बेटियाँ।³⁰⁹ परमेश्वर का सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।³¹⁰

परन्तु क्या हो, यदि मैं सुसमाचार को ठुकरा दूँ? परमेश्वर अपना संदेश किसी पर ज़बरदस्ती नहीं थोपता। वह निर्णय मनुष्य पर छोड़ देता है। यद्यपि साथ ही वह उसे इस संदेश का क्रायल करने के लिए सब कुछ करता है। वह मनुष्यों के हृदयों को क्रायल करने के लिए खोजता और संघर्ष करता है।³¹¹

एक डूबते हुए मनुष्य के बारे में सोचिए, जिसकी ओर एक जीवन-रक्षक घेरा (लाइफ़बॉय) फेंका जाता है। किसी के मन में यह दावा करने का विचार नहीं आएगा कि डूबनेवाले को बचाए जाने के लिए विवश किया जा रहा है। यदि कोई मनुष्य अपने आप को खोया हुआ नहीं पहचानता, तो सुसमाचार उसके लिए कुछ अर्थ नहीं रखेगा। परन्तु परमेश्वर का आत्मा सुसमाचार में इस प्रकार कार्य करता है कि वह मनुष्यों को क्रायल करता है।³¹² परमेश्वर के वचन में हृदयों को खोलने का सामर्थ्य है।³¹³

परन्तु किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए: सुसमाचार के बिना, मसीह के बिना, हम खोए हुए हैं और पहले से ही परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं। कोई तटस्थ क्षेत्र नहीं है। मसीह में दंड की कोई आज्ञा नहीं – मसीह के बिना हमें उचित ही दोषी ठहराया जाएगा।

308. रोमियों 8:1

309. यूहन्ना 1:12

310. 1 यूहन्ना 4:16-19

311. लूका 19:10

312. यूहन्ना 16:8

313. इब्रानियों 4:12-13

यदि “नहीं” बना रहता है, तो मनुष्य को उसके परिणामों के साथ जीना होगा। तब वह पाप और दोष के साथ अकेला रह जाता है। उसके सामने, जो सब उद्देश्यों को भली-भाँति देख लेता है, वह अपना बचाव कैसे करना चाहेगा या कर सकेगा?

परमेश्वर प्रेम है!³¹⁴ परन्तु वह ज्योति भी है। पूर्ण रूप से पवित्र।³¹⁵ जो उसके संदेश के विरुद्ध निर्णय लेता है, वह परमेश्वर को, यीशु को और उस सब को “नहीं” कहता है, जो उसने प्रेम के कारण उसके लिए किया है। और जिसे वह हर एक को मुफ्त में देता है। यीशु ने एक बार कहा:

जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है!³¹⁶

परमेश्वर का क्रोध

परमेश्वर के क्रोध की वास्तविकता की ओर संकेत न करना कुछ ऐसा ही होता, जैसे संकट में पड़े व्यक्ति की सहायता न करना।³¹⁷ पाप के प्रति परमेश्वर की पूर्ण अरुचि की ओर। उसका अंतरतम पाप से आहत होता है। वह दुःखी होता है,³¹⁸ कि उसके मनुष्य कैसे अधर्मी जीवन जीते हैं और नहीं देखते कि उसके बिना रास्ता दुर्दशा की ओर जाता है। जैसे परमेश्वर के प्रेम को भावना के बिना सोचा और समझा नहीं जा सकता, वैसे ही उसके क्रोध के साथ भी है। परन्तु यह क्रोध भी शुद्ध और पवित्र है। कोई आवेश नहीं, मनुष्यों के पापों पर कोई तर्कहीन और बेहिसाब प्रतिक्रिया नहीं। परमेश्वर क्रोध करने में धीमा है!³¹⁹ हम मनुष्यों से भिन्न।

परमेश्वर के क्रोध का अर्थ है कि परमेश्वर मनुष्य को उसके पापों के परिणामों और प्रभावों के साथ उसी पर छोड़ देता है।³²⁰ अकेला छोड़ दिया जाना, अपनी उन सब समस्याओं के साथ खोया हुआ होना, जिन्हें मैंने स्वयं उत्पन्न किया है। इसका अनुभव कोई नहीं करना चाहता।

क्रोध का अर्थ है न्याय के दिन अपने पाप के साथ परमेश्वर की महिमामय पवित्रता का सामना करना। परमेश्वर का क्रोध हमारे उन पापों पर परमेश्वर का उत्तर है, जो हम मनुष्यों के और उसके विरुद्ध करते हैं।

यदि परमेश्वर क्रोधित न होता, तो वह परमेश्वर न होता। वह अपने उस प्रेम को नकार देता, जिसके लिए हर रूप में बुराई असहनीय है। अंततः कोई ऐसा परमेश्वर नहीं चाहता, जो हर बात पर “हाँ” कहे। जब मनुष्य ही न्याय की गारंटी नहीं दे सकते, तो हम केवल परमेश्वर पर ही आशा रख सकते हैं। परन्तु यह केवल दूसरों पर लागू नहीं होता – हर एक अपने लिए लेखा देगा।

314. 1 यूहन्ना 3:1; 4:7-8, 16

315. 1 यूहन्ना 1:5; प्रकाशितवाक्य 4:8

316. मत्ती 12:30

317. यूहन्ना 3:36; रोमियों 1:18; 2:5, 8; 3:5; 5:9; इफिसियों 2:3; 5:6; कुलुस्सियों 3:5-6; प्रकाशितवाक्य 6:16-17; 11:18

318. मरकुस 3:5

319. निर्गमन 34:6

320. रोमियों 1:26

मसीही परमेश्वर की मेल-मिलाप की इच्छा की गवाही देते हैं,³²¹ क्योंकि उन्होंने स्वयं उसे इसी रूप में जाना है।³²² परन्तु वह कोई पालतू परमेश्वर नहीं, जो हमारे मानदंड अपना ले। वह हमारे अन्यायों पर चुप नहीं रहेगा। या उन्हें यों ही अनदेखा नहीं करेगा। वह न्याय स्थापित करेगा। अपनी रीति से, जो हमारी क्षमताओं और आज की धारणाओं से कहीं बढ़कर है।

जो परमेश्वर को और उसके शुभ संदेश को “नहीं” कहता है, शायद कई बार भी, वह अपने आप को कठोर बना लेता है। इस प्रकार वह खोया हुआ है।³²³ खोया हुआ, क्योंकि परमेश्वर भारी मन से इस “नहीं” को स्वीकार कर लेता है। खोया हुआ होने का अर्थ है वहाँ न होना, जहाँ होना चाहिए था और हो सकते थे। घर पर नहीं, बल्कि अकेले और उखड़े हुए। परमेश्वर के साथ संबंध टूट गया है। उस परमेश्वर के साथ, जो हर एक के पीछे अंत तक जाता है, ताकि उसे घर ले आए।³²⁴

हर एक, जो सुसमाचार को ठुकराता है, अपने पापों के लिए उचित दंड की आज्ञा पाएगा।³²⁵ निर्णय पूरी तरह न्यायपूर्ण होगा।³²⁶ मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा, क्योंकि परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता।³²⁷ जिसने सत्य और सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी, हठ के साथ विरोध किया, वह क्रोध, कोप, क्लेश और संकट का अनुभव करेगा।³²⁸ कभी-कभी इसी जीवन में, परन्तु मृत्यु के बाद निश्चय ही। अपने बिना प्रायश्चित्त के पाप की आँखों में देखना और अपने ही पाप का एक बार फिर सामना करना ऐसा ही लगेगा। इस बार परमेश्वर की दृष्टि से। और उन मनुष्यों की दृष्टि से, जिनके साथ अन्याय किया गया।

अनन्त जीवन और नरक

यीशु महिमा में अनन्त जीवन की³²⁹ और अनन्त आग और अनन्त दंड की बात करता है।³³⁰ वह बाहर के अंधकार की बात करता है, जहाँ वे हैं, जो सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानते।³³¹ रोने और दाँत पीसने की।³³²

वास्तव में यीशु ही है, जो अक्सर नरक की बात करता है। उसने, जो स्वयं साक्षात् प्रेम है, सबसे अधिक इसके विषय में कहा।³³³

321. 2 कुरिन्थियों 5:19-20

322. 2 कुरिन्थियों 5:11

323. रोमियों 2:12; 1 कुरिन्थियों 1:18; 15:18; 2 कुरिन्थियों 2:15; 4:3; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10; 2 पतरस 3:9

324. लूका 15:4, 24; यूहन्ना 3:16; 2 पतरस 3:9

325. 2 कुरिन्थियों 5:10

326. प्रकाशितवाक्य 20:11-15; 21:8

327. गलातियों 6:7-8; गिनती 32:23

328. रोमियों 2:5-11

329. यूहन्ना 3:36; 5:24; 6:47, 51; 10:28; 11:26; रोमियों 5:21; 6:23; 1 यूहन्ना 2:25; 5:11, 13

330. मत्ती 25:34, 41, 46

331. मत्ती 8:12; 22:13; 25:30; यूहन्ना 8:12; 12:46

332. मत्ती 8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51; 25:30; लूका 13:28

333. मत्ती 5:22-30; 10:28; 18:9; 23:33

नए नियम की मूल यूनानी भाषा में नरक के लिए शब्द **Gehenna** (गेहेन्ना) है। उस समय यह एक वास्तविक स्थान था, यरूशलेम के पास की एक घाटी। यीशु के समय में एक कूड़ाघर, जहाँ आग लगातार जलती रहती थी। यीशु भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह की ओर भी संकेत करता है, जो उसी घाटी को बेन-हिन्नोम कहता है।³³⁴ यह स्थान अपनी मूर्तिपूजा के लिए जाना जाता था, जिसमें बच्चों की बलि भी चढ़ाई जाती थी। अर्थात् लज्जा और पाप का प्रतीक। और इसलिए न्याय और विनाश का। सर्वनाश और मृत्यु का।

जो पहले की तरह ही जीते रहना चाहता है, जो अपने पाप में बने रहना चाहता है, वह इस प्रकार जीवन के विरुद्ध निर्णय लेता है। वह अनन्त जीवन की महिमा से बाहर रहता है। यही परमेश्वर के नए संसार में उसकी सब संतानों का जीवन और भविष्य है।³³⁵

नरक का वर्णन चेतावनी के रूप में कठोर चित्रों में किया गया है। बाइबल इस पर चुप नहीं रहती। इसके विपरीत: वह पूरी गंभीरता से चेतावनी देती है। वह केवल “बड़े पापियों” के लिए नहीं है। आइए, केवल हिटलर (Hitler), स्टालिन (Stalin) या माओ (Mao) जैसे सामूहिक हत्यारों के बारे में न सोचें। परपीड़कों या बच्चों का यौन शोषण करनेवालों के बारे में। परमेश्वर उनका निर्णय भी उतने ही न्याय से ठहराता है, जितना उस मनुष्य का, जिसने हमारे मानदंडों के अनुसार कुछ भी या बहुत कम दोष किया है। बाइबल स्पष्ट कहती है: **सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।**³³⁶

नरक का मनुष्यों के लिए विस्तार से क्या अर्थ है, इस पर यीशु और बाइबल चुप हैं। इसलिए कल्पनाएँ अनुचित हैं। यीशु के कथन पर्याप्त चेतावनी हैं।

आप नरक के विषय में अलग-अलग मत सुनेंगे। कुछ कहते हैं, वह है ही नहीं। दूसरे मानते हैं कि वहाँ खोए हुए मनुष्य पूरी तरह नष्ट कर दिए जाते हैं। फिर कुछ कहते हैं कि मनुष्य वहाँ केवल सीमित समय के लिए शुद्ध किए जाने को रहते हैं, ताकि बाद में फिर भी अनन्त जीवन में पहुँचें। इस विषय में बाइबल पढ़िए और फुटनोट्स में दिए गए पाठ खोलकर देखिए। सबसे बुरी बात को, सबसे बुरी स्थिति को मानकर चलिए। कड़वी निराशा से अच्छा है कि सुखद आश्चर्य हो।

परमेश्वर मनुष्यों के “नहीं” का सम्मान करता है। यद्यपि इससे उसे पीड़ा होती है और वह विलाप करता है, जैसे यीशु ने यरूशलेम पर किया।³³⁷ वे परमेश्वर से अलग रहेंगे और अपनी अस्वीकृति और अपने पापों के परिणाम भुगतेंगे। बाइबल इसे **दूसरी मृत्यु** कहती है।³³⁸ वे परमेश्वर के बिना जीना चाहते थे और अब

334. यिर्मयाह 7:31; 19:2-7; 32:35; यशायाह 66:24

335. प्रकाशितवाक्य 21:8, 27; 22:15

336. रोमियों 3:23

337. मत्ती 23:37

338. प्रकाशितवाक्य 2:11; 20:6, 14; 21:8

सदा के लिए ऐसे ही जीएँगे। यह वाक्य सच है: “नरक में केवल स्वेच्छा से जानेवाले होंगे।”³³⁹ मनुष्य के सामने यह चुनाव है कि वह मृत्यु को चुने या जीवन को।³⁴⁰

आज ही उद्धार का दिन है – कल नहीं!

दूसरा सुसमाचार

सुसमाचार सत्य का वचन है।³⁴¹ परमेश्वर का सत्य। सुसमाचार जितना अधिक फैला, उतने ही अधिक ऐसे रूप सामने आए, जो अब मूल से मेल नहीं खाते थे। हमारे संवत् की पहली शताब्दी में ही प्रेरित, जिन्हें यीशु ने प्रचार का काम सौंपा था, सुसमाचार की जालसाज़ियों से सावधान करते हैं।³⁴² वे मूल के समान दिखते हैं, वे धोखा देने की हद तक असली लग सकते हैं।

इसी प्रकार ऐसे छोटे किए हुए रूप भी हैं, जो आवश्यक बातें छोड़ देते हैं या जोड़ देते हैं। झूठे और भटकानेवाले रूप भी हैं। दिशा दिखाने के लिए ये उदाहरण।

सुसमाचार दृढ़ता से दिखाता है कि हम अपने आप को नहीं बचा सकते। अपने आप को सुधारने का हर प्रयास निरर्थक है। परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने और अच्छे कामों के द्वारा परमेश्वर से ग्रहण किए जाने का प्रयास असफल होता है।³⁴³

उतना ही यह भी काम नहीं करता कि परमेश्वर का थोड़ा-सा अनुग्रह ले लें और अपने अच्छे कामों को आवश्यक पूरक के रूप में उसमें जोड़ दें। अनुग्रह और कर्मों से धार्मिकता का मिश्रण या पूरक। यह किसी तरह हमारे मानवीय स्वभाव का अंग है कि हम कुछ कमाना चाहते हैं। अनुग्रह को ग्रहण करना कठिन लगता है। परन्तु ठीक यही सुसमाचार है!

दूसरी ओर परमेश्वर के इस अनुग्रह का मूल्य घटाया और उसे सस्ता भी बनाया जा सकता है। जो सुसमाचार को अपने लिए स्वीकार करता है, परन्तु अपना जीवन नहीं बदलता – बाइबल इसे मन फिराना और परिवर्तन कहती है – उसने उसे ग़लत समझा है। सुसमाचार स्वार्थ और पापमय आत्म-पूर्ति के जीवन के लिए कोई मुफ्त टिकट नहीं है।³⁴⁴ जीवित विश्वास सदा जीवन में एक गहरे मोड़ की ओर ले जाता है।³⁴⁵ वह एक नए जीवन में ले जाता है, जिसमें मसीह प्रभु और स्वामी है।³⁴⁶ नया जीवन निष्पाप नहीं है। पार्थिव देह में वह कभी ऐसा नहीं होगा। परन्तु एक “पहले” और एक “बाद” होता है, एक परिवर्तन, जो छोटे या

339. यह विचार सी. एस. लुईस (C. S. Lewis) से आता है: नरक के द्वार भीतर से बंद हैं (“Über den Schmerz” (The Problem of Pain))।

340. व्यवस्थाविवरण 30:15-19

341. गलातियों 2:5, 14; इफिसियों 1:13; कुलुस्सियों 1:5; 1 तीमोथियुस 2:4

342. 2 कुरिन्थियों 11:1-4; गलातियों 1:6-9

343. रोमियों 3:20, 28; गलातियों 2:16; 3:10

344. रोमियों 6:1; 2 पतरस 1:9-11

345. याकूब 2:18-26

346. 2 पतरस 2:1; यहूदा 4

बड़े कामों और शब्दों में दिखाई देता है। अच्छे काम मसीही जीवन का उतना ही अंग हैं, जितना स्वयं विश्वास। अच्छे कामों के बिना विश्वास मरा हुआ है। जहाँ सच्चा विश्वास है, वह अच्छे कामों में दिखाई देता है। यह कर्मों से धार्मिकता नहीं है। अच्छे काम नए जीवन का प्रमाण हैं।

सच्चे सुसमाचार को किसी जोड़ की ज़रूरत नहीं। यीशु, और उसके सिवा कुछ भी नहीं, यही संदेश है।

इसलिए हमें सुसमाचार को वैसे ही सुरक्षित रखना है,³⁴⁷ जैसा नया नियम उसका वर्णन करता है। बिगाड़ा हुआ सुसमाचार उद्धार नहीं देता!

सुसमाचार क्या नहीं है

सुसमाचार किसी कलीसिया या संप्रदाय का विज्ञापन नहीं है। ऐसा नहीं कि कलीसिया की कोई भूमिका नहीं। सब संप्रदायों के मसीही कम या अधिक सुसमाचार को आगे पहुँचाते ही हैं। कलीसियाएँ उन सब के लिए घर, एक ठिकाना हैं, जो विश्वास में आते हैं।

सुसमाचार अपने आप को सबसे पहले संसार को सुधारने का कार्यक्रम नहीं समझता, यद्यपि वह बहुत से स्थानों पर इसमें भारी योगदान देता है। वह तो हृदयों को बदलने का कार्यक्रम अधिक है। यीशु के बहुत से चेलों के पड़ोसी-प्रेम के द्वारा बहुतों की सहायता होती है। अस्पताल, अनाथालय, दासता का उन्मूलन परमेश्वर के उस प्रेम के प्रमाण हैं, जो मनुष्यों में आकार लेता है। मसीहियों को नमक की तरह काम करना है।³⁴⁸ अन्याय को – वैश्विक अन्याय को भी – उसके नाम से पुकारना और न्याय के लिए खड़े होना।

मसीह के क्रूस के द्वारा व्यक्ति का उद्धार एक क्रांतिकारी शक्ति को मुक्त करता है, जो समाज को प्रभावित करती है। क्रूस का संदेश ही वह एकमात्र शक्ति है, जो संसार को बेहदारी के लिए बदल सकती है। और वह एकमात्र शक्ति, जिसने सिद्ध किया है कि वह ऐसा कर सकती है। समय आ गया है कि मसीह के क्रूस का एक बार फिर ऊँचे और स्पष्ट स्वर में प्रचार किया जाए।

व्यवहार में सुसमाचार इस बात में दिखाई देता है कि हम वैसा ही करें, जैसा यीशु ने किया। देने, सहायता करने, रक्षा करने, स्वतंत्र करने, अंगीकार करने को तैयार रहना। प्रेम करना! बहुत से स्थानों पर कुछ भलाई की ओर बदलता है। उन मनुष्यों के द्वारा, जिन्हें सुसमाचार ने बदल दिया है। परमेश्वर अपने लोगों के द्वारा संसार में कार्य करता है और एक दिन वह सब कुछ नया करने का प्रबंध करेगा। संसार को बदलना, उसका रूपांतरण करना और उसकी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को हल करना चेलों के कंधों पर नहीं है। यह वह काम और वह मिशन नहीं है, जो यीशु ने हमें सौंपा है।

राज्य के चेलों में, उनकी संगति में, परमेश्वर का नया संसार आरंभ हो चुका है। वे राज्य के सुसमाचार का प्रचार करते हैं और मनुष्यों को चेला बनाते हैं। यही उस समाज पर सबसे प्रभावशाली असर है, जिसमें वे

347. यहूदा 3

348. मत्ती 5:13

रहते हैं।

सुसमाचार व्यक्तिगत जीवन को सुधारने का कार्यक्रम भी नहीं है। न धनवान बनने का। न आत्म-अनुकूलन (सेल्फ़-ऑप्टिमाइज़ेशन)। वह यह संदेश है कि परमेश्वर ने कुछ ऐसा किया और पूरा किया है, जो हम नहीं कर सकते थे। इसी चट्टान पर हम अपना जीवन बनाते हैं। हमारा उद्धार उस पर टिका है, जो यीशु ने क्रूस पर पुकारा: पूरा हुआ! हम उस पर “हाँ” कहते हैं, हम उसे धन्यवाद के साथ ग्रहण करते हैं।

परन्तु समृद्धि या धन कभी सुसमाचार की प्रतिज्ञा नहीं हैं। बहिष्कार और सताव के कारण कभी-कभी मसीहियों की दशा अपने पड़ोसियों से भी बुरी होती है। फिर भी वे उस परमेश्वर पर भरोसा रख सकते हैं, जिसने प्रतिज्ञा की है कि वह सदा उनके साथ रहेगा और उनकी ज़रूरतें पूरी करेगा।

अंत में

यह संसार के सबसे अच्छे संदेश का केवल एक सिंहावलोकन था। एक ऐसा संदेश, जो उठाता है। जो क्षमा और स्वीकृति देता है। जो यीशु के द्वारा स्वतंत्र करता है और साहस देता है।

यह संदेश आपसे व्यक्तिगत रूप से क्या कहता है? आपके हृदय से? शायद आप कभी इतने निकट नहीं थे, जितने अभी हैं। आज ही उद्धार का दिन है – कल नहीं, तब बहुत देर हो सकती है।

सुसमाचार एक बड़े नोट के समान है, जिसे सिक्कों और छोटे नोटों में चुकाया जाता है। इस संदेश की विषय-वस्तु को अधिक से अधिक समझने और उसकी गहराई तक पहुँचने में समय लगता है। यह छोटे, कभी-कभी बड़े क्रदमों में होता है। जब हम यीशु के पीछे चलते हैं। रोज़मर्रा के जीवन में। सच्ची समझ केवल विश्वास और आज्ञाकारिता के हर क्रदम के साथ बढ़ती है। अर्थात् केवल तब, जब हम वह करते हैं, जो यीशु कहता है।

सुसमाचार विश्व-इतिहास के केंद्र में है, जिसे परमेश्वर ने उद्धार के इतिहास में बदल दिया है।

पौलुस रोम के विश्वासियों को सुसमाचार सुनाना चाहता था,³⁴⁹ यद्यपि वे बहुत समय से विश्वास में चल रहे थे। वह उसकी महानता, उसके विस्तार और हमारे पार्थिव जीवन और अनन्तता के लिए उसके परिणामों को दिखाना चाहता था। उसने इसे लिख दिया: रोमियों के नाम पत्र। सुसमाचार का एक स्मारक।

इस पत्र को पढ़िए!

आगे क्या?

परमेश्वर को उन सब अच्छी बातों के लिए धन्यवाद दीजिए, जो उसने आपके विषय में और सीधे आपसे कही हैं।

349. रोमियों 1:1-5, 9, 15-17

यदि आपके कोई प्रश्न हैं, तो मुझे लिखिए: hj-ronsdorf@t-online.de

और पुस्तकें, लेख और प्रवचन आप मेरी वेबसाइट पर पाएँगे: www.hans-joerg-ronsdorf.de



यहाँ कुछ और महत्वपूर्ण सुझाव:

- बाइबल पढ़िए। हो सके तो नियमित रूप से।
- दूसरे लोगों के साथ मिलकर बाइबल पढ़िए – और उस पर आपस में बातचीत कीजिए।
- प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अपने वचन को आपके लिए जीवित कर दे – मानो वह सीधे आपसे बोल रहा हो।
- पाठ को पढ़िए, अच्छा हो कि ऊँचे स्वर में और कई बार।

पाठ से ये प्रश्न पूछिए:

- आप इस पाठ को कौन-सा शीर्षक देंगे?
- यह पाठ परमेश्वर और यीशु के विषय में क्या कहता है?
- यह पाठ मनुष्यों के विषय में क्या कहता है?
- हम इस पाठ से क्या सीखते हैं?
- हमें क्या करना चाहिए?
- यह वचन हमें कैसे प्रोत्साहित करता है?

मिलकर प्रार्थना कीजिए। जब आप फिर मिलें, तो अपने अनुभवों और घटनाओं के विषय में बातचीत कीजिए।

ऐसे मसीहियों से संपर्क और संगति खोजिए, जो यीशु मसीह से प्रेम करते और उसका आदर करते हैं और बाइबल को मूल्यवान समझते, पढ़ते और गंभीरता से लेते हैं।



क्या यीशु का सुसमाचार एक शुभ समाचार है? आखिर क्यों?

थोड़ा समय निकालिए और अलग-अलग दृष्टिकोणों से सुसमाचार की मौलिकता को खोजिए।

सरल और आसानी से समझ में आनेवाले ढंग से यहाँ पूरी बड़ी तस्वीर की बात है।